Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

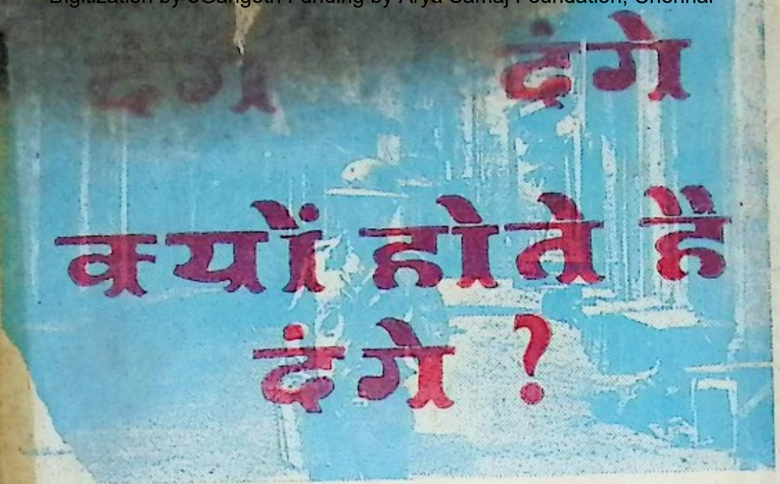

दंगे दंगे

क्यों होते हैं दंगे ?

कार्तिक

जन ज्ञान (मासिक)

२०३६

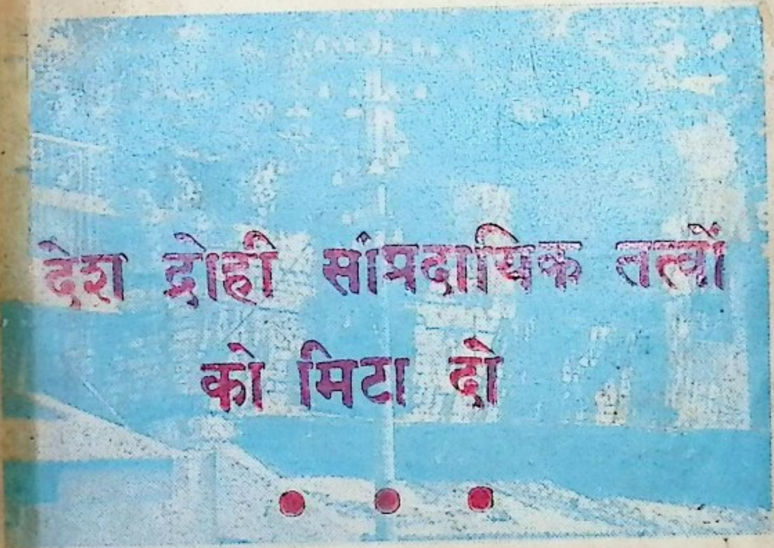

देश द्रोही सांप्रदायिक तत्वों को मिटा दो

• • •

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

आज हिन्दू सभ्यता संस्कृति और परंपराओं को मिटाने के लिए इस्लाम और ईसाइयत के अनुयायी कृत संकल्प हैं।

हम इसी तरह सोते रहे तो नष्ट हो जाएंगे। मेरी सभी भाइयों से प्रार्थना है कि वे संगठित हों और अपनी पूरी शक्ति से आक्रमण को विफल बनाएं। मैं तो अपने पूरे बल से लड़ रही हूं। आपका सहयोग जितना भी मिलेगा उतना ही अधिक हम आगे बढ़ सकेंगे।

बातें नहीं सहयोग चाहिए, आप सहयोग दीजिए।
हम हिन्दू राष्ट्र बनाएंगे, अपना कर्तव्य स्वयं सोचिए।

—राकेशरानी

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

सम्पादक
राकेशरानी
दूरभाष: ५६२६३९
५६४७४१, ८०१२११
पता :
करौलबाग, नई दिल्ली-११०००५
वार्षिक शुल्क : २५ रुपये
विदेश में ६ पौंड : विमान से
३ पौंड : समुद्री डाक से
आजीवन : ५०१ रुपये
यह प्रति ३)
कार्तिक संवत् २०३६
वर्ष १५ : अंक ६

अन्धकार को नष्ट करेंगे

प्राणों को ज्योतिर्मय करने की भावना ही जीवन में आनन्द का स्रोत प्रवाहित करती है। गहन तम में प्रकाश की लघु रेखा भी आशा के मूल्यवान् मोती-सी आह्लाद को मुखरित करने में समर्थ है।

हम कृत संकल्प हैं प्रकाश-प्रसार के प्रबन्ध के लिए। जहां तम—वहां हम! यही हमारी नीति और यही संकल्प है।

हम चाहते हैं कि मनुष्य को भटकाने वाली या दुःख पहुंचाने वाली सभी विचार-धाराओं को समाप्त कर दिया जाय।

घृणा-द्वेष-हिंसा और स्वार्थ के प्रसारकों को समूल नष्ट कर मानव के विकास के लिए ऐसे स्वर संगीत का निर्झर बहाएं जिसे श्रवण कर आनन्द की धारा अबाध गति से बहती रहे।

अज्ञान के साथ अन्धकार जुड़ा है और अन्धकार जनक है अभाव का, अभाव से अन्याय उत्पन्न होता है,। इसी लिए हमारा संकल्प है कि हम प्राण देकर भी अन्धकार नष्ट करेंगे।

वर्तमान की दुराभिसंधियां, सर्वनाशकारी प्रवाह के सामने झुकने की हमारी प्रवृत्ति हमें नष्ट कर रही है। हमें सबल होकर, दृढ़ मन से सत्य को सत्य और झूठ को झूठ कहने का साहस जुटाना होगा।

नये निर्माण का आधार सत्य हो, शांति की ईंटों से न्याय का सीमेंट लगाकर हम मानवता का भव्य भवन खड़ा करें ताकि जीवन से अज्ञान अन्धकार समूल नष्ट हो सके।

प्रभु कृपा करें ताकि हम जीवन का प्रत्येक पल आनन्द से भर सके।

—वेदभिक्षु

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

इस अंक में पढ़िए

दंगे और दंगे (सम्पादकीय) ३
मैं हृदय मन्दिर से लिख रहा हूं—वेदभिक्षु: ११
मंगल प्रभात (वेदोपदेश)—सुरेशचन्द्र वेदालंकार १७
हमें इस्लामी खतरे का मुकाबला
करने के लिए जागना होगा—बृज किशोर 'अश्क' २५
अथर्ववेद में गणित—वी. राम बालिगा ३४
कश्मीर पुनर्वास विधेयक पर डा. कर्ण सिंह से लम्बी बातचीत ३९
हमारे भोजन का कैन्सर से सम्बन्ध—हरीश अग्रवाल ४५
जय भारत (लघु नाटिका) ४९
यज्ञीय जीवन की आवश्यकता—प्रो. धर्मवीर ७३
पैगम्बर मुहम्मद की नजरों में भारत—आचार्य मित्र जीवन ७७
आर्यसमाज—मैथिलीशरण गुप्त ७८
वे युग पुरुष कौन थे ?—ब्रह्मचारी आर्य नरेश ७९
ऋषि दयानन्द की संक्षिप्त जीवनी—चित्तरंजन वत्स ८५
समाज में नारी का स्थान—जयभगवान् आर्य ८९
संस्कृत : सूक्तियों का भण्डार—योगेन्द्र सिंह एडवोकेट ९४
सामयिक विचार—सत्यपाल शास्त्री ९९
भारतीय जनसंघ की प्रसांगिकता—प्रो. बलराज मधोक १०३
आप ही के पत्र १०६
वर्तमान समस्याएं और उनका समाधान—वैद्य गुरुदत्त ११३
सिख गुरुओं के अनुयायी सोचें—ज्ञानी आनसिंह 'अमृतसरी' १३४
कब तक होगा हिन्दी का तिरस्कार—डा. कृष्णलाल १४५
'वन्दे मातरम्' गाना होगा
या भारत से जाना होगा—निर्भय हाथरसी १४८
भीलवाड़ा में पंडित राकेशरानी का उद्बोधन १५०
धर्म प्रचार यज्ञ में प्राप्त आहुतियां १५१

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

विजय के लिए निर्भय बनें। —राकेशरानी

सम्पादकीय-

दंगे और दंगे

कभी हैदराबाद, कभी मुरादाबाद, कभी बिहारशरीफ, अलीगढ़, मनमाड़, गुजरात आदि स्थानों से सांप्रदायिक दंगों के समाचार आते रहते हैं। आखिर क्यों होते हैं ये, दंगे क्यों खेलते हैं रक्त की होली ? कौन करता है ये उपद्रव ?

पिछले ६२ वर्षों से गांधी जी और उनके अनुयायी हिन्दू-मुस्लिम भाई-भाई के नारे लगाते रहे हैं। पर परिणाम क्या निकला ? हमारी भारत मां के टुकड़े हुए। गांधी जी ने कहा कि पाकिस्तान मेरी लाश पर बनेगा, पर वह बना लाखों हिन्दुओं की लाश पर। अपराधी कौन ?

मुसलमानों ने अपना अधिकार ले लिया, फिर भी स्वतंत्र भारत में आजादी के ३५ वर्षों के बाद भी वही पुराना जहर फैलाया जा रहा हैं। इससे यह तो स्वतः स्पष्ट सिद्ध होता है कि गांधी और उनके अनुयायियों की नीतियां गलत थीं। हमें उन्हें छोड़ना ही पड़ेगा। हिन्दू-मुस्लिम भाई-भाई का नारा एक धोखा है। उससे देश सांप्रदायिकता की आग में झुलसता ही रहेगा। वह समस्या का समाधान नहीं है।

स्थिति को समझने के लिए हमें इस्लाम के दर्शन और नीति को समझना होगा। हमें यह सत्य जानना ही होगा कि इस्लाम जियो और जीने दो की नीति का समर्थक नहीं। उसका दर्शन हजरत मुहम्मद पर ईमान न लाने वालों को काफिर समझता है और काफिर को जिन्दा रहने का अधिकार नहीं देता।

१२ सितम्बर के धर्मयुग में एक लघु लेख गार्जियन के हवाले से छपा है जो इस्लाम के मानने वालों की मानसिकता का प्रदर्शन करता है लेख इस प्रकार है—

इस वर्ष जनवरी की बात है। ईरान की राजधानी तेहरान के एक परिवार का एक सदस्य कई दिनों से लापता था। परिवार के लोग परे-

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

शान थे। कई जेलों में जाकर पता कर आये थे। किसी ने उन्हें सलाह दी कि लापता संबंधी के बारे में वे एक बार बहिश्ते-जहरा में पता कर लें। बहिश्ते-जहरा तेहरान का मुख्य कब्रगाह है। निराश परिवारजन वहां पहुंचे और वहां उन्हें अंततः अपने ३६-वर्षीय प्यारे संबंधी मेमातुल्लाह फरीद रोहानी के बारे में जानकारी तो मिली, पर तब तक उसे उनके संबंधियों की पहुंच से सदा के लिए दूर कर दिया गया था।

शोक-संतप्त संबंधियों ने पाया कि १० जनवरी को जिन ६० व्यक्तियों को वहां मौत की सजा दी गयी थी, उनमें एक फरीद रोहानी भी था। आप स्वयं कल्पना कीजिए कि किसी लापता नौजवान [illegible] का नाम मृत व्यक्तियों की सूची में पाकर उस परिवार की स्थिति क्या हुई होगी। आज ईरान में हर परिवार इस्लामी कानून और न्याय के अजीबोगरीब मानदंडों का शिकार बना हुआ है।

पिछले वर्ष २० जून को तेहरान में खुमैनी-विरोधी संगठन मुजाहिदीन-ए-खल्क के ५ लाख सदस्यों तथा समर्थकों ने प्रदर्शन किया था। पुलिस की गोलीबारी से ३० व्यक्ति घटनास्थल पर ही मारे गये। उसके दूसरे दिन क्रांति-विरोधी १५ व्यक्तियों को मौत की सजा दे दी गई। इनमें तीन बच्चियां भी थीं, जिन का कोई अता-पता नहीं था। तेहरान के लेखक संघ के सदस्य तथा मार्क्सवादी गुरिल्ला संगठन 'फिदाईन खल्क' के नेता, कवि तथा नाटककार सईद सुलतानपुर भी इन्हीं १५ क्रांति-विरोधियों में शुमार थे। तेहरान के मुख्य धार्मिक न्यायाधीश हुज्जतुल इस्लाम गिलानी से जब उक्त तीन बच्चियों के बारे में पूछा गया, तो उनका जवाब था कि उन्हें नाम से कुछ लेना-देना नहीं है। उन्हें तो सिर्फ गिनती से मतलब है। इसी बातचीत में, जो पूरे देश में टी. वी पर प्रसारित की गयी थी, गिलानी ने यह स्वीकार किया था कि १३-१४ वर्ष के लड़के-लड़कियों को मौत की सजा दी गई है। एक अन्य बातचीत में उन्होंने तो यहां तक कहा कि इस्लामी कानून के मुताबिक ९ वर्ष तक की लड़की इस काबिल हो जाती है कि उसे उसके [illegible] या उसकी मान्यताओं के लिए जिम्मेवार ठहराया जा सके। इस्लामी कानून की यह व्याख्या अद्भुत ही मानी जायेगी।

मृत्युदंड के मानदंड

मृत्युदंड के लिए धार्मिक न्यायाधीशों ने दो मानदंड निर्धारित किये हैं—या तो दोषी काफिर हो या फिर उसने खुले आम अपनी मान्यताओं का खंडन न किया हो। एक बार यह तय हो गया कि दोषी व्यक्ति काफिर है, तो फिर मौत की सजा तो तय ही है। और मृत्युदंड प्राप्त बंदी को भोजन देना तो जैसे खुदा की

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

मर्जी के खिलाफ ही जाना है। शारीरिक प्रताड़नाएं, कोड़ों से पिटाई तो आम बात है। एक बार काफिर करार दिये जाने के बाद तो बंदी दंडाधिकारी की संपत्ति हो बन जाता है। इस आधार पर लड़कियों के साथ बलात्कार तक की कानूनी छूट दी गयी है। बंदियों को गोली मारने से पहले अकसर उनके शरीर से खून निकाल लिया जाता है, ताकि युद्ध में घायल सैनिकों के लिए उसका उपयोग हो सके। न्याय का अद्भुत संतुलन ! **काफिर के खून से इस्लाम की रक्षा में युद्धरत सैनिकों को जीवनदान !**

ईरान की जेलों में लगभग सात हजार बंदियों के रहने की जगह में इस समय लगभग ४० हजार बंदी ठुंसे हुए हैं। वास्तव में बंदियों को मौत की सजा इसलिए भी दी जाती है कि जेलों में जगह खाली होती रहे। एक वर्ष पूर्व बनी सद्र को राष्ट्रपति पद से हटाये जाने के बाद बताया जाता है कि तेहरान के क्रांतिकारी अभियोजक असदुल्लाह लाचावर्दी ने अपने एक मित्र से कहा था कि इस्लामी गणतंत्र की सुरक्षा के लिए ३०,००० मुनाफकीनों (पाखंडियों,) को मौत के घाट उतारना ही होगा। उनका इशारा सबसे ज्यादा संगठित विरोधी संगठन मुजाहिदीन-ए-खल्क की ओर था। **तब से काफिरों और बागियों के सफाये का सिलसिला चल रहा है।** पिछले एक वर्ष में ३०,००० निर्धारित लक्ष्य में से लगभग १२,००० बागियों को मौत के घाट उतारा जा चुका है और हजारों आज भी जेल में यातना भोग रहे हैं।

सांस्कृतिक दिवालियेपन का इससे बढ़ कर और क्या नमूना हो सकता है कि टेलीविजन पर १९-वर्षीय किसी 'काफिर' युवक को माफी मांगते, गिड़गिड़ाते दिखाया जाये तथा साथ ही उसकी मां को अपने इस पुत्र के लिए मृत्युदंड की स्वीकृति प्रदान करते भी दिखाया जाये; और फिर उसी मां को 'वर्ष की श्रेष्ठ मां' का खिताब भी दिया जाये ?

सच्चाई यह है कि हिन्दुत्व और इस्लाम के दर्शन परस्पर-विरोधी हैं। हिन्दू प्रेम-दया, उदारता, जियो और जीने दो की नीति में विश्वास रखता है। इस्लामी हिंसा, द्वेष, क्रूरता और केवल मोमिन को जीने का अधिकार देता है। इसलिए सत्य, नग्न सत्य यही है कि हिन्दू व इस्लाम के अनुयायी कभी प्रेम से नहीं रह सकते।

हिन्दू उदार है, वह आक्रमण नहीं करता। किन्तु यह कैसा उपहास है कि उसके अपने देश में, अपनी पूजा के अधिकार के लिए उसे इस्लाम के अनुयायियों की दया पर जीवित रहना पड़े। यह कैसा विधान है जो चोर और जिसकी चोरी हो, उसे एक समान समझता है।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

जब तक भारत के मुसलमान भारत की संस्कृति, इतिहास, परंपराएं स्वीकार न ही करते. तब तक उनका अरब रूप, खूंख्वार चेहरा, दगे कराता रहेगा। वे जब तक मक्का-मदीना को ही अपना आराध्य मानेंगे, तब तक पाकिस्तान के निवासियों के प्रति उनकी प्रथम स्नेह भावना रहेगी, अपने पड़ोसी के प्रति नहीं। मुसलमान नमाज पढ़ें, कुरान का पारायण करें, यह अधिकार तो उन्हें देने के लिए हम तैयार हैं पर वे भारत के नागरिकों के स्वाभिमान और गौरव पर ठोकर मारें, मंदिरों में घंटे न बजाने दें, राम-कृष्ण को अपना पूर्वज न मानें तो वे भारत मा के पुत्र कैसे हो सकते हैं? गंगा-यमुना की माटी की वन्दना न कर जो भारत में रहता है, वह मेहमान हो सकता है, भारत का नागरिक नहीं।

और इन सबसे बड़ी सच्चाई तो यह है कि कुरान नामक ग्रंथ पर ईमान रखने वाला इन्सान कभी इन्सानियत की बात सोच भी नहीं सकता। इसलिए आज समय आ गया है कि हम दंगों की परंपरा को समूल नष्ट करने का व्रत लें। सांप्रदायिकता का जहर भारत का सबसे बड़ा दुश्मन है; उसे हमें मिटाना ही होगा, नष्ट करना ही होगा।

इसके लिए भारत के मुसलमानों को इस्लाम के दर्शन और चिन्तन को छोड़ना होगा। अकबर और औरंगजेब को छोड़कर प्रताप-शिवा की जय बोलनी होगी। उन्हें भारत की धरती से प्यार करना होगा। भारत में रहकर, वेद-शास्त्र-गीता-रामायण की परंपराओं का विरोधी हमारा भाई नहीं हो सकता। वह तो शत्रु ही रहेगा और हमें भी उससे शत्रु का-सा ही व्यवहार करना होगा।

मुसलमानों से कह दो कि वे प्यार से रहें, हम भी उनसे प्यार करेंगे, पर अगर वे किसी मंदिर की ओर टेढ़ा आंख से देखेंगे, तो हम भी अपने चिन्तन को कोरे आदर्शवाद पर नहीं, व्यावहारिकता के आधार पर अमल में लायेंगे।

एक सिद्धान्त है। Action अपने हाथ में है, Re-action अपने हाथ में नहीं रहता। मुसलमान यदि मंदिर को तोड़ते हैं तो हिन्दू मस्जिदों को मिटाने की सोचें, तो यह अपराध नहीं होगा।

गांधीवाद ने हमें मिटाया। अब हम नहीं मिटेंगे, नहीं पिटेंगे। हम सबकी समानता में विश्वास रख सकते हैं, पर इस्लाम के अनुयायियों को विशेष दर्जा देने की नीति में नहीं। और जो आज भी ऐसा सोचते हैं, भारत की जनता उन्हें क्षमा नहीं करेगी।

दंगे नहीं होने चाहिए, दंगा करना अपराध है पर कौन करता है दंगे? कोई हिन्दू दंगा नहीं कर

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

सकता। कोई हिन्दू अजान पर रोक लगाने की बात नहीं करता। कोई हिन्दू मुसलमान पर पहले आक्रमण नहीं करता, पर यदि मुसलमान अरब परंपरा के अनुसार मंदिर के घंटा, आरती व अन्य भारतीय परम्पराओं पर आपत्ति करेंगे तो दंगे समाप्त करने की दृष्टि से भारत के देशभक्तों को शरारती तत्त्वों से यथायोग्य व्यवहार करना ही पड़ेगा। मुसलमान प्यार से रहें, यह हमारी इच्छा है। वे भारत मां के बेटे बनें और अपने को बदलें, तभी वे भाई बन सकेंगे अन्यथा कुरान का रास्ता तो उन्हें हिंसा की प्रेरणा ही देगा और फिर प्रत्येक भारतीय को सोचना होगा कि दंगों को समूल नष्ट करने के लिए उसे क्या करना चाहिए ?

दंगे भारत मां के लिए कलंक हैं। हम इन्हें और इनके कारणों को समाप्त करने का संकल्प लेते हैं।

भाइयो और बहनो!

मैं अपने प्राणों की एक-एक बूंद जलाकर आपको जगाने का यत्न कर रही हूं। फिर भी आप की नींद नहीं खुल रही। मुकद्दमों से या छुरों और गोलियों से मैं भयभीत नहीं, किन्तु साधनों के अभाव और सहयोगियों की कमी हमें आगे बढ़ने से रोकती है।

बहुतों का आशीर्वाद मुझे मिला ! आभारी हूं। किन्तु अधिकतर भाई तो अभी तक मेरी स्थिति को समझ नहीं पा रहे। कितनी गालियां, अश्लील पत्र, धमकियां मुझे मिलती हैं, आप उनकी कल्पना भी नहीं कर सकते। फिर भी मैं केवल आप के भरोसे और प्रभु के विश्वास पर आगे बढ़ने का प्रयास कर रही हूं।

आप तन से, मन से अपने क्षेत्र में जागरण का शंख बजाएं। जो कुछ भी न कर सकें, वे उदारता से धन तो दें, ताकि आर्थिक संकट तो न रहे। साहित्य छपाने के लिए कागज नहीं, प्रेस वाले डरपोक हैं, वे अब साहित्य छापने को भी तैयार नहीं क्या सारा हिन्दू समाज एक प्रेस भी नहीं लगा सकता ? वेद मंदिर हमने बना दिया, कोई आकर इसका भार क्यों नहीं संभालता ? क्या भारत कायरों की भूमि रह गया है ? क्या हिन्दू मानस केवल बातों से ही समस्यायें सुलझायेगा ? ये प्रश्न हैं, जिनका उत्तर आपने देना है। मैं तो अपना सब कुछ भारत माँ के चरणों में अर्पित कर जीवन की अंतिम सांस तक सत्य की पताका फहराती रहूंगी। अपना कर्त्तव्य स्वयं आप सोचिए —और कीजिये जो कर सकें।

पांच लाख मस्जिदें सज रही हैं

चौंकिए नहीं, यह कल्पना नहीं, तथ्य है। संभावना नहीं, सत्य है।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

भारत को इस्लामिस्तान बनाने के लिए जो तैयारियां हो रही हैं, उनका यह एक महत्त्वपूर्ण अंग है।

पांच लाख मस्जिदों की जगह सात लाख तो हो सकती हैं पर चार नहीं। क्योंकि उनके कार्यक्रम का यह एक महत्त्वपूर्ण भाग है कि हर गांव में एक मस्जिद, एक मस्जिद में शोर मचाने के लिए एक बढ़िया लाउडस्पीकर और आवाज देने के लिए दाढ़ीदार मौलाना।

इस तरह हर ग्राम में उनका जोरदार केन्द्र, केन्द्र में युद्ध की तैयारियां और सभी काफिरों को ईमानदार (?) बनाने का प्रयत्न। साथ ही जहां मिले, जिस भाव मिले, जमीन खरीदना, नगर में दूकानें मोल लेना और अपनी ताकत बनाना, यह सब कुछ हो रहा है चुपचाप, शोर मचाकर नहीं।

आप कहते हैं जो होता है होने दो, अर्थात् मन्दिर उजड़ने दो, मस्जिदें बसने दो, अजानें सुनते रहो, शंख बजाना भूल जाओ। आपको ऐसा सोचने का अधिकार है, तो हमें भी यह आपसे ही कहना है कि मरने के लिए तैयार रहो, मिटने की तैयारी करो और करो उस दिन का इन्तजार, जब भारत इस्लामिस्तान बनेगा और यहां न राम होंगे न कृष्ण, न गीता होगी न वेद, न गंगा रहेगी न गायत्री।

कायरता तुम्हें मुबारक, पर जो रणभेरी सुनना चाहें उनसे हमें कहना है कि—

पाप पुण्य का युद्ध है,
जीत सके तो जी[...]
कौन गाएगा गीत,
माटी में मिल जाएगा

मुर्दा जीवित हो चुका

मेरी बात सुनकर एक व्यक्ति मेरे पास आकर बोले, आप[ने] मुर्दों को भी जीवित होते देखा है? ये हिन्दू मुर्दे हैं, इन्हें जगाने की बा[त] सोचना मूर्खता है। क्यों नाहक प्रयत्न करते हो ?

बात सुन कर मैं स्तब्ध रह गई। यह कोई नई बात नहीं थी। पहले भी अनेक मुखों से अनेक बार सुनी थी, पर आज तो बात कुछ गहरी चुभ गई। क्या वास्तव में हिन्दू का स्वाभिमान मर गया है ? क्यों उसका जागरण संभव नहीं, यह प्रश्न हमारे मानस को भी कचोटने लग गया।

जिनका कभी भूमंडल पर साम्राज्य था, जिनकी एक हुंकार से शत्रु दल में खलबली मच जाती थी, क्या वे आज इतने निस्तेज हो गए हैं कि अपने अस्तित्व को चुनौती मिलने पर भी सोते ही रहेंगे ?

स्वतंत्रता मिलने के ३५ वर्ष बाद जब फिर से मां का अंग-भंग करने वाली शक्तियां सिर उठा रही हों, विदेशी धन के बल पर भारत को ईसालैंड या इस्लामिस्तान बनाने के

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

षड्यन्त्र रचे जा रहे हों, तब समस्याओं की उपेक्षा आत्महत्या की तैयारी नहीं तो और क्या है ?

उत्तर में कश्मीर और दक्षिण में तमिलनाडु दोनों ही इस्लामी षड्यन्त्र की चपेट में आ चुके हैं। द्वारिका से नागालैंड तक अनेक भाग ईसा के चालाक चेलों द्वारा विस्फोटक स्थिति में चल रहे हों, जब सारा देश देशद्रोही शक्तियों की कूटनीति से ग्रस्त हो, शासन में बैठे व्यक्ति जब देशभक्ति को तिलांजलि दे कुर्सी के मोह में देखते हुए भी कुछ न देखना चाहते हों, तब इस पावन भूखंड की गौरव-गरिमा, स्वतंत्रता, एकता और सुरक्षा का दायित्व केवल उन पर रह जाता है, जो भारत को माँ कहते हों और वेद-शास्त्र-गौ-गंगा-गायत्री गीता की जय बोलते हों। यदि वे भी न जागे तो रक्षा कौन करेगा ?

प्रश्न न धर्म-परिवर्तन का है न मस्जिदों को सजाने का। प्रश्न तो यह है कि देश को परतंत्र बनाने की दुरभिसंधि कैसे समाप्त हो? भारत को ईसालैंड बनाने का सपना, इस्लामिस्तान बनाने की योजनाएं, दंगों की बेहूदी प्रक्रिया कैसे नष्ट की जाए ?

यह कार्य भाषणों, प्रस्तावों, समाज सुधार के प्रयत्नमात्र से नहीं होगा। इसके लिए तो देशभक्तों को सगठित होकर ईंट का जवाब पत्थर से देने की रणनीति अपनानी होगी। वैसे सच तो यह है कि मुर्दा फिर जीवित हो गया है।

३ सितंबर को अदालत में

३ सितम्बर १९८२ को हमारी प्रथम पेशी तीस हजारी कोर्ट में श्री मलिक कमरा नं० २० के न्यायालय में हुई। हमारे साथ नरेन्द्र प्रेस के स्वामी श्री ओम्प्रकाश जैन भी उपस्थित हुए।

मेरी जमानत सुप्रसिद्ध व्यापारी श्री बिशन स्वरूप जी ने दी और श्री ओमप्रकाश जी की जमानत महात्मा वेदभिक्षु जी ने भरी। हमारे वकील, जो हिन्दू रक्षा समिति के भी अधिकारी हैं,श्री देवकीनन्दन शर्मा की कृपा व सूझबूझ से आधे घंटे में ही कार्य निपट गया। आरोपपत्र प्रशासन ने दिया। सुनवाई के लिए अगली तिथि १५ नवम्बर पड़ी है। आगे आगे देखिए होता है क्या ?

दयानन्द निर्वाण शताब्दी : समस्या

अगले वर्ष महर्षि दयानन्द की निर्वाण शताब्दी होनी है। वह कहाँ हो, यह एक समस्या है। आर्यसमाज का सर्वोच्च संगठन चाहता है कि वह बड़े स्तर पर दिल्ली में हो। परोपकारिणी सभा व कुछ विद्वानों का भावात्मक पक्ष है कि

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

महर्षि का बलिदान अजमेर में हुआ था अतः अजमेर में ही होनी चाहिए।

दुर्भाग्य यह है कि अजमेर के जो निवासी वहां मनाना चाहते हैं, उनका नगर में कोई महत्त्व नहीं। वहां के कर्मठ सशक्त नेता श्री दत्तात्रेय वाब्ले का सहयोग पार्टीबाजी के कारण वे लेना नहीं चाहते। अतः लगता ऐसा है कि अजमेर का भावात्मक पक्ष प्रबल होने पर भी वहां कार्यक्रम की सफलता संदिग्ध है।

दिल्ली में तो सभी कार्य-प्रदर्शन बढ़िया हो ही जाते हैं, किन्तु क्या इस तरह दो स्थानों पर होने से आर्यसमाज की प्रतिष्ठा बढ़ेगी। आवश्यकता इस बात की थी कि सभी सारे भेदभाव भूल कर शताब्दी की सफलता के लिए यत्न करते। पर आज की स्थिति में यह हो सकेगा, इसकी आशा नहीं है।

क्या होगा, क्या होना चाहिए? इस विषय पर कुछ न कहते हुए हम आर्य नेताओं की सद्बुद्धि के लिए प्रभु से कामना करते हैं।

—राकेशरानी

दीपमाला पर घर में दीप जलाने से पहले वेद मन्दिर को स्मरण कीजिए

१. अपने किसी प्रियजन की स्मृति में कमरा बनवाइए। ५००१) से १५०००) तक।

२. यज्ञशाला अधूरी पड़ी है। उसके लिए कम से कम ५०१) दीजिए! आपका नाम पत्थर पर अंकित होगा।

३. वेद महाविद्यालय, अनुसंधान विभाग और जिस कार्य में भी आपकी रुचि हो, उसके लिए

अपना सहयोग उदारतापूर्वक दीजिए

दान भेजने का पता

अध्यक्ष, दयानन्द संस्थान

१५६७, हरध्यानसिंह रोड, करौलबाग, नई दिल्ली-५

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

मैं हृदय मन्दिर से लिख रहा हूँ–

हमारी प्रचार यात्राएं

सितम्बर मास में हमारा कार्यक्रम अत्यन्त व्यस्त रहा । ४ सितंबर को हम धनबाद गए । यहां श्री प्रमोद कुमार केजरीवाल आदर्श युवक हैं । आप निरंतर संस्थान को अपना सहयोग देते रहे हैं । आपने धनबाद के दो दिन के प्रवास में अपने निजी काम बन्द कर पूर्ण सहयोग दिया ।

इन्हीं के प्रयत्नों से यहां हिन्दू रक्षा समिति की बैठक हुई, जिसमें अनेक महत्त्वपूर्ण निर्णय किए गए ।

धनबाद का आर्यसमाज एक सम्पन्न समाज है, किन्तु आर्यसमाज की पवित्रता की ओर किसी का ध्यान नहीं । स्वच्छता का अभाव खटकता है । यदि आर्यसमाज के भवनों को स्वच्छ रखा जाए तो मंदिर की पवित्रता बढ़ती है ।

७ को धनबाद से चलकर ८ को हम वापस दिल्ली पहुंच गए ।

भीलवाड़ा

भीलवाड़ा में ११-१२-१३ को अखिल भारतीय हिन्दू सम्मेलन था। वहां भी १२ की सुबह हम पहुंचे । नगर के हिन्दू कार्यकर्ताओं का उत्साह और कार्य करने का ढंग अपूर्व था । प्रान्तीय स्तर पर श्री गौरीशंकर जी कोठारी स्वागताध्यक्ष थे । उन्होंने और भीलवाड़ा के साथियों ने मिलकर सम्मेलन को सफल बनाने का जो प्रयास किया, वह अभिनन्दनीय है ।

सम्मेलन में हमने भी भाग लिया । पंडिता राकेशरानी का १३ सितम्बर को दिया उद्बोधन अभूतपूर्व था । उनको ३०-४० हजार नर नारियों ने जिस श्रद्धा के साथ सुना, उसकी उपमा सार्वजनिक सभाओं में कम ही मिलती है ।

हिन्दू जनता तो उनके दर्शनमात्र के लिए दिन भर उमड़ती ही रहती थी । वातावरण अत्यन्त आशाप्रद रहा, किन्तु केन्द्रीय नेतृत्व का भटकाव हिन्दू की सदा दुर्बलता रहा है और इसका परिचय वहां भी मिला ।

आज आवश्यकता है कि हम सभी सारे भेदभाव भूल कर एक

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

झंडे के नीचे एकत्र हो जाएं और भारत को हिन्दू राज्य बनाने के लिए कृत संकल्प हों।

१९ सितम्बर को हम रिवाड़ी गए। वहां श्री ज्ञानेन्द्र जी एक आदर्श आर्य हैं; आपका सदा ही संस्थान को सहयोग रहा है। आपकी प्रेरणा से वहां भी अनेक भद्रजनों से भेंट वार्ता हुई और हम वापस लौट आए।

२१ सितम्बर को हम मेरठ गए। प्रसिद्ध पत्रकार श्री शिवकुमार गोयल, कु. आभा एम.ए. और श्री सत्यपाल शास्त्री के अतिरिक्त वयोवृद्ध हिन्दू नेता प्रो. रामसिंह जी भी हमारे साथ थे। मेरठ में अनेक पत्रकारों व निष्पक्ष नागरिकों से मिलकर हम इस निर्णय पर पहुंचे कि मेरठ का दंगा मुस्लिम मनोवृत्ति द्वारा पूर्व आयोजित था। शासन मुस्लिम तुष्टीकरण की नीति छोड़ने को तैयार नहीं, मुसलमान फिर अपनी जहरीली मुद्रा में खुले रूप में सिर उठा रहा है। ऐसे में यदि हम नहीं जागे तो पिटेंगे भी — मिटेंगे भी।

२६ की प्रातः ताज एक्सप्रेस से हम आगरा गए। स्टेशन पर नगर के उत्साही आर्य बंधुओं ने पंडिता राकेशरानी का उत्साहपूर्वक वैदिक धर्म की जयघोष के साथ पुष्पमालाओं से स्वागत किया। आगरा कैन्ट स्टेशन वैदिक धर्म की जय, हिन्दू धर्मकी जय, महर्षि दयानन्द की जय और पंडिता राकेशरानी की जय के नारों से गूंज उठा।

नगर के उत्साही कार्यकर्ता श्री हरिमोहन जी कठौतिया के प्रयत्नों से आर्यसमाज जयपुर हाउस में कार्यकर्ताओं की एक बैठक हुई, जिसमें नगर में हिन्दू रक्षा समिति की स्थापना व दृढ़ता के साथ सांप्रदायिक तत्वों को कुचलने का संकल्प सभी ने किया। श्री रामेलाल जी आर्य, श्री दयानन्द जी एडवोकेट, श्री जितेन्द्र कुलश्रेष्ठ तथा आर्यसमाज के अधिकारियों का सहयोग प्रशंसनीय है।

हम भारत में एक नया जोश, उत्साह अनुभव कर रहे हैं। राष्ट्र और धर्म रक्षा की पुनीत भावना उभर रही है। दृढ़ता के साथ भारत को हिन्दू राष्ट्र बनाने की माँग बल पकड़ रही है। यदि सभी शीर्षस्थ हिन्दू नेता एक साथ मिल कर प्रयत्न करें तो अगले २-३ वर्षों में ही भारत को हिन्दू राष्ट्र घोषित किया जा सकता है।

परमात्मा हमारे नेताओं को सद्बुद्धि दे कि वे एक लक्ष्य के लिए कार्य कर सकें। —वेदभिक्षु

देश धर्म रक्षा के लिए हमारी सहायता कीजिए

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

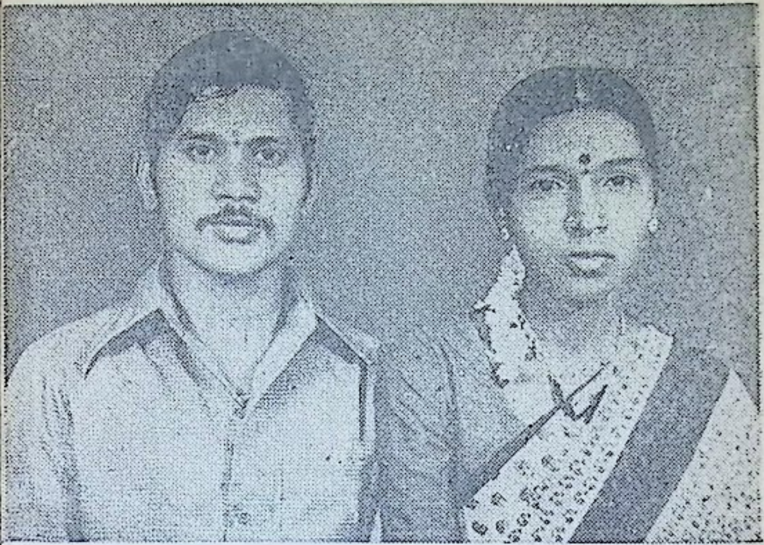

मेडक (आन्ध्र प्रदेश) के श्री नरेन्द्र भूषण पति जन्म से हरिजन, पत्नी सौ० सुप्रभा जन्म से वैश्य जाति-गुण-कर्म-स्वभाव से ब्राह्मण। पति अध्यापक, पत्नी गृह कार्य।

पुनः दंगा

मेरठ में पुनः उपद्रव आरम्भ। देशद्रोही मुसलमानों का सारे राष्ट्र में व्यापक दंगे कराने का षड्यन्त्र। क्या शासन की नींद खुलेगी? क्या हम देश को बचाने के लिए कुछ करेंगे? या इसी तरह देश में दंगे होने देंगे?

समय आ गया है कि हम सांप्रदायिकता का विषधर फण कुचल दें। अन्यथा सर्वनाश के लिए तैयार रहें।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

२००० मुसलमान हिन्दू बनेंगे

तिलहर। शाहजहाँपुर। यहां आयोजित नगर के प्रमुख नागरिकों की एक बैठक ने सर्व सम्मति से देश में दगों के मूल कारणों को समाप्त कर, साम्प्रदायिक, देश-द्रोही शक्तियों को कुचलने का केन्द्र से आग्रह किया है।

बैठक को अखिल भारतीय हिन्दू रक्षा समिति के अध्यक्ष महात्मा वेद भिक्षु: ने संबोधित करते हुए मांग की कि देश के सभी नागरिकों के लिए समान नियम कानून हों और अल्पसंख्यक-बहुसंख्यक का प्रश्न उठाने की राजनीति समाप्त की जाए।

हिन्दू रक्षा समिति के संयोजक श्री ज्ञान प्रकाश भारती ने बताया कि समिति शीघ्र ही कई हजार परिवारों को हिन्दू धर्म में दीक्षित करेगी। आपने कहा कि दो हजार से अधिक मुसलमान दीपमाला पर हिन्दू धर्म ग्रहण करेंगे।

राजधानी में शीघ्र हिन्दू सम्मेलन होगा

नई दिल्ली, ६ अक्टूबर, अखिल भारतीय हिन्दू रक्षा समिति की ओर से घोषित किया गया है कि शीघ्र ही राजधानी में एक विशाल हिन्दू सम्मेलन होगा, जिसमें दंगों के प्रसार, कश्मीर की समस्या व बंगला देश से आने वाले मुसलमानों के सम्बन्ध में कठोर कदम उठाने पर विचार किया जायेगा।

समिति के अध्यक्ष महात्मा वेद भिक्षु: ने कहा कि मुसलमानों को भारत की मूल धारा में घुल-मिल जाना चाहिए। मुसलमान केवल अपनी पूजा पद्धति पृथक रखें पर वेश-भूशा और सांस्कृतिक परम्पराओं में पूर्ण रूप से भारतीय बन जायें। मुसलमानों के अपने कल्याण के लिए यही श्रेष्ठ मार्ग है।

मुरादाबाद में हिन्दू सम्मेलन की तैयारियां

मुरादाबाद (६ अक्टूबर) हिन्दू रक्षा समिति के मंत्री श्री जगदीश शरण माहेश्वरी ने आज प्रैस को बताया कि नवम्बर मास में मुरादाबाद में विशाल हिन्दू सम्मेलन की तैयारियां आरम्भ कर दी गई हैं।

यह सम्मेलन साम्प्रदायिकता के उभरते प्रवाह को रोकने के लिए रचनात्मक पग उठाने और पिछड़े वर्ग के हिन्दुओं की आर्थिक व सामाजिक स्थिति सुधारने का कार्यक्रम निर्धारित करेगा। —कार्यालय मंत्री

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

लन्दन में श्रीकृष्ण जन्माष्टमी

लन्दन । विगत १५ अगस्त को आर्यसमाज लन्दन के तत्वावधान में श्रीकृष्ण जन्माष्टमी तथा भारतीय स्वतन्त्रता दिवस बड़े उल्हासपूर्वक मनाया गया । वन्देमातरम् भवन में आयोजित इस रंगारंग कार्यक्रम में प्रवासी भारतीय बड़े उत्साहपूर्वक भारी संख्या में उपस्थित थे । यज्ञोपरान्त वेद सुधा श्री गिरीशचन्द्र खोसला द्वारा सम्पन्न की गई । तत्पश्चात श्रीमती स्वर्ण शर्मा का भजन हुआ । श्री व श्रीमती कपिलदेव तथा सहयोगी कलाकारों द्वारा प्रस्तुत गीत सराहनीय था ।

इस अवसर पर मुख्य वक्ता आर्यसमाज लन्दन के प्रधान प्रो० सुरेन्द्रनाथ भारद्वाज ने अपने ओजस्वी व्याख्यान में महर्षि व्यास के एतद्देशप्रसूतस्य द्वारा भारतीय संस्कृति तथा विद्वानों व महापुरुषों के जीवन का सजीव चित्रण किया तथा योगिराज श्री कृष्ण के जीवन की घटनाओं पर प्रकाश डालते हुए उन्हें 'आप्त पुरुष' की संज्ञा दी और कहा कि भगवान् श्रीकृष्ण जैसे उच्चचरित्र, निरभिमान, सन्त, शूरवीर, योद्धा, कुशल राजनीतिज्ञ को यदि माखन-चोर, गोपियों के साथ रास-रंग आदि करने वाला कहकर उनके चरित्रहरण का दुष्प्रयास किया जाये, तो देश का इससे बड़ा दुर्भाग्य क्या होगा । प्रो० भारद्वाज ने पुराणों में दी गई कपोल-कल्पित घटनाओं की ओर ध्यान आकर्षित करते हुए कहा कि वास्तविक महाभारत में २० हजार श्लोक थे, किन्तु समयानुसार भारतीयता के पतन के साथ व्यर्थ की काल्पनिक कथाओं के मिश्रण से इनकी संख्या दो लाख से अधिक तक पहुंच गयी है ।

इस अवसर पर श्री धर्मवीर पुरी की कविता, श्रीमती सुमन भार्गव तथा श्रीमती सन्तोष आशानन्द के भक्तिपूर्ण भजनों के साथ युवा कलाकार मनीषा आनन्द ने तबले पर तीन ताल कुशलतापूर्वक सधे हाथों से बजाई । सभी ने मुक्तकण्ठ से सराहना की । राष्ट्रगान तथा शान्ति पाठ के साथ सभा विसर्जित हुई ।

वेद भाष्य तैयार

इस समय वेद के चारों खण्ड तैयार हैं । जिनको पूरे न मिले हों वे वेद मन्दिर पो. आ. अलीपुर दिल्ली-३६ में पत्र लिखकर या पधार कर ले लें ।

—अध्यक्ष

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

पं. नरसिंह देव शास्त्री एम. ए. लातूर (महाराष्ट्र) निवासी, पुरोहित अमृतसर आर्यसमाज सौभाग्यवती प्रेमला एम. ए. प्राध्यापक शुभ रेड्डी कालेज बीदर, कर्नाटक प्रान्त। इनका बिना दहेज के अन्तरजातीय आदर्श विवाह करने के उपलक्ष्य में आर्यसमाज जहीराबाद (मेडक) में स्वागत। इस अवसर पर श्री मनोहर राव कुलकर्णी, श्री आडवेद्याचन्द्र, सदस्य नगर पालिका जहीराबाद, पं० विश्वनाथ जी आर्य उपदेशक आर्य प्रतिनिधि सभा आदि देखे जा सकते हैं।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

—सुरेशचन्द्र वेदालंकार

मंगल प्रभात

ओ३म् प्रातर्जितं भगमुग्रं हुवेम
वयं पुत्रमदितेर्यो विधर्ता ।
आध्रश्चिद्यं मन्यमानस्तुरश्चित्
राजा चिद्यं भगं भक्षीत्याह ॥

ऋ. ७।४१।२

हे भगवान् (वयं) हम (प्रातः) प्रातःकाल (यः विधर्ता) जिस सकल ब्रह्माण्ड को धारण करने वाले (जित) विजयशील (उग्रं) उग्र (अदितेः पुत्रम्) अमरत्व के रक्षक, आदिति के मूर्तरूप (भगं) आपके उस दिव्य महिमामय भव्य रूप का (हुवेम) सदा आह्वान करते हैं (यं भँग) जिस भँग रूप के सम्मुख (आध्र चित्) दरिद्र तथा निर्बल लोग (मन्यमानःपुरःचित्) बलवान् लोग और (राजा चित्) बड़े-बड़े राजा भी सब समान भाव से (भक्षि इति आह) 'प्रदान करो, प्रदान करो' ऐसी याचना करते हैं ।

स्वामी श्रद्धानन्द ने धर्मोपदेश देते हुए लिखा है 'शरीर कुछ नहीं कर्मेन्द्रियां भी कुछ अधिक सत्ता नहीं रखतीं, केवल संकल्प प्रबल है । 'इस संकल्प को शुद्ध रखना और जिस मन में यह संकल्प उत्पन्न होता है उसको पवित्र करना यही मानव जीवन का उद्देश्य है । यही कारण है कि परमात्माने अपने वैदिक ज्ञान द्वारा हम जीवों को मन की शुद्धि के लिए बड़ी प्रबल प्रेरणा दी है । सारी सृष्टि की कला इस मन के चारों ओर घूम रही है । वेद और शास्त्रों का ज्ञान, मानसिक और आत्मिक यज्ञों की क्रिया का अभिप्राय यह है कि सारे ब्रह्माण्ड का प्रवन्ध इसी मन के चारों ओर चक्कर काट रहा हैं । इसलिए पाठकगण ! बड़े शुद्ध भाव और पूर्ण पुरुषार्थ से इस मन में संकल्प शुद्ध करने का प्रयत्न करो जिससे कि तुम उत्तम योनियों को प्राप्त होते हुए अन्त में मुक्ति तक पहुंच सको ।

जीवन आनन्द एवं विजय के लिए है । विजय कोई ऐसी वस्तु नहीं जो एक वरदान के रूप में कोई लाकर हमें भेंटस्वरूप दे देगा । इस विजय को प्राप्त करने के लिए हमें संघर्ष करना पड़ेगा । संघर्ष करने के लिए हमें अपने मन में दृढ संकल्प का उदय करना होगा । दृढ़ संकल्प जितना ही पवित्र

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

होगा उतना ही हमें आगे बढ़ने के लिए बल और साहस प्राप्त होगा । मन यदि निराशा के, दुर्बलता के, आत्महीनता के भावों से भर गया तो विजय दूर हो जाएगी। याद रखिए जो निराश और हतोत्साह् हो जाते हैं उनमें और मृतक में कोई अन्तर नहीं। संकटों का सामना करना मनुष्य की सफलता की पहली सीढ़ी है। इस निराशा को दूर करने के लिए, सफलता का आलिंगन करने के लिए परमेश्वर के 'भव्य' रूप का, उसके दिव्य महिमामय रूप का प्रातःकाल स्मरण करना चाहिए। परमेश्वर का यह 'भव्य' रूप हमें प्रभु की छत्रछाया में लाकर सभी प्रकार के दैन्य ओर निराशा के विकारों से दूर कर देगा। इस 'भव्य' रूप की उपासना से हमें संघर्षों और दुःखों से लड़ने की शक्ति प्राप्त होगी और हम 'योगी' कवि के शब्दों में यह विश्वास दिला सकेंगे—

सजनि ! बनो तुम जलती ज्वाला,
तुमको कोई लांघ न पाए,
तुम्हें आंख कोई न दिखाए,
इतना ऊंचे चढ़ो व्योम में
छा जाए भास्कर उजियाला,
सजनि ! बनो तुम जलती ज्वाला।
बुझ जाओगी, क्या पाओगी
रौंदी चरण तले जाओगी,
और उड़ेगी राख चर्तुदिक्
छायेगा दुःखद तम काला,
सजनि बनो तुम जलती ज्वाला।
ज्वाला दाय हमारा रानी।
ज्वाला की ही सृष्टि कहानी
नायक है ज्योतिर्मय मानव
अंगारों पर चलने वाला।
सजनि ! बनो तुम जलती ज्वाला।

'भग' किसे कहते हैं ? इसकी व्युत्पत्ति करते हुए लिखा है 'विभजति नधर्मस्वास्थ्यादिकं ददातीति भगः' अर्थात् जो मनुष्य को धन, बल, स्वास्थ्य एवं शक्ति आदि देता है वह 'भग' है। सूर्य से भी ये वस्तुएं प्राप्त होती हैं अतः सूर्य भी भग है। परमेश्वर तो भगवान् है ही।

इस मन्त्र में परमेश्वर के इसी रूप की उपासना करने का विधान है। मनुष्य जब कोई अपना सहायक नहीं देखता, अपना सहारा नहीं पाता, तब उसके मन में निराशा का संचार होने लगता है और निराश व्यक्ति कभी

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

कष्टमुक्त नहीं हो सकता। वह आत्महत्या कर लेता है। इसलिए यह मंत्र कहता है 'प्रातर्जितं भगमुग्रं हुवेम' प्रभातवेला में हम अपने परिश्रम और पुरुषार्थ से अर्जित 'भग' अर्थात् ऐश्वर्य को, संपत्ति को या धन को चाहते हैं। धन परमेश्वर के 'भग' रूप से प्राप्त हो तो हमारा कल्याण है।

आज बहुत-से लोगों का विचार है कि जिसके बिना मनुष्य न तो जीवित रह सकता है, न मनुष्य समुदाय बच सकता है, न कोई सरकार चल सकती है, न कोई संस्था जीवित रह सकती है, गृहस्थियों का जीवन तो जिसके बिना मृत्यु ही है। साधु-संयासी, महात्मा, वानप्रस्थी तथा ब्रह्मचारी भी जिसके बिना मृत्यु के ग्रास बन जाते हैं, वह तत्त्व धन है।

यस्यास्ति वित्तं स नरः कुलीनःस पंडितः स श्रुतवान् गुणज्ञः
स एव वक्ता स च दर्शनीयः सर्वे गुणाः काञ्चनमाश्रयन्ति।

जिसके पास धन है वही मनुष्य ऊंचे कुलवाला, वही पण्डित, वही शास्त्रज्ञ, वही गुणग्राही, वक्ता, सुन्दर है—सब गुण धन में ही हैं। यदि किसी के पास धन न हो और सब गुण भले ही हों तो वह व्यक्ति धन के बिना किसी काम का नहीं।

शीलं शौचं क्षान्तिर्दाक्षिण्यं मधुरता कुले जन्म।
न विराजन्ति हि सर्वे वित्तहीनस्य पुरुषस्य॥

आचार, पवित्रता, क्षमा, योग्यता, मधुरता और ऊंचे कुल में जन्म धनहीन पुरुष के समीप नहीं रहते।

धनं संचय काकुत्स्थ धनमूलमिदं जगत्।
अन्तरं नैव पश्यामि निर्धनस्य मृतस्य च॥

हे राजन्! धन का संचय करो, यह संसार धनमूलक ही है, मरे हुए और निर्धन में मैं कोई अन्तर नहीं देखता। महाभारत में भीष्मपितामह कहते हैं—

अर्थस्य पुरुषो दासो दासस्त्वर्थो न कस्यचित्।
इति सत्यं महाराज! बद्धोऽस्म्यर्थेन कौरवैः॥

मनुष्य अर्थ का दास है। अर्थ किसी का दास नहीं है। महाराज! यह बात सत्य है, मैं इस समय कौरवों के अर्थ से बंधा हुआ हूं।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

ऋग्वेद ३।११।३ में कहा है 'अर्थं ह्यस्य तरणि' संसार सागर को पार करने के लिए धन नौका के समान है।

यदिन्द्र यावतस्त्वमेतावदहमीशीय। सा. ३१०

भक्त कहता है हे इन्द्र ! ऐश्वर्यों के स्वामी ! जितना ऐश्वर्य तुम्हारे पास है उतना ऐश्वर्य या धन मुझे प्राप्त हो। वैदिक धर्म की यह विशेषता है कि यहां निर्धनता और दरिद्रता को अच्छा न मानकर ऐश्वर्य या धन की कामना की गई है। बौद्ध और जैन धर्मों ने भिक्षु संस्कृति का प्रचार किया पर हमारे यहां दरिद्रता और मृत्यु में अन्तर न मानते हुए कहा गया है 'दरिद्रस्य खलु पुरुषस्य जीवितं मरणम्' दरिद्रता मनुष्य का जीवित मरण है। इसलिए मनुष्य को ऐश्वर्य को प्राप्त करने का प्रयत्न करना चाहिए। परन्तु अर्थ आवश्यक होते हुए भी अनेक अनर्थों को उत्पन्न करता है। अनुभवियों ने कहा है—

द्रव्येण जायते कामः क्रोधो द्रव्येण जायते।
द्रव्येण जायते लोभो, मोहो द्रव्येण जायते॥

धन से काम, क्रोध, लोभ, मोह पैदा होते हैं। धन से और भी अधिक आने वाले दुर्गुणों का वर्णन है—

स्तेयं हिंसानृतं दम्भः, कामः क्रोधः स्मयो मदः।
भेदो वैरमविश्वासः संस्पर्धा व्यसनानि च॥
एते पंचदशाऽनर्था ह्यर्थमूला मता नृणाम्।
तस्मादनर्थमर्थाख्यं श्रेयोऽर्थी दूरतस्त्यजेत्॥

चोरी, हिंसा, मिथ्याभाषण, पाखण्ड, काम, क्रोध, अहंकार, मद, भेदबुद्धि, वैर, अविश्वास, स्पर्धा और व्यसन (स्त्री लम्पटता, जूआ (मद्यपान) ये पन्द्रह अनर्थ मनुष्यों में धन के कारण माने गए हैं। अतः मनुष्य अर्थ नामक अनर्थ को दूर से ही छोड़ दे। सचमुच धन से शान्ति नहीं मिलती, आनन्द नहीं मिलता। धन को बैंक की भांति हम रखते ही चले जाते हैं और अन्य अनेक अनर्थों में फंस जाते हैं। धन जो साधन था, हमारा साध्य हो जाता है। इसलिए किसी ने कहा है—

शमयितुमौदरमग्निं संसारास्काम्बुधौ निमज्जन्ति।
तुहिनव्यथा निवृत्यै न हि वेश्मनि पावको देयः॥

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

अर्थात् पेट की क्षुधारूपी अग्नि को शान्त करने के लिए अविवेकी पुरुष संसार रूपी समुद्र में डूब जाता है। यह ठीक नहीं, क्योंकि सर्दी के कष्ट को दूर करने के लिए घर को जला देना उचित नहीं।

यह मंत्र हमें 'भग' ऐश्वर्य (धन) प्राप्त करने की योजना ओर लक्ष्य निर्धारित करता है और कहता है प्रातर्जितं उग्रं...प्रातःकाल विजयशील, उग्र विधर्ता अर्थात् सकल ब्रह्माण्ड को धारण करने वाले अदितेः पुत्रं...अमरत्व के रक्षक, अदिति के मूर्तरूप, आपके उस दिव्य महिमामय भग रूप का आह्वान करना चाहिए। आह्वान के लिए क्या करना होगा ? हमें आत्म निर्माण की योजना बनानी होगी। हमें अपना प्रोग्राम एवं लक्ष्य निर्धारित करना होगा। प्रोग्राम को पूरा करने और लक्ष्य तक पहुंचने के लिए संकल्प करना होगा। संकल्प को जागृत करने के लिए समय निकालना होगा। जीवन के प्रारंभ में जिसने अपने संकल्पों को जागृत नहीं किया। दिन के प्रारम्भ में जिसने अपने नियत कर्मों को पूरा करने का संकल्प नहीं लिया, जिसने प्रातः काल धन कमाने के लिए परमेश्वर की शक्ति, उसके ऐश्वर्यों और उसके आनन्द के खजाने का पता नहीं लगाया और परमेश्वर का ऐश्वर्य किस लिए है यह नहीं जाना तो धन उसके लिए हानिकारक हो जायेगा और वह व्यक्ति जीवन में निराश हो जाएगा। किसी भी कार्य को करने से पूर्व उसके विषय में विचारा जाता है। क्रिया से पूर्व विचार होते हैं। विचार ही कर्म को प्रेरणा करते हैं और विचार कर्म की विधि और उसका उपयोग दिखलाते हैं। विचारपूर्वक व्यापार-व्यवसाय करने से द्रव्य-धन की प्राप्ति होती है। विचारपूर्वक अध्ययन करने से विद्याधन मिलता है। विचारपूर्वक उपाय करने से राज्य-साम्राज्य की स्थापना होती है। हम परमेश्वर के 'भग' रूप पर विचार करके सब प्रकार की श्रियों, धनैश्वर्यों, राज्य साम्राज्यों का सम्पादन कर सकते हैं। धन से मनुष्य की शोभा बढ़ती है, धन पाकर मनुष्य अच्छे-अच्छे मकान बनाता है, बाग लगाता है, मकानों और उद्यानों को सजाता है, झाड़-फानूस लटकाता है, दीवारों पर चित्रकारी कराता है, फव्वारे लगवाता, मोटर और जहाज खरीदता है। परन्तु उस धन का ईश्वर की भांति त्याग करने से धन की शोभा बढ़ती है। धन से सबकी शोभा बढ़ती है पर दान से धन की शोभा बढ़ती है। धन कमाना और दूसरों की भलाई के लिए उसका दान करना बड़ा ही उत्तम और प्रशंसनीय कार्य है। दीन-दुखियों, अनाथों और असहायों की धन से सहायता करना पुण्य का काम है, देश, धर्म, राष्ट्र और संसार की सुसेवा के लिए धन देना धन की महिमा बढ़ाना है।

परमेश्वर हमें ऐश्वर्यों का दान करता है पर वह कभी अभिमान नहीं

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

करता। उसके ऐश्वर्य के सामने सामान्य जन की क्या बिसात है, बड़े-बड़े राजा (राजा चित्), मन्यमान पुरः चित्) अर्थात् अभिमानी-बलवान् लोग, (आध्रःचित्) दरिद्र तथा निर्बल लोग भी (भक्षि इति आह) प्रदान करो—प्रदान करो ऐसी याचना करते हैं।

इसलिए हमें धन खूब कमाना चाहिए पर उसका दान कर देना चाहिए और यह भी स्मरण रखना चाहिए कि कितना भी धन हम कमायें, हमें घमण्ड नहीं करना चाहिए। शिवाजी महाराज के जीवन की एक घटना हैं। एक बार वे ऐसे स्थान पर खड़े थे जहां से सम्पूर्ण सेना परेड करते हुए दिखाई दे रही थी। अपनी सेना और अपने प्रभाव को देखकर शिवाजी के मन मे घमंड का उदय हुआ। समर्थगुरु रामदास वहीं थे उन्होंने शिवाजी के घमंड के भाव को भांप लिया और उन्हें अपने साथ घूमने ले गए। एक स्थान पर पहुँच कर उन्होंने शिवाजी से कहा कि आदमी बुलवाकर इस पत्थर को खुदवाओ। शिवाजी ने मजदूर लगाए। पत्थर तोड़ा गया। खोदा गया। उसमें से एक पीला जीवित मेंढक निकला। समर्थगुरु रामदास ने पूछा—

"शिवाजी! इस मेंढक को कौन भोजन देता है? कौन इसकी रक्षा करता है? किसने इसको यहां भी इतने सुरक्षित रूप मे रखा हुआ है? शिवाजी समझदार थे। गुरु की शिक्षा को समझ गए और गुरु के चरणों पर गिर कर उन्होंने परमेश्वर के 'भग' रूप का ध्यान किया और अभिमान को हृदय से निकाल फेंका।

यह भगरूप प्रभु विश्व का धारण करने वाला है। संसार में चमकते लाखों ग्रह, उपग्रह, नदियां, समुद्र और हजारों प्रकार के रत्न, अन्न, फल—इन सबको धारण करने वाला और इनका नियन्ता प्रभु है। जब प्रभु इतने विशाल विश्व का संचालन नियमित रूप से कर रहा है, तब भला वह इस मानव के कष्टों को दूर नहीं कर सकेगा? उसका खजाना अजस्र-अनन्त है। उसका ऐश्वर्य अक्षुण्ण है। उसकी सम्पत्ति, उसका वैभव उसकी धन-दौलत का अभी तक पता भी नहीं चल सका है। बड़े गहरे हैं उसके खजाने बड़ी गुप्त हैं उसकी निधियां, उसकी तिजोरी के धन को खोजने के लिए उसके भग रूप की उपासना कीजिए। परमेश्वर का यह रूप निर्धन को धनवान्, निर्बल को बलवान्, शक्तिहीन को शक्तिशाली, बुद्धिरहित को बुद्धिमान् बना देगा। यदि आप ऐश्वर्य पाना चाहते हैं तो अपने मन में यही संकल्प लाइए।

आप कभी अपने आपको नीच, दीन, दुःखी दरिद्र मत ख्याल कीजिए।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

कभी यह बात मत मानिए कि हम निर्बल, अकर्मण्य और रोगग्रस्त हैं। आप अपने को सदा पूर्ण और सवर्गायुक्त ख्याल कीजिए। कभी इस विचार को पास मत फटकने दीजिए कि हमें असफलता का सामना करना पड़ेगा। दुःख दरिद्रता असफलता उस मनुष्य के पास कभी फटक सकती जिसने अपने प्रकाशमय पहलू को देख लिया है, जो दैवीय तत्वों में तन्मय रहता है। ये तो उन्हीं के बांटे पड़ती हैं जिन्होंने अपने दैवी तत्वों में तन्मयता नहीं प्राप्त की है, जिन्होंने अपनी शक्तियों का विकास नहीं किया है।

निराशा को दूर करने का एक ही उपाय है कि सामर्थ्यवान्, ऐश्वर्यशाली, प्रभु के विविध रूपों में प्रातःकाल उसके भग रूप का ध्यान करो। उत्तरी फ्रांस के युद्ध में लड़ने वाले एक अंग्रेज अफसर ने अपने अनुभव बताते हुए कहा है कि सच्ची वीरता शस्त्र युद्ध जीतने में नहीं, जीवन के संघर्षों को जीतने में है। जीवन के संघर्ष से दो तरह के व्यक्ति पराजित हो जाते हैं, एक तो वे जो जीवन में परमेश्वर की ऐश्वर्यमयी ज्योति का दर्शन नहीं कर सकने के कारण अपने को अनाथ समझते हैं और दूसरे वे जो परमेश्वर के ऐश्वर्यमय रूप का न तो दर्शन करते हैं और न करना चाहते हैं।

इसलिए अपने प्रभु को समक्ष रखकर अपने से कहिए यदि मैं ईश्वर सन्तान हूं तो मुझे प्रभु द्वारा प्रदत्त सम्पूर्ण संसार का ऐश्वर्य एवं वैभव विरासत में मिला है। निर्धनता और निर्बलता इस अटूट वैभव को छू भी नहीं सकती। क्योंकि स्वास्थ्य और सम्पत्ति तो अमर रूप है जबकि बीमारी और निर्धनता क्षणिक और असत्य निर्धनता मेरी प्रगति नहीं। ईश्वर पुत्र के लिए भगवान् के बेटे के लिए विश्वधर्ता के खजाने में किसी भी वस्तु का अभाव नहीं। कोई दुख नहीं, कोई गरीबी नहीं। अपने पिता भगवान् की सम्पूर्ण सम्पत्ति मेरी है। प्रत्येक दिन का प्रारम्भ मंग की इन विनयशील भावनाओं के साथ कीजिए। याद रखिए, संसार के जितने ऐश्वर्यशाली राजा, महाराजा, विद्वान्, विचारशील, न्यायाधीश, पण्डित, ज्ञानी हैं, सब उसके दरबार में खड़े होकर उससे 'प्रदान करो, प्रदान' करो यह माँग कर रहे हैं।

परमेश्वर के इस भागरूप की विशेषता विजयशीलता, उग्रता तथा उसकी अखण्डता है। परमेश्वर ने हमारे हृदयों में आशा, श्रद्धा, विश्वास और साहस भरा हुआ है। ये भाव विपत्ति के समय हमारे सहारा हैं। तूफान में दिग्दर्शक यंत्र नाविक का मार्ग दर्शन करता है। उसी तरह परमेश्वर का यह ऐश्वर्यमय भंग रूप हममें विजयशीलता, आत्मविश्वास और उग्रता का भाव भरेगा और उस समय, चाहे मुसीबतों के जितने भी पहाड़ हों, उनमें से

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

हम अपना रास्ता निकाल लेंगे। आइए, उषा: काल में हम प्रभु का गुणगान करें —

मूर्त विजय ! पावन वैभवमय।
विश्वतुलाधार ! रमा सारमय।
दुर्बल, निर्बल, सबल, अमीर
राजा हों या रंक अधीर
सभी झुका सिर तेरे द्वार
खड़े हुए हैं हाथ पसार !
अपने उस अनन्त वैभव की
एक दिखा दो हमको झाँकी।

देश-धर्म की रक्षा के लिए
कम से कम
या
अधिक से अधिक
जो भी संभव हो
प्रति माह अपना
दान अवश्य भेजिए
राकेशरानी
अध्यक्ष दयानन्द संस्थान (ट्रस्ट)
१५९७ हरध्यानसिंह मार्ग, करौल बाग, नई दिल्ली-५

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

हमें इस्लामी खतरे का मुकाबला करने के लिए जागना होगा

—बृजकिशोर 'अश्क'

लेखक का सामायिक सुझाव है कि मन्दिरों की चल-अचल सम्पत्ति का इस्तेमाल हिन्दूसमाज की रक्षा और शुद्धि के लिए करके हमें पैट्रोडालर के बल पर धर्मान्तरण करने वाली शक्तियों का मुकाबला करना चाहिए।

जब कभी सम्पूर्ण हिन्दू समाज के संगठन का प्रश्न या हिन्दुत्व के विस्तार की समस्या आ खड़ी होती है, पेट्रोडालर के बल पर मीनाक्षीपुरम् की घटना सिर उठाती है और आदिवासी क्षेत्रों में ईसाई मिशनरियों का बेतहाशा जाल फैलने लगता है, तब हिन्दुत्व (राष्ट्रीयत्व) के सजग प्रहरियों के अन्तःकरण में वही अर्थाभाव वाली चिर-परिचित वेदना प्रकट होती है, जो उनके कार्य-प्रवाह को यत्र-तत्र अवरुद्ध-सी कर देती है।

विदेशी पैसे के बल पर प्रतिवर्ष इंच-इंच कर राष्ट्रान्तरण की प्रवृत्ति को बल मिलता जा रहा है और अगर इसे रोकने के लिए प्रतिरोधात्मक कार्रवाई समय रहते न की गई, तो निश्चित ही हमें वे दिन देखने पड़ सकते हैं, जब हमें अपने ही घर में अजनबी एवं अनधिकृत करार दिये जाने का विष-पान करना पड़ेगा।

हमारा तिल-तिल कर समाप्त होता प्रभुत्व, हमारी शनैः-शनैः विलुप्त होती समर्थता और अप्रत्यक्ष रूप से छीनी जा रही हमारी राष्ट्रीयता हमारे अस्तित्व के लिए ही एक प्रश्नसूचक चिह्न है। इस बात से सम्भवतः कोई

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

दूरदर्शी चिन्तक इन्कार नहीं कर सकता कि हिन्दुस्तान की धर्मनिरपेक्षता तभी तक है, जब-तक हिन्दू बहुमत में हैं। वर्ना उन देशों की भी स्थिति अज्ञात नहीं, जहाँ हिन्दू अल्पसंख्यक हैं और उनके साथ अमानुषिक व्यवहार किया जा रहा है। यह भी कैसी विडम्बना है कि कभी विश्व की एकमात्र जाति आज कई जातियों से पीछे है। सम्भवतः विश्व की सबसे बड़ी तीसरी जनसंख्या के स्वामी होने के बावजूद हिन्दुओं का अपना कोई राष्ट्र नहीं। जिनका कभी चक्रवर्ती साम्राज्य था, उनका अपना साम्राज्य तक नहीं।

आज मुसलमानों के लिए दर्जनों मुस्लिम देश हैं जहाँ के वे गीत भी गाते हैं और जरूरत पड़ने पर वे वहां शरण भी ले सकते हैं। यही व्यवस्था ईसाइयों के लिए भी है परन्तु अगर हिन्दुस्तान से सारे के सारे हिन्दू निकाल बाहर किए जायें (जैसा बंगलादेश की सरकार अल्पसंख्यक हिन्दुओं के साथ कर रही है) तो उनके समक्ष हिन्दमहासागर या अरब सागर में डूब मरने या हिमालय से सिर टकरा कर समाप्त हो जाने के अतिरिक्त और कोई मार्ग न होगा।

देश में धर्मान्तरण के लिए भरपूर विदेशी पैसा विभिन्न स्रोतों से आ रहा है और तेजी से अनपढ़ हिन्दू धर्मान्तरित किये जा रहे है। देश के सीमावर्ती एवं आदिवासी क्षेत्रों में ईसाई मिशनरी पैसे के बल पर प्रलोभन दे-देकर धर्मान्तरण कर रहे हैं। राजनेता वोट की घिनौनी राजनीति हेतु सब कुछ मूक रहकर निरन्तर देखे जा रहे हैं। उन्हें कुर्सी के समक्ष अपने देश, अपनी मर्यादा एवं अपने धर्म तथा कर्त्तव्य से कोई सम्बन्ध नहीं। दुःख तो इस बात का है कि यह बीमारी सिर्फ तथाकथित हिन्दू नेताओं तक ही है। मुसलमान या ईसाई खुलेआम घोषणा करते हैं कि हम सबसे पहले अपने धर्म के प्रति वफादार हैं तथा राष्ट्र की वफादारी दूसरे नम्बर पर आती है। इसी धार्मिक कट्टरपन के कारण मुसलमान उस राष्ट्र के प्रति वफादार नहीं हो पाते, जिसके वे नागरिक होते हैं। इस हालत में अल्पसंख्यक के नाम पर दी जाने वाली हर विशेष सुविधा अनावश्यक एवं चाटुकारितापूर्ण है।

वैसे भी अल्पसंख्यक की जो परिभाषा संयुक्त राष्ट्रसंघ के मानव अधिकार आयोग की उपसमिति ने बनाई, उसके अन्तर्गत भारत में मुसलमान अल्पसंख्यक नहीं हैं। सन् १९५० ई में अल्पसंख्यक की जो परिभाषा उप-समिति द्वारा की गई, वह इस प्रकार है—

(१) अल्पसंख्यक के अन्तर्गत किसी राष्ट्र में बसा हुआ वह प्रभुत्वहीन जनसमूह शामिल है, जिसकी ऐसी अलग जातीय, पंथिक अथवा

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

भाषायी परंपरा हो, जो उस देश की जनसंख्या की परंपरा अथवा भाषा से भिन्न हो।

(२) अल्पसंख्यक कहलाने के लिए ऐसे जनसमूह की पर्याप्त संख्या होनी चाहिए जो अपनी विख्यात परंपरा और जीवन को बनाये रख सके।

(३) इस प्रकार के अल्पसंख्यक जनसमूह के लोगों की आस्था उस राष्ट्र के प्रति होनी चाहिए, जिसके वे नागरिक हैं।

इस प्रकार उपरोक्त परिभाषान्तर्गत अल्पसंख्यक मुख्य रूप से तीन तरह के हो सकते हैं, मजहवी, पंथिक या भाषाई। इस पैमाने के अनुसार प्रायः दुनिया के सभी देशों में अल्पसंख्यक पाये जाते हैं। मजहवी अल्पसंख्यक सीरिया में लगभग १६ प्रतिशत, मिस्र में १५ प्रतिशत, रूस और चीन में ११ प्रतिशत, यूगोस्लाविया में १५ प्रतिशत और बंगलादेश में लगभग १२ प्रतिशत हैं। ठीक इसी तरह श्रीलंका में तमिलभाषी तथा पाकिस्तान में पख्तून और बलूची भाषी तथा भारत में रहने वाले अनेक भाषाओं के लोग भाषाई अल्पसंख्यक हुए।

भारत में रहने वाले मुसलमान अल्पसंख्यक की परिभाषा एक के अनुसार प्रभुत्वहीन नहीं हैं। उन्हें हर क्षेत्र में वरीयता एवं नेतृत्व प्रदान किया गया है। साधारण कांस्टेबल से लेकर राष्ट्रपति तक मुसलमान हुए हैं। परन्तु इतिहास गवाह है इस बात का कि भारत के मुसलमान प्रारम्भ से ही इस देश के प्रति न तो वफादार रहे, न हैं और न रहेंगे। यदि यह बात सत्य है तो यह अल्पसंख्यक की परिभाषा तीन के विपरीत है, जिसमें कहा गया है कि ऐसे अल्पसंख्यकों की आस्था उस राष्ट्र के प्रति होनी चाहिए, जहां के वे नागरिक हों। वफादार मुसलमानों की संख्या अंगुलियों पर गिने जाने योग्य है और बाकी के प्रायः सभी निजी मुस्लिम कानून के अन्तर्गत देशद्रोही-पूर्ण चरित्र के लिए बाध्य हैं।

कारण यह कि इस्लाम सम्पूर्ण मानव जाति को दो भागों में बांटता है—

(क) मिल्लत—जो मुहम्मद साहब को अपना नबी (आखिरी) माने और कुरान पाक पर यकीन रखे।

(ख) कुफ्र—जो मुहम्मद साहब को अपना आखिरी पैगम्बर न माने और कुरान पाक पर विश्वास न लाये।

इस तरह के काफिर को चाहे वह उसका पड़ोसी अथवा भाई क्यों न हो,

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

उसे मुसलमान बनाना या समाप्त करना हर इस्लाम-समर्थक मुसलमान का फर्ज है।

इस तरह भूमि-विस्तार के दृष्टिकोण से इस्लाम सम्पूर्ण विश्व को दो भागों में बांटता है—

(१) दार-उल-इस्लाम जहां (इस्लाम समर्थक) मुसलमान का शासन हो और इस्लामी कानून हो।

(२) दार-उल-हरब—जहां किसी गैर-मुसलमान का शासन एवं कानून हो।

दार-उल-हरब के विरुद्ध जिहाद करना और किसी भी तरीके से उसे दार-उल-इस्लाम में बदलना प्रत्येक मुसलमान का कर्त्तव्य है।

यही कारण है कि विश्व में कहीं भी मुसलमान अल्पसंख्यक उस राष्ट्र के प्रति वफादार नहीं, जहां के वे नागरिक हैं क्योंकि वे निजी मुस्लिम कानून के अन्तर्गत एक विशेष मानसिकता से सम्बद्ध हैं, जो उनका मार्गदर्शन करती है।

विगत वर्षों में इलाहाबाद उच्च न्यायालय के लखनऊ बेंच का एक मुकदमा मुहम्मद अलीजान बनाम विशेष भू अर्जन पदाधिकारी (लखनऊ नगर-पालिका) परमादेश याचिका नं. १६०/१९६२ का फैसला मान्यवर न्यायाधीशों सर्वश्री हरिस्वरूप और एस. वर्मा ने दिया। फैसले में यह कहा गया था कि "आवश्यकता पड़ने पर सरकार कभी भी मस्जिद एवं कब्रिस्तान की भूमि को सार्वजनिक हितार्थ अधिग्रहीत कर उसके एवज में अन्यत्र जगह दे देगी।" इस फैसले के विरोध में पूरे देश के मुसलमानों ने जलूस निकाले। खुल कर फैसले का विरोध किया गया—यह कह कर कि यह फैसला निजी मुस्लिम कानून के अनुकूल नहीं।

मुसलमानो ! जरा यह तो बताओ कि मुस्लिम निजी कानून के अन्तर्गत और क्या-क्या नहीं ? उक्त कानून के अन्तर्गत तो यह भी नहीं कि मुर्दे को जमींदोज करने के बाद ऊपर से प्लास्टर का चबूतरा बनवाया जाये। परन्तु कब्रगाहों के नाम पर हजारों-हजार मीटर भूमि का अधिग्रहण इस जनसंख्या वृद्धि के युग में विडम्बना तो है ही।

इस मुस्लिम निजी कानून के अन्तर्गत भारतीय संविधान का कोई औचित्य नहीं समझ आता। इतना ही नहीं, उसके समक्ष भारतीय रक्षा

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

कानून भी व्यर्थ है। सन् १९४६ के मुस्लिम लीग अधिवेशन (दिल्ली) में फीरोजखां नून ने स्पष्ट कहा था "हम मुस्लिम समुदाय ऐसे संविधान को कभी स्वीकार नहीं करेंगे जिसमें अखण्ड भारत स्वीकार किया गया हो, हिन्दू-मुसलमानों के उस तांडव को देखेंगे जो चंगेज खां और हलाकू ने भी नहीं दिखाया था।" इसके बाद १६ अगस्त सन् १९४६ को मुस्लिम लीग द्वारा प्रत्यक्ष आंदोलन दिवस मनाने की घोषणा कर दी गई।

प्रथम आंदोलन कलकत्ता में चलाया गया। उस समय वहां मुस्लिम लीग सरकार थी और बंगाल के मुख्यमंत्री श्री सुहरावर्दी थे। बंगाल की सरकार ने १६ अगस्त की छुट्टी घोषित कर दी। कलकत्ता में मार-काट मची। मुसलमानों ने हिन्दुओं के साथ अमानुषिक व्यवहार किया और वहां की सरकार ने इसे रोकने का तनिक भी प्रयत्न न किया। इतना ही नहीं, उसे बढ़ावा भी दिया। इसके उपरान्त बंगाल के नोवाखाली में यही हुआ। वहां ऐसी स्थिति उत्पन्न कर दी गई कि हिन्दुओं का वहां रहना असम्भव हो गया। गांव लूट लिए गए, नरसंहार किया गया। स्त्रियों तथा कन्याओं को भगाया गया तथा उनके साथ बलात्कार किया गया। इसके उपरांत पंजाब के सिखों तथा हिन्दुओं के विरुद्ध भी ऐसा ही किया गया। मुसलमान गुण्डों ने कानून अपने हाथ में ले लिया।" (आधुनिक भारत का इतिहास पृष्ठ ३५८, ले. दीनानाथ वर्मा)

अब जरा भारतीय रक्षा कानून पर नजर दौड़ाइये। अलीगढ़ में दंगे की आग भड़क चुकी थी और हर तरफ भय, आक्रोश एवं तनाव व्याप्त था। मुस्लिम विश्वविद्यालय परिसर के सामने शमशाद मार्केट एवं छात्रावास के बीच अनूपशहर जाने वाली सड़क पर प्रान्तीय सशस्त्र पुलिस तैनात थी। परन्तु विश्वविद्यालय के प्रो-वाइस-चांसलर प्रोफेसर शफी ने जिलाधिकारी से सशस्त्र पुलिस हटाने का आग्रह किया। १० मई को कुलपति श्री खुसरो ने भी कहा कि गत १०३ वर्षों के इतिहास में कभी भी यहां सशस्त्र पुलिस नहीं रही। अलीगढ़विश्वविद्यालय एक केंद्रीय संस्था है। इसमें स्थानीय अथवा प्रादेशिक प्रशासन का हस्तक्षेप हमें पसन्द नहीं।

उल्लेखनीय है कि वह भूमि नगरपालिका क्षेत्र में थी, जहां पुलिस तैनात थी। विश्वविद्यालय परिसर के पास प्रैक्टिस कर रहे डा. शहजाद, अलीगढ़ वि. वि. के भूतपूर्व प्राध्यापक डा. इम्तियज हुसैन तथा इराक के छात्र वाई. ए. मजीद के वक्तव्यों से दंगे का कारण एवं विश्वविद्यालय की मूल घिनौनी मनोवृत्ति का पर्दाफाश हो गया।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

राजा गजनफर अली ने २ सितम्बर १९४६ को कराची की एक चुनाव सभा में कहा "मुसलमान अन्दर से सीधी कार्रवाई करने के लिए अन्तरिम सरकार में सम्मिलित हुए हैं। या तो कांग्रेस झुके अन्यथा मार-काट होगी" (राष्ट्र निर्माता सरदार पटेल, पृष्ठ ११४)

इत्तहादुल मुस्लिमीन के कासिम रजवी ने ३१ मार्च १९४८ को कहा— "मुसलमान तब तक अपनी तलवार म्यान में नहीं रखेंगे, जब तक इस्लाम के उद्देश्य की पूर्ति नहीं हो जाती। एक हाथ में कृपाण और दूसरे हाथ में तलवार लेकर शत्रुओं पर टूट पड़ो।" (पृष्ठ १६८)

एक हाथ में धर्मग्रन्थ और दूसरे हाथ में तलवार ! हिंसा, घृणा, विघटन एवं रक्तपात की नींव पर खड़ी परम्परा के बदबूदार मुखौटे में छिपे चेहरे वक्त-बे-वक्त इस तरह ही सामने आते रहे हैं। वह इकबाल, जिसने कभी वतनपरस्ती का यह गीत गाया था—

सारे जहाँ से अच्छा हिंदोस्तां हमारा
हम बुलबुले हैं इसकी ये गुलिस्तां हमारा

उसी इकबाल ने देश विभाजन का नारा सन् १९३० के मुस्लिम लीग के इलाहाबाद अधिवेशन में सभापति पद से भाषण देते हुए सर्वप्रथम दिया। उन्होंने कहा "जिस राष्ट्रीयता में मुसलमानों को इस्लाम के सिद्धान्तों की हत्या करनी पड़े उस पर तो उन्हें विचार तक नहीं करना चाहिए।" इन्हीं इकबाल महोदय का स्वर बदल गया। असली रूप सामने आया और वे गाने लगे—

चीनो अरब हमारा हिंदोस्तां हमारा
मुस्लिम हैं हम वतन है सारा जहां हमारा।

इकबाल के राष्ट्रभक्ति के नाटक के पटाक्षेप के बाद इस वीभत्स रूप को देखकर पंजाब के कवि त्रिलोकचन्द ने फरमाया—

इकबाल ने जब छोड़ी राहे वतनपरस्ती
गा-गा के यह तराना, सारा जहां हमारा,
हमने भी एक फिकरे में बात खत्म कर दी
सारा जहां तुम्हारा—हिन्दोस्तां समारा।

इसी तरह हिन्दू-मुस्लिम ऐक्य का नाटक खेलने वाले सर सैयद अहमद खां जिन्होंने सन् १८८५ ई० में गुरुदासपुर में भाषण के क्रम में कहा था—

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

हिन्दू और मुसलमान भाइयो, क्या आप लोग हिन्दुस्तान के अलावा किसी अन्य देश में भी बसते हैं ? क्या आप एक ही भूमि पर नहीं बसते और उसी में जलाये-दफनाये नहीं जाते ? स्मरण रखिये कि हिन्दू और मुसलमान शब्द दो धर्मों के द्योतक अवश्य हैं पर इस (भारत) भूमि पर बसने वाले हिन्दू, मुसलमान, ईसाई एक राष्ट्र के द्योतक हैं। यहां बसने वाली जातियों को मैं एक ही नाम से पुकारता हूं और वह नाम है हिन्दू अर्थात् हिन्दुस्तान के तमाम निवासी ।" (इन्डियन नेशन बिल्डर्स—सर सैयद अहमद खाँ, पृष्ठ ४१-४२)

वही सर सैयद अहमद खां कालान्तर में प्रबल राष्ट्रविरोधी हो गये। उन्होंने अलीगढ़ में मुहम्मडन एंग्लो-ओरियन्टल कालेज (वर्तमान मु. यूनिवर्सिटी) की नींव डाली और वहाँ से चंगेज खां तथा औरंगजेबी मानसिकता गतिमान् होने लगी। इसका उदाहरण है अलीगढ़ यूनिवर्सिटी का शिक्षित मुसलमान युवक।

हैदराबाद के राजप्रमुख मीर उस्मान अली जब ग्रेजुएट बनकर जाने लगे तो यूनिवर्सिटी के अधिकारियों ने कहा था कि "आप दक्षिण में दूसरा औरंगजेब बनकर जा रहे हैं।" (मेरे सपनों का भारत, पृष्ठ ६६, प्रकाशवीर शास्त्री)

जिस शौकत अली और मुहम्मद अली को महात्मा गांधी ने चलना सिखाया था, वही बाद में मजहबी रंग चढ़ने पर कहने लगे "एक गिरे से गिरा मुसलमान भी गांधी से लाख दर्जे बेहतर है, क्योंकि वह कुरान पर यकीन रखता है।"

सम्भवतः उसी कुरान पर, जिसमें कहा गया है कि ऐ मुसलमान, तू अगर मुसलमान है तो सिर्फ मुसलमानों से दोस्ती कर। दूसरे से करनी भी पड़े तो ऊपर से कर।"

"मुसलमानों को चाहिए कि मुसलमानों को छोड़कर काफिरों को अपना दोस्त न बनायें और जो ऐसा करेगा उससे और अल्लाह से कुछ सरोकार नहीं।" (कुरान सूरे अल इमरान) "और ध्यान रखो जो चीज तुम लूट कर लाओ, उसका पांचवां भाग खुदा का और पैगम्बर का और पैगम्बर के सम्बन्धियों का।"

(कुरान, सूरे अन्फाल, दसवां पारा)

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

"अल्लाह ने मुसलमानों से उनकी जानें और उनके माल खरीद लिए हैं कि उनके बदले उन्हें बैकुण्ठ देगा ताकि वे अल्लाह की राह में लड़ें और मारें और मरें। यह खुदा की पक्की प्रतिज्ञा है।"

(कुरान, सूरे तोबा)

"और इस तरह अरबी कुरान हमने उतारा ताकि तू मक्के के रहने वालों को और जो लोग मक्के के आसपास हैं, उन्हें डराओ और कयामत के दिन की मुसीबत से भी डराओ।" (कुरान, सूरे-शूरा)

प्रशासक वर्ग को थोक वोट चाहिए और चाहिए कुर्सी। इस कुर्सीवाद ने उन्हें घिनौने कृत्य हेतु प्रेरित किया है। फलस्वरूप उन्हें राष्ट्र एवं राष्ट्रीय अखण्डता का कतई ध्यान नहीं। देश में मुसलमान नेता, मंत्री या अन्य धार्मिक पदासीन लोग खुल्लमखुल्ला अराष्ट्रीय एवं देशद्रोहपूर्ण नारे लगा रहे हैं पर सरकार मौन होकर सब कुछ सुन रही है। आज धर्म निरपेक्षता का अर्थ ही हो गया है हिन्दूविरोध या हिन्दुत्वविरोध। जो हिन्दुओं को, भारतीय सभ्यता और यहाँ की मूल भावना को कोसे और गालियां दे, वह है धर्मनिरपेक्षतावादी और जो अराष्ट्रीय तत्त्वों को, विघटनकारी मनोवृत्ति और राष्ट्रीय अखंडता के शत्रुओं को धूल चटाना तो दूर उन्हें कुछ कहना भी चाहे, वह "साम्प्रदायिक" है।

सारे हिन्दू नेता चुप हैं। अल्पसंख्यकों के नाम पर दी जाने वाली सुविधाओं की आड़ में देश को खंडित करने का सामान इकट्ठा कर रहे हैं। जिस मुस्लिम लीग की स्थापना सन् १९०६ ई० में लार्ड मिन्टो ने कराई, जिसका उद्देश्य ही था भारत विभाजन, वही मुस्लिम लीग अभी भी हिन्दुस्तान में चुनाव लड़ रही है। यह दुर्भाग्य नहीं तो और क्या है।

मुसलमानों के धर्मप्रचार एवं धर्म-परिवर्तन के लिए भरपूर विदेशी धन विभिन्न स्रोतों से आ रहा है। ईसाई मिशनरी सीमावर्ती एवं आदिवासी क्षेत्रों को अपना निशाना बनाए जा रहे हैं। उन्हें भी बाहर से भरपूर पैसा मिल रहा है। परन्तु सोचने की बात है, प्रतिवर्ष करोड़ों रुपये के इस प्रवाह को रोकने के लिए आखिर हमारे पास कौन-से स्रोत हैं? हमें कहाँ से विदेशी धन प्राप्त होगा? हमें तो अपनी ही जेबें टटोलनी हैं और अपने ही बन्धुओं से सहयोग लेना है। इस विषय पर चिन्तन करें तो ज्ञात होगा कि हमारे पास भी धन के इतने स्रोत हैं, जिनसे समस्त विदेशी पैट्रोडालर का जवाब दिया जा सकता है। बस, जरूरत है उदारता की। देने हेतु आगे बढ़ने एवं लेने का सामर्थ्य पैदा करने की।

मैं दावे के साथ कह सकता हूं कि अगर हिन्दुस्तान के समस्त मंदिरों की आय का २५ प्रतिशत भी हिन्दूवादी संगठनों को प्राप्त हो जाये, मठों

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

की आय का एक चौथाई भी धर्मरक्षा में खर्च हो तो उससे विदेशी पैसे का प्रतिरोध किया जा सकता है।

देश के लगभग सात लाख गांवों में से प्रत्येक में अगर एक भी मंदिर माना जाए तो लगभग छः लाख मंदिर सिर्फ ग्रामीण क्षेत्र में हुए और अगर शहरों में दो लाख भी मानें तो कुल संख्या हुई आठ लाख।

इन आठ लाख मंदिरों में बहुत-से ऐसे मंदिर हैं जिनकी आय से मंदिर का साधारण खर्च भी पूरा नहीं हो पाता और बहुत-से ऐसे मंदिर हैं, जिनकी वार्षिक आय १२,००,००,००० रुपये तक है। अकेले तिरुपति के देवस्थानम् में प्रतिवर्ष लगभग १२·५ करोड़ रुपये की आय होती है। इसी तरह मदुरै के मीनाक्षी मंदिर की आय भी कई करोड़ रुपये है। तंजावूर बृहदीश्वर मंदिर की लगभग ६०,००० एकड़ उपजाऊ जमीन है। ऐसे करोड़ों प्रतिवर्ष की आय वाले मन्दिर की श्रेणी में रामेश्वरम्, काशी, बद्रीनाथ, द्वारिका एवं वैष्णोदेवी के मंदिर भी आ पाते हैं। सरकारी तौर पिछले वर्ष यह स्वीकार किया गया कि हैदराबाद के एक मंदिर में २००० किलो सोना है। पिछले पाँच वर्षों में उक्त मंदिर की ओर से ६१९ किलो सोना बेचा गया। यह सोना सरकार द्वारा खुले बाजार में बेचा जाता है। परन्तु जो सोना नियुक्त सरकारी अधिकारी एवं पंडे मिलकर साफ कर देते हैं, वह अलग है।

यद्यपि इन करोड़ों की आय वाले मंदिरों की संख्या बहुत ही कम है परन्तु एक लाख रुपयें की आय वाले मदिरों की संख्या गैर-सरकारी आँकड़ों के अनुसार लगभग १० प्रतिशत है। इस तरह आठ लाख मंदिरों में अस्सी हजार ऐसे हो सकते हैं, जिनकी वार्षिक आय कम से कम १,००,००० रुपये है। इन मंदिरों की संख्या चालीस हजार भी माने तो उनकी सम्मिलित आय लगभग ४,००,००,-०,००० रुपये हुई। अब इस रकम का एक चौथाई भी जोड़ा जाए तो यह १,००,००,००.००० (एक अरब) रुपया हो जायेगा। इस एक अरब रुपये से विदेशी पैसे का जवाब दिया जा सकेगा एवं किसी तरह का अर्थाभाव भी महसूस न होगा।

इसके अतिरिक्त मंदिरों की अन्य चल-अचल सम्पत्ति भी लगभग १०० अरब रुपये की है। इस पैसे का उपयोग हिन्दुत्व के प्रचार-प्रसार या धर्म-संस्कृति की रक्षा के क्षेत्र में शायद ही किया जाता हो। विख्यात प्राचीन संस्कृति एवं गौरवशाली इतिहास तथा परंपरा के धनी विराट् हिन्दू समाज के पास अपने धर्म, अपनी मर्यादा और अपने राष्ट्र की रक्षा के हेतु अभी भी अकूत सम्पत्ति है। परन्तु उसके लिए हम स्वयं जागरूक नहीं हैं। हमें जागना है।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

—बी० राम बालिगा

अथर्ववेद में गणित

बी. राम बालिगा पहले और बैंक बीमा अधिकारी थे और अब स्वतंत्र लेखन करते हैं। वैदिक गणित उनके स्वाध्याय का विशेष विषय है। प्रस्तुत है एक खोज पूर्ण लेख।

भारतीयों के बारे में दीर्घ काल तक यह धारणा रही कि गणित और विज्ञान को उनकी एक मात्र देन है—वर्तमान अंक पद्धति। गणित-विषयक विख्यात लेखक जे. एस. मेयर्स ने लिखा है कि "तथाकथित अरबी अंकपद्धति यानी १ से ९ तक अंक एवं शून्य तथा उनके स्थान तथा अग्रनयन की व्यवस्था का आविष्कार और पूर्ण विकास पूरी तरह भारत की देन है, जोकि अपने युग के सबसे बड़े विचारक और तत्त्ववेत्ता थे।"

हम इस पद्धति को बड़ी स्वाभाविक-सी समझते हैं और शायद ही कभी महसूस करते हैं कि यह मनुष्य के सबसे अद्भुत आविष्कारों में से एक है। जैसे यन्त्र विद्या में पहिया उसी तरह यह एक ऐसा बुनियादी आविष्कार था, जिसने बाकी तमाम आविष्कारों को सम्भव बनाया। मेयर्स आनन्द विभोर होकर कहते हैं—

'इसकी कल्पना भी नहीं की जा सकती कि इनके बिना हमारा काम कैसे चलता और दशमलव पद्धति के अभाव में हमारे अंक-गणित और गणितशास्त्र का स्वरूप क्या होता। आज विज्ञान ने हमें जो आराम और सुख-सुविधाएं सुलभ करा रखी हैं, उनके लिए ये साधारण अंक इस हद तक जिम्मेदार हैं, जिसकी हमें कल्पना नहीं है। प्राचीन हिन्दुओं के हम चिरऋणी हैं कि उन्होंने इन अंकों से हमारा परिचय कराया।"

नवीनतम शोध की कृपा से अब हम यह जानते हैं कि प्राचीन गणितज्ञ यानी वैदिक काल के विद्वान् गणितज्ञ यह महान् आविष्कार करके ही सन्तुष्ट होकर नहीं बैठ गये। इस युगान्तरकारी आविष्कार के बल पर वे आगे बढ़ते गए और उन्होंने बीज-गणित, रेखागणित और त्रिकोणमिति का आविष्कार किया और उनमें

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

प्रर्याप्त प्रगति की। उन्होंने समाकलन और अवकलन गणित (इंटीग्रल डिफरेन्शल कैल्कुलस) का पता लगाया, पाइथागोरस एवं एपोलोनियस के प्रमेय तथा ज्यामितीय और विश्लेषणात्मक शंकुमिति के प्रश्न हल किए।

अंकगणितीय संक्रियाओं में उन्होंने गुणा, भाग, वर्गफल, घनफल, वर्गमूल, घनमूल आदि की आश्चर्यजनक रूप से क्षिप्रविधियां निकालीं। आवर्ती दशमलव को तो उन्होंने जादुई बिसात बना डाला और उनके अनेक दिलचस्प धर्मों का पता लगाया और साधारण भिन्नों को दशमलव में बदलने की अत्यन्त क्षिप्रविधियां निकालीं। उन्होंने "वेष्टन" (आश्लेषण या आस्क्युलेशन) की विधि ईजाद की, जिससे आप चन्द सैकण्डों में यह बता सकते हैं कि १३, १७, १९, २० जैसी कोई छोटी संख्या अमुक बड़ी संख्या का गुणनखण्ड है या नहीं। उनके इस तरह के आविष्कारों की सूची बहुत लम्बी है।

जैसा कि सभी प्राचीन सभ्यताओं में होता आया है, यह सब सूक्ष्म ज्ञान बहुत ही गुप्त रखा गया और चन्द चुनिंदा लोगों तक ही सीमित रहा। फलतः जब भारत पर विदेशी आक्रमणों का तांता लग गया तब यह ज्ञान सदा के लिए विलुप्त हो गया। आर्यों के एक मूलभूत धर्मग्रन्थ "अथर्ववेद" में गूढ़ सांकेतिक भाषा सूत्रों के रूप में यह ज्ञान आज भी सुरक्षित है। इस तरह यह ज्ञान अर्थववेद में मानो ताले में बन्द था और उस ताले को एक बहुत ही जबर्दस्त प्रतिभा ने अत्यन्त कठोर बौद्धिक परिश्रम द्वारा आज से ३० वर्ष पहले खोला।

यह महान् प्रतिभा थी जगन्नाथ पुरी के गोवर्धन पीठ के पिछले शंकराचार्य जगत्गुरु श्री भारतीकृष्ण तीर्थ महाराज, जो प्रकाण्ड संस्कृतज्ञ होने के साथ ही आधुनिक गणित और विज्ञान के भी तलस्पर्शी ज्ञाता थे। प्राचीन वैदिक गणित के रहस्यों का उद्घाटन करने में सफल होने पर उन्हें क्या अनुभव हुआ, इसका वर्णन उन्हीं के शब्दों में सुनिए —

"आठ वर्ष के केन्द्रित ध्यान के बाद अन्ततः हम चिर काल से खोई हुई इन कुंजियों को खोजने में सफल हो गए, जिनकी सहायता से ही इस ज्ञान भण्डार के द्वार खोले जा सकते थे। हमें यह देखकर आनन्द-मिश्रित आश्चर्य और गहरा सन्तोष हुआ कि गणित के अत्यन्त जटिल प्रश्नों को अथर्ववेद के परिशिष्ट में आने वाले इन अति सरल वैदिक या गणितीय सूत्रों की सहायता से बड़ी आसानी से आनन-फानन में हल किया जा सकता है।" स्वामी जी ने आगे कहा कि ये सूत्र गणित की प्रत्येक शाखा पर

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

लागू होते हैं।

स्वामीजी महाराज जबर्दस्त लिक्खाड़ थे और उन्होंने १६ पोथियां लिखीं। ये पोथियाँ किसी भक्त के घर रखी हुई थीं और दुर्भाग्य से वहां आग लग गई और वे भस्म हो गईं। स्वामी जी हिम्मत हारने वाले आदमी नहीं थे। अपनी याददाश्त से उन्होंने उन्हें फिर से लिखना शुरू किया। किन्तु अभी वे पहली पोथी ही दुबारा लिख पाये थे कि १९६० में उनकी महासमाधि लग गयी। इस तरह कितना विशाल वैदिक खजाना अभी तक अज्ञात ही रह गया है, इसकी कल्पना ही की जा सकती है।

अगर कक्षा में वैदिक विधि से गणित पढ़ाया जाए तो गणित का पाठ जादू के कार्यक्रम जितना ही रोचक बन जायेगा। कितने आह्लादित हो उठेंगे नन्हे शिक्षार्थी यह देखकर कि हमारी अंकव्यवस्था दशमलव पर आधारित है। इस तथ्य का उपयोग करते हुए छह अंकों की एक राशि को उतने ही अंकों की दूसरी राशि से महज १५ मिनट में गुणा किया जा सकता है। १/९५ का दशमलव मूल्य ९५ के बजाय २ से भाग करके प्राप्त किया जा सकता है। इस प्रश्न का उत्तर ०.०५२६३-१५७८९४७३६८४२१ है, यह बताने में बस उतना ही समय लगेगा, जितना कि इसे लिखने में लगता है—यही कोई दस सैकिण्ड। बहुत-से गुणनफल और वर्गफल तो एक ही नजर में निकाले जा सकते हैं। वैदिक गणित-विधियां जादू की छड़ी की तरह नीरसता और उबाऊ मेहनत के भूतों को गणित की कक्षा से भगा देती हैं।

अब इनमें से कतिपय विधि पर दृष्टिपात करें। ये किस प्रकार काम करती हैं, यह दर्शाने के लिए मैं एक सरल तरीका बताऊँगा मगर आप जब तरीके को समझ लेंगे, उसके बाद तो आप प्रश्न को देखकर मुँहजबानी उत्तर लिख सकेंगे। आप को कागज-पेंसिल की भी जरूरत नहीं पड़ेगी। सुविधा और सुबोधता के लिए मैं छोटी संख्याओं का उपयोग करूंगा।

आइये ९४ को ८९ से गुणा करें। दोनों राशियों से सबसे निकटवर्ती १० का घात १०० है और हम उसे आधार संख्या के रूप में उपयोग करेंगे। दोनों संख्याओं को एक दूसरे के नीचे लिखिए और १०० से उनका जो अंतर है, वह उनकी दायीं ओर लिख दीजिए।

हमारी तालिका कुछ ऐसी बनेगी—

तालिका

१००

९४ —६
८९ —११

आइये, अब उत्तर निकालें। उत्तर का बायां हिस्सा होगा ८९—६ यानी ८३। आप देखगे कि ९४-११

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

भी ८३ ही है। उत्तर का दायां हिस्सा होगा ६×११ यानी ६६। पूरा उत्तर हुआ ८३६६ और अन्त में हमारी तालिका का रूप ऐसा होगा—

तालिका

१००	
९४	—६
८९	—११
८३	६६ उत्तर

चूंकि हमारी आधार संख्या १०० थी, इसलिए बाईं ओर के ८३ सैकड़े में थे, यानी ८३०० थे। इस बात को समझना बहुत जरूरी है, खासकर ऐसे मामलों में जिनमें थोड़ा एडजस्टमेंट करना पड़ता हो। जैसे कि ९३ गुणा ८४ में।

तालिका

१००	
९३	—७
८४	—१६
७७	११२
७८१२ उत्तर	

बायीं ओर आते हैं ८४—७ या ९३—१६, जोकि ७७ होते हैं और दायीं ओर ७ गुणा १६ अर्थात् ११२। मगर ये ७७ असल में ७७०० हैं, जिसमें आपको ११२ जोड़ने हैं। यानी ७८१२ है। ऐसे मामलों में दायीं ओर का पहला अंक बायीं ओर ले जाना होता है।

लेकिन जब राशियां चुनी हुई आधार संख्या से अधिक हों तो? तब भी विधि तो वही काम में लाई जाती है, पर आधार संख्या में अंतर घटाने की बजाय जोड़ दिया जाता है।

उदाहरण है ११२ गुणा १०७।

तालिका

१००	
११२	+१२
१०७	+७
११९	८४

ध्यान दीजिए ११२+७ बराबर ११९ और ७X१२ बराबर ८४। यह विधि तब भी काम में लायी जा सकती है, जब दो में से एक राशि आधार-संख्या से छोटी हो। उदाहरण है ९३ गुणा १०८।

तालिका

१००	
९३	—७
१०८	+८
१०१	—५६
१००४४ उत्तर	

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

बायीं ओर का उत्तर ९३+८ अथवा १०८-७ अर्थात १०१ है। दायीं ओर आते हैं (७) गुणा (+८) अथवा —५६। चूंकि बायीं ओर का १०१ वास्तव में १०१०० है, इसलिए उत्तर है १०१००—५६ अर्थात् १००४४।

आधार-संख्या के रूप में १० का कोई भी घात काम में लाया जा सकता है, उसे १०, १००, १००० और उनके १ अथवा उनके अपवर्तक भी काम में लाये जा सकते हैं, जैसे २०, ५०, ६०, २००, ३००, २५०, ५०० आदि। अगले उदाहरण में हम आधार-संख्या के रूप में ५० को लेते हैं। प्रश्न है ३८ गुणा ४६।

तालिका

५०	
३८	—१२
४६	—४
२ | ३४	४८
१७	४८ उत्तर

प्रथम स्तर में बायीं ओर की संख्या होगी ३ ८४ अर्थात् ३४। मगर चूंकि आधार संख्या ५० रखी है, इसलिए यह ३४ वस्तुतः ३४ ५० यानी १७०० है। दायीं ओर आती है ४८। आधार संख्या चाहे कुछ भी हो, दायीं ओर के अंक बदलते नहीं हैं।

किसी भी संख्या का वर्गफल निकालने की एक क्षिप्रविधि इस सूत्र में निहित है कि "जो कम है, उसे घटाओ।" मान लीजिए, हमें वर्गफल निकालना है ९२ का, जो १०० से आठ कम है। अब हमें करना इतना ही है कि ९२ में से आठ घटा दें। उसे बायीं ओर रखें। दायीं ओर रखें ८ अर्थात् ६४। पूरी संख्या हुई ८४६४। ९२ को ९२ से गुणा करने में कितना समय लगता, पर इस विधि से कितनी जल्दी उत्तर निकल आया।

इस सूत्र का अर्थ यह भी है कि जिसका वर्गफल निकालना हो वह राशि अगर आधार संख्या से अधिक है, तो जितना अधिक हो उतना जोड़ दिया जाए। १०९^2 का उत्तर निकालना हो तो उसका ढंग यह होगा १०९ धन ९ बराबर ११८ और चूंकि ९^2 बराबर ८१ है, ११८८१।

वैदिक गणित में वर्णित क्षिप्र-विधियां लगभग ३५ वर्ष पूर्व रूस के एक अत्यन्त प्रतिभावान् यहूदी गणितज्ञ याकोव ट्रैक्टेनबर्ग ने स्वतन्त्र रूप से खोजी थी। यूरोप के अनेक देशों तथा अमरीका और कनाडा में ये "ट्रैक्टेनबर्ग विधियों" के नाम से पढ़ाई जाती हैं। स्विट्जरलैंड में वे विशेष लोकप्रिय हैं और बैंकों, बड़ी व्यापारिक संस्थाओं और टैक्स विभाग में ट्रैक्टनबर्ग विधिय जानने वालों को नौकरी में तरजीह दी जाती है। ट्रैक्टेनबर्ग के आविष्कार सचमुच अद्भुत हैं, मगर वे वैदिक ज्ञान भंडार में भरी संपदा का बहुत छोटा-सा हिस्सा हैं।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

कश्मीर पुनर्वास विधेयक पर डा० कर्णसिंह से लम्बी बातचीत

अभी तक जम्मू-कश्मीर के राज्यपाल ने 'शरणार्थियों की स्थायी वापसी और पुनर्वास विधेयक १९८२' पर अपनी स्वीकृति नहीं दी। इस बिल के कानून बन जाने पर उन लोगों के लिए कश्मीर का द्वार खुल जायेगा, जो भारत और पाकिस्तान के विभाजन के समय अथवा भारत में कश्मीर के विलय के समय भारत छोड़कर पाकिस्तान चले गए थे। तब कश्मीर का क्या हाल होगा ? हमारी सुरक्षा के लिए कैसी-कैसी समस्यायें खड़ी हो जायेंगी ? ये सब प्रश्न देशभक्तों के मानस को मथ रहे हैं।

प्रस्तुत है इस ज्वलन्त समस्या पर लोकसभा के निर्दलीय सदस्य और जम्मू-कश्मीर के भूतपूर्व राज्यपाल डाक्टर कर्णसिंह से खुली और लम्बी बातचीत।

प्रश्न : कश्मीर की विधान सभा द्वारा पारित पुनर्वास बिल की चर्चा पूरे देश में है।

उत्तर : जी हां।

प्रश्न : उसका मुख्य मुद्दा क्या है ?

उत्तर : अब बिल पढ़ने से तो ऐसा लगता है कि उसका मुख्य मुद्दा है कि जो लोग १९४७ में इस देश को छोड़कर पाकिस्तान चले गए थे और जो ३५ वर्षों में अब एक प्रकार से पाकिस्तान के नागरिक ही बन गए हैं तथा जिन्होंने पाकिस्तान की नागरिकता स्वीकार कर ली है, उनको फिर से यहां लाकर बसाने का ध्येय लगता है इस विधेयक का।

प्रश्न : जो लोग पाकिस्तान चले गये या ऐसे भी लोगों के बारे में है जो आजाद कश्मीर के हैं ?

उत्तर : जी हां। देखिये न दो प्रकार की बातें हैं। जो लोग जिसे हम पाकिस्तान अधिकृत कश्मीर कहते हैं वहां के रहने वाले हैं, वे लोग भी इस बिल के तहत आ सकते हैं तथा जो पाकिस्तान चले गये हैं वे लोग भी।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

प्रश्न : तो डाक्टर साहब, इस बिल की आवश्यकता क्यों आ पड़ी ?

उत्तर : अब यह तो शेख अब्दुल्ला ही बता सकते हैं कि ३५ वर्षों के बाद उसकी क्या आवश्यकता पड़ी। मुझे तो लगता है, मैंने संसद में भी यही कहा और प्रधान मंत्री को भी यही पत्र लिखा कि मुझे तो लगता है—पहली बात यह कि यह बिल अवैधानिक है, क्योंकि नागरिकता देना केन्द्र का अधिकार होता है, किसी राज्य को यह अधिकार नहीं हो सकता कि वह भारतवर्ष की नागरिकता प्रदान करे। पहली तो मुझे यह आपत्ति है। दूसरी आपत्ति है मुझे राजनैतिक। आप जानते हैं कि कई लाख हिन्दू और सिख परिवार हमारे राज्य पाकिस्तान से या उस तरफ से आ गए थे १९४७ में। ३५ वर्षों से वे यहां रहते हैं, यहां बस गये हैं, यहां उनके बच्चे हो गये। दूसरी, तीसरी पीढ़ी हो गई। लेकिन उनको राज्य की नागरिकता की सुविधा नहीं दे रहे शेख साहब और कहते हैं कि नहीं देंगे। लेकिन वे लोग जो चले गये हैं, जो विदेशी नागरिक हो गये हैं उनको लाने का प्रयत्न कर रहे हैं। स्पष्ट लग रहा है कि उनसे भेदभाव बरता जा रहा है। और तीसरी उसमें आपत्ति यह है कि यदि ये लोग वापस आये तो उनकी जमीन जगहें खाली तो पड़ी नहीं हैं। उनको तो किसी को दे रखा है तो वे लोग जो यहां बैठे हैं जमीन पर वे उखाड़े जायेंगे तो वैधानिक रूप से, राजनैतिक रूप से, प्रशासनिक रूप से और सेक्युरिटी के रूप से मैं यह समझता हूं कि यह जो बिल है देश के हित में नहीं है।

प्रश्न : आप स्वयं जम्मू-कश्मीर के भारत में विलयन के एक अंग हैं और आपने एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। उसके लिए पूरा देश आपका ऋणी है। उसके सम्बन्ध में मैं यह जानना चाहूंगा कि कौन-सी ऐसी विशेष शर्तें उस समय विलयन की रखी गई थीं, जो दूसरे स्वतंत्र राज्यों से भिन्न थीं ?

उत्तर : ऐसा है कि सन् १९४७ में मेरे पिताजी ने जब हस्ताक्षर किये उस समय डिफेन्स मुख्य विषय था जिसके ऊपर अन्य सब राज्यों ने हस्ताक्षर किए थे। उस पर उन्होंने भी हस्ताक्षर किए थे। उक्त पत्र के उत्तरार्द्ध में माउन्टबैटन ने उत्तर देते हुए यह शर्त लगा दी कि जब परिस्थिति जम्मू-कश्मीर में ठीक होगी तब हम वहाँ प्लेबिसाइट करवा देंगे। पिता जी ने कोई शर्त नहीं लगाई थी। पिताजी के पत्र में कोई उल्लेख नहीं था। लेकिन भारत सरकार ने जब उसको स्वीकार किया तो उन्होंने स्वयं अपनी बुद्धि के अनुसार शर्त लगा दी।

प्रश्न : तो इसमें डाक्टर साहब, मैं यह जानना चाहूंगा कि आपसे तीन शर्तों की आवश्यकता कश्मीर के सम्बन्ध में क्यों पड़ी, जब अन्य राज्यों

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

जयपुर, जोधपुर, हैदराबाद आदि राज्यों के संदर्भ में उनकी जरूरत नहीं पड़ी ?

उत्तर : यही तो मैं कह रहा हूं कि यदि उस समय भारत सरकार यह प्लेबिसाइट की शर्त न लगाती तो स्थिति ही भिन्न होती, क्योंकि आपको यह स्मरण होगा कि ढाई-तीन सौ राजे-महाराजे और नवाब जो थे, उन्होंने इन्स्ट्रूमेंट आफ ऐक्सेशन साइन किया। वही जो मेरे पिताजी ने किया पहले चरण, में दूसरे चरण में उनका विलय हुआ। पहला ऐक्सेशन हुआ, ऐक्सेशन के पश्चात् मर्जर हुआ। हमारा ऐक्सेशन होके रह गया, मर्जर नहीं हुआ। और मर्जर इसलिए नहीं हुआ कि यह शर्त भारत सरकार ने लगा दी। उस समय परिस्थितियां जो थीं पाकिस्तान का हमला था और जवाहरलाल नेहरू आदर्शवादी थे। उन्होंने समझा कि यह करना चाहिए कि लोगों की राय हमें लेनी चाहिए। उन्होंने वह शर्त लगा दी तो दुर्भाग्य यह हुआ कि जहां अन्य भारतीय रियासतें ऐक्सेशन के पश्चात् उनका मर्जर हुआ, द्वितीय चरण हुआ, वहां हमारे राज्य में पहला ही चरण रहा, द्वितीय चरण नहीं हुआ।

प्रश्न : विलयन के समय आपकी उम्र क्या थी तथा क्या इस सम्बन्ध में आपकी अपने पिताजी महाराज हरिसिंह जी से बातें हुई थीं ? उनकी इस सम्बन्ध में राय क्या थी और आपकी राय क्या थी ?

उत्तर : ऐसा है उस समय मेरी आयु तो १६ वर्ष की थी केवल। १६ वर्ष की आयु में स्कूल से पढ़कर निकला था और कालेज में पढ़ रहा था। उन दिनों मैं अस्वस्थ भी हो गया था। इसलिए मैं चल-फिर भी नहीं सकता था और १६ वर्ष की आयु थी और उन दिनों का जो शासन था, जो समाज था उसमें पिताजी से अधिक कुछ वार्तालाप करने की गुंजाइश थी नहीं। लेकिन एक बात लोग आजकल भूल जाते हैं। पिताजी ने इन्स्ट्रूमेंट आफ ऐक्सेशन किया था २७ अक्तूबर,१९४८ को। वह तब किया था जब पाकिस्तान की ओर से आक्रमण इस राज्य पर हो चुका था और पाकिस्तान की फौज और जो कबाइली थे वे घाटी में दाखिल हो गये और श्रीनगर की ओर बढ़ रहे थे। तो आपातकालीन परिस्थिति में यह सारी बात हुई। अगर ठंडे दिमाग से यह सारी बात होती तो यह आज जो दावपेंच सारे आ रहे हैं शायद न होते। लेकिन पाकिस्तान ने हमला कर दिया और एक ऐसी परिस्थिति आपातकालीन हो गई कि पिताजी ने भारतवर्ष को कहा कि वह हमारी सहायता करे। भारतवर्ष ने कहा कि हम आपकी सहायता कैसे कर सकते हैं ? आप भारतवर्ष के अंग ही नहीं हैं। तब पिताजी ने यह इंस्ट्रूमेंट आफ ऐक्सेशन साइन किया। और भारतीय फौज...

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

प्रश्न। आप उन दिनों कहाँ थे ?

उत्तर : मैं यहीं था श्रीनगर में। हम सब श्रीनगर में थे।

प्रश्न : इसी मकान में ?

उत्तर : बड़े मकान में, जहां आजकल बड़ा होटल है। वहां हम सब लोग थे। फिर पिताजी बिल्कुल जाना नहीं चाहते थे जम्मू। वी. पी. मेनन जो उस समय आये थे भारत सरकार की ओर से, उन्होंने उनको बड़ा जोर दिया कि आप जम्मू चलिये। यहां अगर आप रह गये और कबायलियों ने हमला कर दिया तो फिर आप भी गये और ऐक्सेशन कौन साइन करेगा ? क्या होगा ? तब उनके मजबूर करने से हम लोग जम्मू चले गये।

प्रश्न : एक चीज और, शेख साहब की भूमिका कश्मीर के सम्बन्ध में बराबर विवादास्पद रही है और महत्वाकांक्षी रही है। इस संदर्भ में क्या आप प्रकाश डालेंगे कि सरदार पटेल और जवाहरलाल नेहरू की क्या राय थी और किन परिस्थितियों में आपको १९५३ में सदरे रियासत की हैसियत से कदम उठाना पड़ा था ?

उत्तर : यह तो बहुत लम्बा किस्सा है। संक्षेप में कहना बड़ा कठिन है। लेकिन उसके पश्चात् बहुत सारी बातें हुईं। १९४९ में जब मैं अमरीका से वापस आया इलाज करवाके उस समय पिताजी और शेख अब्दुल्ला का परस्पर बहुत विरोध था। वे दो विरोधी विचारधारा के प्रतिनिधि थे। तो उस समय उनका संघर्ष बहुत अधिक था। मैं जब आया १८ वर्ष की आयु में तब जवाहरलाल नेहरू ने और सरदार पटेल ने यह सोचकर कि यह चल नहीं रहा है, महाराज हरिसिंह का शेख अब्दुल्ला का परस्पर विरोध है, तब उन्होंने पिताजी को मजबूर किया कि आप राज्य को छोड़कर सूबे के बाहर बैठ जाइये और कर्णसिंह को, जो युवराज कर्णसिंह कहलाता था उन दिनों में १८ वर्ष की मेरी आयु थी, इनको आप पहले रीजेन्ट बना दीजिए। फिर मैं रीजेन्ट बन गया १९४९ में। उसके पश्चात् दो-ढाई साल के पश्चात् फिर सदरे रियासत की बात बनी। फिर मैं सदरे रियासत बना १९५२ में। और आपसे यह जो घटना बताई शेख अब्दुल्ला की यह सन् १९५३ में हुई। मैंने अभी अपनी आत्मकथा का पहला भाग छापने को दिया है उसको पढ़के आपको सारा संदर्भ पता चलेगा कि क्या परिस्थितियाँ थीं। लेकिन इतना बता दूं कि इसमें कोई शक नहीं कि शेख अब्दुल्ला कश्मीर घाटी के एक महत्वपूर्ण नेता रहे हैं। मैं तो यह कहूंगा कि कश्मीर घाटी के लिए शेख अब्दुल्ला के समान नेता ५० वर्ष पहले नहीं हुआ और न ही मेरे विचार से

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

अगले ५० वर्षों में होगा। यह मैं आपको बता दूं। लेकिन उनकी महत्त्वाकाक्षाएं जरूर हैं और उन महत्वाकांक्षाओं को भारतीय राष्ट्रीयता में ढालने में उनको बड़ी कठिनाई होती है। वह एक प्रकार से अपनी स्वतंत्रता, अपने स्वतंत्र विचार को ऐक्ट करना चाहते हैं। कश्मीर को जहाँ तक हो सके, स्वतंत्र रूप में बनाये रखना चाहते है। और भारतीय राष्ट्रीयता का यह तकाजा है कि ये जितने राज्य हैं वे सब भारत के अंग हो जायें। तो यह विरोध आरम्भ से ही हुआ है। शेख अब्दुल्ला का जो आपने पहला प्रश्न पूछा था आज वही विवाद है। तो यह वही विवाद चल रहा है पिछले ५० वर्षों से।

प्रश्न : एक बात बतायें वर्तमान विवादास्पद बिल जो राज्यपाल के पास हस्ताक्षर के लिए पड़ा हुआ है, उसके पारित हो जाने पर इस राज्य की राजनीतिक, आर्थिक और सामाजिक स्थिति क्या होगी ?

उत्तर : मैंने जैसे बताया न आपको कि मुझे लगता है कि राजनैतिक और प्रशासनिक भी और सुरक्षा के रूप में भी उसका बड़ा बुरा असर पड़ेगा···

प्रश्न : और आर्थिक ?

उत्तर : आर्थिक का वही होगा। यदि वे लोग आयें तो जो लोग यहां बैठे हुए हैं उनकी जमीनें जगहें जायेंगी तो आर्थिक भी प्रकोप होगा। मुझे जो लगता है अवैधानिक है और अगर यह राज्यपाल ने हस्ताक्षर कर भी दिये, जो कि आशा है नहीं करेंगे, अवश्य इसको चुनौती होगी सुप्रीम कोर्ट में और तत्पश्चात् ही आगे कोई बात चल पायेगी।

प्रश्न : इस बिल को पारित करने के पीछे शेख साहब की मंशा क्या है ?

उत्तर : शेख साहब की एक ही मंशा आरम्भ से रही है कि जहां तक संभव हो सके जम्मू-कश्मीर राज्य की स्वतन्त्रता को वे बढ़ावा दें। सम्पूर्ण रूप से तो स्वतन्त्र वह इस समय हो नहीं सकता है, वह तो जानते हैं लेकिन उसके अन्दर वे कितनी अधिक से अधिक स्वतन्त्रता मिले और अपना प्रशासन चलाने में उनको अवसर मिले, यह उनकी मंशा है और जितना यह कार्य होता है और जो भी वे कहते हैं उसी एक मंशा की पृष्ठभूमि में कहते हैं।

प्रश्न : तो डाक्टर साहब, यह एक बात सुनने में प्रायः आती है कि शेख अब्दुल्ला साहब चाहते हैं कि वह फिर प्रधानमन्त्री यहां के कहे जायें इसमें भी क्या कुछ सचाई है ?

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

उत्तर : ऐसा है कि १९५३ की जो परिस्थिति थी उस समय तक प्रधान-मन्त्री कहलाये जाते थे और यह तो सादिक साहब के समय में प्रधान मन्त्री को बदल करके मुख्यमन्त्री बनाया गया और अब शेख अब्दुल्ला चाहते हैं कि १९५३ की परिस्थिति फिर से उपस्थित हो जाये। तो उसमें यह भी एक अंश है कि यहां मुख्य मंत्री की बजाय प्रधानमन्त्री हो, लेकिन आश्चर्य की बात होगी कि एक देश में दो प्रधानमन्त्री हों। लेकिन अब्दुल्ला अवश्य चाहते हैं।

प्रश्न : पूरे देश में यह सर्वविदित है कि कश्मीर की राजनीति में आप और शेख अब्दुल्ला दो महत्त्वपूर्ण हस्तियां हैं, फिर इस बिल के सम्बन्ध में केन्द्रीय सरकार ने या किसी केन्द्रीय नेता ने आपसे कोई राय ली या नहीं ?

उत्तर : नहीं। आश्चर्य की बात है कि इस समय तक जब कि मैं आपसे बात कर रहा हूं मेरी राय बिल्कुल नहीं ली गई। हां, मैंने स्वयं अपनी राय प्रकट की। क्योंकि मैं इसे अपना धर्म मानता हूं कि जहां-जहां भी राष्ट्रीय हित में कहीं हानि पहुंचने की संभावना हो वहां मैं स्वयं अपना कार्य करता हूं, चाहे कोई मुझे पूछे या न पूछे। मैंने जम्मू में इसका विरोध किया। फिर मैंने लोकसभा में दफा ३७० के तहत प्रश्न उठाया। मैं श्री बलराम जाखड़ जी से मिला स्पीकर साहब से। उनसे मैंने बात की। उन्होंने मुझे स्वीकृति दी। मैंने वहाँ अपना वक्तव्य दिया और अभी जब शेख साहब का यहां बड़ा भयंकर भाषण दरगाह हजरत बल में हुआ तब मैंने प्रधान मन्त्री को पत्र भेजा। मैंने अपनी ओर से अपनी राय प्रकट की है लेकिन मेरी राय किसी भारतीय नेता ने, भारत सरकार के नेता ने, (अब नेता क्या, एक ही नेता भारत सरकार के रह गये हैं) उन्होंने मेरी राय नहीं मांगी।

यह भेंट-वार्त्ता कश्मीर के स्वर्गीय मुख्यमंत्री शेख मुहम्मद अब्दुल्ला के देहान्त से पूर्व हुई थी। कृपया उसी संदर्भ में पढ़ें।

— सम्पादक

बूचड़खाना बनाने का विरोध

गाजियाबाद। आर्य समाज दयानन्द नगर में नगर की समस्त आर्य-समाजों एवं संस्थाओं की एक विशेष सभा में यमुना नदी के पास की बस्तियों में कई एकड़ भूमि में एक विशाल बूचड़खाना खोलने के प्रस्ताव की घोर निन्दा की गई और विरोध किया गया।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

—हरीश अग्रवाल

हमारे भोजन का कैंसर से सम्बन्ध

आजकल दुनिया में सबको अपने स्वास्थ्य की चिन्ता हो रही है और वैज्ञानिक भोजन तथा स्वास्थ्य पर नित नई खोजें कर रहे हैं। वे सभ्य समाज को बता रहे हैं कि क्या खाना चाहिए और क्या नहीं। धूम्रपान या शराब पीने से क्या-क्या हानियां हैं ? ज्यादा वसा वाला भोजन शरीर में क्या रंग पैदा कर सकता है ? भोजन कितनी मात्रा में खाना चाहिए ? अब तक बताया जा चुका है कि वसावाला भोजन, नमक तथा चीनी स्वास्थ्य के लिए खराब हैं। अब निष्कर्ष निकाले जा रहे हैं कि किस चीज को खाने से कैंसर हो सकता है और किस चीज से नहीं। इसी तरह अन्य रोगों के बारे में है। राष्ट्रीय विज्ञान अकादमी ने हाल ही में एक रिपोर्ट में बताया कि गाजर, टमाटर और सन्तरा खाने से स्वास्थ्य बहुत अच्छा रहता है तथा कैंसर भी नहीं होता।

समिति ने दो वर्ष तक इस बात की जांच-पड़ताल की कि किस भोजन से कैंसर होता है। उसने अनेक लोगों पर सर्वे और जीवों के साथ प्रयोग किये। समिति के अध्यक्ष डा. क्लिफोर्ड ग्रोब्सटाइन ने कहा 'हमारा आम निष्कर्ष यही है कि हम जो कुछ खाते हैं, उसका कैंसर होने में अवश्य ही योग रहता है।'

वसा के बारे में रिपोर्ट में ऐसे अनेक अध्ययनों का हवाला दिया गया है, जिनसे यह सिद्ध होता है कि छाती व प्रोस्टेट का कैंसर उन व्यक्तियों में ज्यादा है जो अधिक वसावाला भोजन करते हैं। कुछ प्रयोगों में जीवों का वसा कम देने से रसौलियों का बनना भी कम हो गया। इसी लिए अधिक वसा वाला गोश्त, पनीर, दूध वाले पदार्थ तथा तल पदार्थ खराब बताये गये हैं।

चीन, जापान तथा आइसलैण्ड में पेट का कैंसर बहुत होता है। इन देशों का भोजन या तो नमकीन होता है या बहुत आग पर बनाया जाता है। धुएं में भोजन को पकाने तथा उसमें बहुत अधिक मिर्च मसाला लगाने से कैंसर पैदा करने वाले पदार्थ बनते हैं, जिन्हें हाइड्रोजनकार्बन तथा नाइट्रोसेमीन कहते हैं।

गाजर, खीरा, टमाटर, शकरकन्द आदि पदार्थ अच्छे बताये गये हैं।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

इनसे शरीर में विटामिन ए बनता है। एक अध्ययन से मालूम हुआ कि जिन व्यक्तियों ने गाजर तथा कैरीटीन वाले पदार्थों का सेवन किया, उन्हें फेफड़े का कैंसर बहुत कम हुआ, चाहे वे धूम्रपान करते रहे। इस आशय के भी प्रमाण मिले कि विटामिन सी शरीर में कैंसर वाले तत्त्व नाइट्रोसेमीन बनने से रोकता है तथा पेट के कैंसर से रक्षा कर सकता है। इस बात की भी चेतावनी दी गई है कि ज्यादा मात्रा में विटामिन गोलियां न खाई जाएं। विटामिन ए की ज्यादा मात्रा विष का काम कर सकती है।

कोई प्रमाण नहीं

समिति ने खाद्यपदार्थों में मिलाई जाने वाली चीजों पर कोई चिन्ता प्रकट नहीं की। पहले समाचार आया था कि कतिपय पदार्थों से कैंसर हो जाता है, लेकिन अभी अधिक अनुसंधान की जरूरत है, तब कोई निष्कर्ष निकाला जा सकेगा। खतरा तो कीटानाशक औषधियों तथा पर्यावरण प्रदूषण से भी है, लेकिन समिति ने अभी इसमें पर्याप्त अनुसंधान नहीं किया।

समिति ने बताया कि कॉफी, सैकरीन तथा अन्य गैर-कैलोरी वाली मीठी गोलियों से कैंसर नहीं होता। पहले यह सिद्ध किया गया था कि रेशे वाले भोजन से कैंसर नहीं होता, लेकिन समिति को इस आशय के कोई प्रमाण नहीं मिले। हो सकता है कि कतिपय देशों में किसी विशिष्ट तत्त्व से रक्षा होती हो, लेकिन सम्पूर्ण रेशे वाले पदार्थों से कोई रक्षा नहीं होती।

समिति के निष्कर्षों पर उद्योग चलाने वाले लोगों में हलचल मच गयी है और वे कह रहे हैं कि ये निष्कर्ष सही नहीं हैं। इन पर पूर्ण अनुसंधान नहीं किया गया है। लेकिन समिति के सदस्यों का कहना है कि उसने विशुद्ध रूप से पोषण की दृष्टि से सिफारिशें की हैं तथा गलत सिद्धांतों को प्रसारित करने का कोई प्रयत्न नहीं किया गया।

मरीज संघर्ष करे तो . . .

हाल ही में एक और नया सिद्धांत प्रस्तुत किया गया है जिसका सम्बन्ध रोग से इच्छा शक्ति के साथ संघर्ष करने से है। रोगग्रस्त व्यक्ति यदि रोग से संघर्ष करे तो उसके जल्दी अच्छा होने तथा आगे अच्छा जीवन बिताने की सम्भावनाएं अधिक रहती हैं।

अनेक लोग ऐसे होते हैं जो रोग आने पर बड़ी जल्दी निराश हो जाते हैं और 'हाय रे मरे, हाय रे चले' चिल्लाने लगते हैं। इससे उनका रोग

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

ठीक नहीं हो पाता तथा वे बहुत अधिक रोगग्रस्त हो जाते हैं। उनके शरीर की प्रतिरक्षा प्रणाली भी शिथिल हो जाती है।

रोगों से संघर्ष करने में आदमी की मनोवैज्ञानिक स्थिति बहुत काम आती है। आदमी कहां तक रोग से संघर्ष कर पाता है यह उसके मनोवैज्ञानिक तत्त्वों पर निर्भर करता है। आपके अन्दर की ताकत रुग्णता को दूर करने में काफी सहायता पहुंचा सकती है। ऐसे भी रोगी पाये गये हैं, जो कैंसर या दिल के दर्द से पीड़ित थे, लेकिन अस्पतालों में इलाज के बाद अपने काम पर चले गये। रोगी का पुनर्वास धीरे-धीरे होता है। यदि कोई लकवा का मरीज रहा तो वह घर पर ही रह सकता है। घर पर रहकर पड़ोसी भी सहायता कर सकते हैं लेकिन डाक्टर यह नहीं मानते कि कोई रोगी अस्पताल से बाहर रहकर ठीक हो सकता है। उनका कहना है कि मरीज स्वयं अपनी सहायता करके ही ठीक हो सकता है, दूसरे की सहायता से नहीं।

भारत में छाती का कैन्सर

भारत में छाती का कैंसर तो काफी होता है, लेकिन इसके लिए ज्यादा जिम्मेदार हमारी सामाजिक परिस्थितियां हैं। परिवारों में पढ़े-लिखे या जानकार सदस्य नहीं हैं, जिनको पर्याप्त मात्रा में स्वास्थ्य शिक्षा भी नहीं मिलती। यदि पहले ही पता चल जाय तो कैंसर का इलाज हो सकता है, ज्यादा बढ़ने पर इलाज होना मुश्किल होता है।

छाती के कैंसर के इलाज के लिए एक शोधकर्ता ने अपना एक नया सिद्धान्त बनाया है। कई विषयों को लिया गया है। सी. एस. आई. आर. के एक रिसर्च फैलो डा. सुब्रह्मण्यम् ने इस प्रकार के कैंसर के उपचार से संयुक्त रासायनिकचिकित्सा के योग का मूल्यांकन किया है। उन्होंने देश में विद्यमान सामाजिक-आर्थिक परिस्थितियों को भी ध्यान में रखा है। उन्होंने कुछ रोगियों का अध्ययन करके उन्हें रसायन का मिश्रण दिया, जिससे उन्हें लाभ पहुंचा।

कैन्सर का उपचार—नया तरीका

कैंसर कोई नयी बीमारी नहीं है। वर्तमान समय में संसार के सभी क्षेत्रों में कैंसर व्याप्त है। इस रोग के विषय में लोगों को बहुत कम जानकारी है। आज से हजारों वर्ष पहले भी मनुष्य को कैंसर हुआ करता था।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

आयुर्वेद की प्रमुख संहिता 'सुश्रुत संहिता' में इस रोग का 'अर्बुद' नाम से विशुद्ध वर्णन है। आजकल असाध्य अर्बुद को कैंसर रोग कहा जाता है।

एक युवा कैंसर शोधकर्ता डा. चन्द्रदेव प्रसाद का कहना है कि प्राचीन एवं आधुनिक चिकित्सा वैज्ञानिकों के विचारों में समानता दिखायी पड़ती है। आधुनिक चिकित्सा वैज्ञानिकों द्वारा सभी तरह के घातक अर्बुदों के लिए कैंसर शब्द का प्रयोग किया जाता है।

उन्होंने अपना शोध-कार्य आयुर्वैदिक चिकित्सा पर आधारित किया। वर्षों के अनुसंधान के बाद उन्होंने एक नई औषधि 'सी. डी. कैन्सीक्योर' तैयार की। इस दवा का परीक्षण आल इण्डिया इंस्टीट्यूट आफ मेडिकल साइन्सेज में किया गया और यह पेट व यकृत् के कैंसर में अधिक प्रभावकारी पायी गई। स्वयं डा. प्रसाद को अनेक रोगियों के उपचार में इससे सहायता मिली। इसका प्रभाव गर्भाशय, गालों, फेफड़ा, यकृत् के कैंसर पर बहुत अच्छा पाया गया। दवा का कुप्रभाव नगण्य रहा। इस दवा से सभी प्रकार के कैंसर रोग ठीक करने के लिए अनुसंधान व परीक्षण जारी हैं।

उनका कहना है कि लोगों को शुद्ध शाकाहारी भोजन करना चाहिए। गाय का दूध, मधु, गाजर आदि का रस, खुली हवा में घूमना, गेहूं के बिना छाने आटे की रोटी, चावल आदि सुपाच्य भोजन अच्छा रहता है। रोग प्रतिरोधक शक्ति बनाये रखने का उचित प्रबन्ध रखना चाहिए। उनके अनुसार संगीत सुनना भी लाभदायक है।

कैंसर शोध में डा. प्रसाद को शुरू से अभिरुचि रही है, लेकिन उनको बढ़ावा नहीं मिला है। फिर कैंसर उपचार के लिए देशी आयुर्वैदिक औषधि या पद्धति को बढ़ावा मिलना चाहिए, उसमें सरकार को धन लगाना चाहिए। आधुनिक चिकित्सा वैज्ञानिकों का कहना है कि आयुर्वेद में कैंसर रोग का वर्णन नहीं है। लेकिन इस बात का खंडन किया जा चुका है।

यहां यह बात भी दिलचस्प है कि जिन कैन्सरग्रस्त रोगियों की परीक्षा की गयी वे सभी खैनी, तम्बाकू, हुक्का, सिगरेट, बीड़ी, शराब के आदी थे। डा. चन्द्रदेव के पास अनुसंधान के साधन नहीं हैं। यदि पूर्ण साधन उपलब्ध हो जायें, तो वे आयुर्वैदिक पद्धति का और अधिक विकास कर सकेंगे।

अदरक के गुणकारी उपयोग

अदरक, जो प्रत्येक घर में प्रयोग में लाया जाता है, एक महान् गुणकारी पदार्थ है। हरे अदरक को अदरक कहा जाता है और सुखाये हुए अदरक को

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

'सोंठ' कहते हैं। मनुष्य के लिए यह दोनों ही रूपों में अमृततुल्य है। यहां हम आपके लाभार्थ इसके चुने हुए लाभकारी प्रयोग दे रहे हैं, ताकि आवश्यकता पड़ने पर आप इनसे लाभ उठा सकें।

लाभकारी उपयोग—

१. भोजन से पूर्व अथवा भोजन के समय अदरक का सेवन करने से भूख खुलकर लगने लगती है।

२. गर्मी अथवा बरसात के दिनों में अदरक का सत पेट की पाचन-सम्बन्धी तमाम गड़बड़ियां को दूर कर देता है।

३. अन्य उदर रोगों में आधा तोला अदरक का रस समान मात्रा के पानी में मिलाकर पियें; लाभ होगा।

४. जिन लोगों को दूध हजम न होता हो अथवा दूध पीने से दस्त लग जाते हों, वे सोंठ को दूध में पका कर अथवा दूध में सोंठ डालकर पियें। दूध हजम होने लगेगा।

५. पिसी हुई सोंठ की पानी के साथ फंकी लगाने से कब्ज दूर हो जाती है।

६ कभी-कभी खाली पेट पानी पी लेने से पेट में दर्द हो जाता है, ऐसी दशा में सोंठ का चूर्ण गुड़ में मिलाकर खाने से फौरन आराम मिलता है।

७. उपरोक्त ढंग से सोंठ का सेवन संग्रहणी में भी लाभदायक है।

८. आंव हो जाने सर सोंठ व गुड़ मिलाकर गोलियां बनाकर सेवन करने से जल्दी ही लाभ होता है।

९. पेट में ऐंठन, वायु, गोले का दर्द अथवा योनि-शूल में ४ तोला सोंठ, आठ तोला गुड़, १६ तोला सफेद तिल मिला कर लड्डू बाँध लें और दूध के साथ सेवन करें; लाभ होगा।

१० गर्भपात और प्रसव-वेदना रोकने के लिए दूध में सोंठ पका कर पीना चाहिए।

११. गर्भपात और प्रसव-वेदना रोकने के लिए सोंठ, मुलहठी और देवदार तीनों सम मात्रा में चूर्ण कर दूध के साथ सेवन करें।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

१२. बच्चा होने के बाद जच्चा को दूध के साथ सोंठ की फंकी लगा
बहुत लाभदायक सिद्ध होता है।

१३. बुखारजन्य हिचकियों को रोकने के लिए सोंठ के चूर्ण को खां
मिलाकर प्रयोग करें।

१४. यदि ज्वर में बेहोशी आए तो रोगी की नाक में अदरक के रस
एक-दो बूंद टपकाएं, वह होश में आ जाएगा।

१५. सोंठ जीरा व हरड़ की चटनी पीस कर भोजन से पूर्व खाने से प
पेट में नहीं लगता।

१६. गला बैठ जाने पर अथवा टांसिल हो जाने पर अदरक का से
विशेष लाभ पहुंचाता है।

१७. खांसी, जुकाम अथवा अरुचि में अदरक के रस को शहद के स
मिलाकर चाटें; आराम मिलेगा।

१८. फ्लू में अदरक की चाय पी कर अच्छी तरह ओढ़ कर सो जा
लाभ होगा।

१९. पीलिया रोग में दशमूल काढ़े व गरम घी के साथ सोंठ को पका
खाना लाभदायक रहता है।

२० मोटापा दूर करने के लिए सोंठ का अधिकतम प्रयोग करें।

२१. बवासीर लहा में यदि टट्टी सख्त आती हो, तो राव में सोंठ मिला
घी के सत्तू के साथ सेवन कर।

२२. दाढ़ में दर्द होने पर सोंठ के कषाय से कुल्ले करें या सोंठ के
को खोखली हुई दाढ़ में भर ल।

२३. कान की पीड़ा में अदरक के रस को शुद्ध सरसों के तेल में पका
कान में टपकाय; तुरन्त लाभ हो जाता है।

२४. अदरक के रस में पुराना गुड़ मिलाकर खाने से शरीर की सूजन
जाती है।

हिन्दुओ जागो! देश बचाओ!

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

—राधेश्याम श्रीवास्तव

जय भारत

बच्चों द्वारा खेले जाने योग्य एक लघु नाटक, जिसमें ईसाई मिशनरियों के काले कारनामों पर प्रकाश डाला गया है।

कक्षा के अन्दर गुरु जी पढ़ा रहे थे। सभी लड़के और लड़कियां मौन होकर गुरु जी का व्याख्यान सुन रहे थे। एक बालिका आकर कक्षा के द्वार पर रुक गयी। बोली—गुरु जी, क्या मैं अन्दर आ सकती हूं? अन्दर से गुरु जी बोले आ जाओ।

आगन्तुक बालिका आकर पीछे एक कुर्सी पर बैठ गयी।

श्वेत कुर्ता तथा धोती, बिखरे बाल तथा छोटी-छोटी दाढ़ी में गुरु जी का मुखमण्डल तेजोयुक्त था। इतिहास का घन्टा चल रहा था। पढ़ाते-पढ़ाते गुरु जी ने प्रश्न किया

गुरु गोविन्द सिंह ने मुगलों से लड़ाई क्यों की थी? रंजन भैय्या बतायें।

रंजन सिर नीचे किये खड़ा था।

गुरु जी बोले—क्यों रंजन, बोल क्यों नहीं रहे? रंजन फिर चुप रहा।

गुरु जी बोले—बैठ जाओ। अब बतायेगी बहन नीति।

नीति खड़ी हो गई और बोली—क्योंकि मुगल हिन्दुओं को बलपूर्वक मुसलमान बना रहे थे।

ठीक। बहुत अच्छा, गुरु जी बोले,

नीति फिर अपने स्थान पर बैठ गयी। इतने में घन्टा बजा।

गुरुजी बोले—अच्छा, आगे कल पढ़ायेंगे।

गुरु जी ने रंजन से प्रश्न किया—क्यों, क्या बात है? पढ़ क्यों नहीं रहे हो आजकल?

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

रंजन अपने स्थान पर चुपचाप खड़ा रहा।

अच्छा कल पढ़ कर आना, इतना कहकर गुरु जी कक्षा से बाहर चले ग रंजन ने पुनः अपना स्थान ग्रहण किया।

सुबह साढ़े सात बजे। रंजन अपनी कोठी के बरामदे में बैठा चाय रहा था। इतने में समाचारपत्र विक्रेता आया और पत्र की एक प्रति रंज के हाथों में थमाई और चलने को हुआ।

रंजन ने कहा -- रुको। चाय पीलो।

'नहीं, नहीं। इस समय हमारे पास समय नहीं है। फिर आयेंगे त पियेंगे। इतना कहकर पत्र विक्रेता साइकिल पर सवार हुआ और चल दिया

रंजन ने चाय की चुस्की ली और समाचारपत्र पर दृष्टि डाली। ऊप ही मोटे-मोटे अक्षरों में छपा था—दक्षिण भारत में सौ हिन्दू परिवार ईसा बने।

फिर नीचे जो लिखा था, उसे भी रंजन ध्यान से पढ़ने लगा। लखनऊ से प्राप्त समाचार के अनुसार दक्षिण भारत के एक गांव में सौ हिन्दू परिवार ईसाई बने। ये सब हरिजन परिवार थे। अभी गाँव के कुछ और परिवार ईसाई बनने के लिए तैयार किये जा रहे हैं। समाचार पढ़कर रंजन एकटक सामने की ओर देखने लगा, मन में विचारों की शृंखला बन रही थी। क्या भारत फिर किसी दिन परतन्त्रता की बेड़ियों में जकड़ दिया जाएगा ? क्या किसी दिन ये ईसाई फिर हमें अपना दास बना लेंगे ? क्या ये ईसाई हमारे हिन्दू भाइयों को ईसाई धर्म ग्रहण कराके हमारे हिन्दुस्तान को ईसा लैंड में बदल देंगे ? क्या हमारा हिन्दू धर्म किसी दिन समाप्त हो जायेगा ? शायद इन ईसाइयों की यही इच्छा है।

कुछ समय तक रंजन के मन में इसी प्रकार के प्रश्न उठते रहे। फिर मन कह उठा—नहीं, नहीं। हम ऐसा कभी नहीं होने देंगे। हम इसे अपनी शक्ति भर रोकने का प्रयास करेंगे।

फिर मन में प्रश्न उठा—इसे कैसे रोका जाए ? रंजन कुछ देर तक इसी बात पर विचार करता रहा।

जब उसकी निगाह कलाई पर बंधी घड़ी पर गई तो साढ़े आठ बज रहे थे।

रन्जन को साढ़े आठ बजे स्कूल जाना था। रन्जन उठा, कपड़े पहिने।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

फिर पुस्तकों की [illegible] गया। फाइल उठाई। साइकिल पर सवार होकर कालेज की ओर चल दिया।

रन्जन ने कक्षा में प्रवेश किया। राजेश, जो कक्षा का एक दादा टाइप का छात्र था, कक्षा के अन्दर गुरु जी के कुर्सी के पास खड़ा होकर शृंगारिक गजलें और शेर कह रहा था। कक्षा के कुछ और विद्यार्थी राजेश की गजलों और शेरों को सुन कर वाह-वाह कर रहे थे।

राजेश के गीत की भनक रन्जन के कान में भी पड़ी। सुनते ही रन्जन क्रोधित हो उठा। रन्जन राजेश के सामने जाकर बोला—चमार कहीं के, यह प्रेम गीत गाने का स्थान नहीं, विद्यलय है, जहां बालक--बालिकाओं को राष्ट्रभक्त बनने की प्रेरणा दी जाती है, विलासी और कायर बनने की नहीं।

ये कायरता और विलासिता उत्पन्न करने वाले गीत यदि सुनाये, तो जानते हो क्या होगा ?

राजेश को अपनी दादागीरी के रास्ते में रोड़ा अटकना बहुत बुरा लगा। वह दादागीरी के अन्दाज में बोला—क्या होगा ? रन्जन बोला—ऐसी पिटाई करूंगा कि विद्यालय छोड़ दोगे।

राजेश फिर दादा के अन्दाज में बोला—तू क्या पिटाई करेगा ?

रन्जन बोला—पुनः गाओ तो बताऊं कि क्या पिटाई करूँगा।

राजेश कुछ तैश में आकर बोला—रन्जन, तुममें इतनी शक्ति नहीं कि तुम मुझे गाने से रोक सको।

इतने में राजेश का एक साथी रमेश बोला - गाओ यार, हम लोगों का गाना कौन रोक सकता है ? फिर राजेश ने अपना शेर कहना प्रारम्भ किया। रन्जन ने अपने हाथ की फाइल एक डेस्क पर रख राजेश के सामने आकर उसे इतना जोरदार घूंसा मारा कि राजेश लड़खड़ा कर जमीन पर गिर पड़ा।

रन्जन क्रोधित स्वर में बोला—नीच, चमार, और गीत सुना। राजेश संभल कर किसी प्रकार से खड़ा हुआ। फिर बोला—रमेश ! निकाल चाकू, आज मैं रन्जन के प्राण लेकर छोड़ूंगा।

रमेश जो पीछे बैठा था, चाकू निकाल कर बीच में पड़ा। नीति जो बीच में बैठी थी, उसके दिमाग में एक बात आयी कि रन्जन को बचाना चाहिए। रमेश बीच में पड़ने लगा तो नीति ने रमेश को गिराने के लिए

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

अपना पैर बढ़ा दिया, जिससे रमेश मुंह के बल गिर पड़ा और रन्जन तक न पहुंच सका। चाकू हाथ से छूट गया।

इतने में गुरु जी ने कक्षा में प्रवेश किया। देखा कि राजेश खड़ा रन्जन को भद्दी-भद्दी गालियां दे रहा था। रन्जन क्रोध युक्त लाल-लाल आंखों से एक ओर खड़ा था। सामने फर्श पर चाकू भी पड़ा था।

गुरु जी ने रन्जन से पूछा— क्या बात है ? लड़ाई क्यों की ?

इतने में राजेश बोल पड़ा—यह मुझे नीच और चमार कहता है।

रन्जन बोला— ये सभी के सामने बैठ कर गजलें और शायरियां गाता है। रोकने पर कहता है कि किस में इतनी शक्ति है, जो मुझे इन कार्यों से रोक सके।

गुरु जी ने चाकू हाथ में उठा लिया और पूछा कि यह चाकू किसका है ?

रन्जन ने कहा—रमेश का है। रामचन्द्र ने मांगा था। गुरु जी बोले—अच्छा।

फिर रामचन्द्र की ओर देखकर बोले—क्यों ? यहां दादागीरी करने आते हो ?

दोनों हमारे कमरे में चलो। हम अभी आते हैं। रमेश और राजेश, दोनों कक्षा से बाहर चले गये। फिर रन्जन को आज्ञा दी। चलो, अपने स्थान पर बैठो।

फिर गुरु जी ने सबसे पूछा—इन दोनों ने क्यों मारपीट की?

कक्षा का नायक खड़ा होकर बोला—गुरु जी, राजेश आपकी कुर्सी के पास खड़ा होकर शृंगारिक गीत गा रहा था। इतने में रन्जन पहुंचे तो इन्होंने राजेश को गीत गाने से रोका, तो वे नहीं माने। बस, फिर दोनों लोगों ने मारपीट करनी शुरू कर दी।

गुरु जी ने नायक से प्रश्न किया—क्या रन्जन ने राजेश को चमार कहा था ?

नायक ने उत्तर दिया - हां, गुरु जी।

गुरु जी ने नायक को आज्ञा दी—बैठ जाओ। नायक बैठ गया।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

गुरु जी ने रन्जन को आज्ञा दी—खड़े हो जाओ। रन्जन अपने स्थान पर खड़ा हो गया।

क्यों रन्जन, चमार किसे कहते हैं ? गुरु जी ने प्रश्न किया। रन्जन सिर झुकाये खड़ा रहा।

क्यों ? बिना समझे ही चमार कह दिया था। सिर ऊपर करके रन्जन बोला—नहीं, गुरु जी।

गुरु जी बोले—फिर क्यों नहीं बताते ?

रन्जन ने बताना शुरू किया—चमार हिन्दुओं में एक जाति होती है, जो अन्य जातियों की अपेक्षा नीच मानी जाती है।

गुरु जी ने आज्ञा दी – बैठ जाओ।

रन्जन बैठ गया।

फिर बोले—आज समाचारपत्र किस-किसने पढ़ा है ?

कक्षा के अन्दर से कई आवाजें आयी गुरुजी, हमने—गुरु जी, हमने।

फिर कक्षा में टहलते हुए बोले—क्यों रन्जन, तुमने भी पढ़ा है ?

रन्जन अपने स्थान पर खड़ा होकर बोला जी हाँ। पढ़ा है।

गुरु जी ने प्रश्न किया—आज का मुख्य समाचार क्या था ?

रन्जन ने उत्तर दिया—गुरु जी, कल दक्षिण भारत के किसी गाँव में सौ हरिजन परिवार ईसाई हो गये।

गुरु जी ने टहलते हुए आज्ञा दी—अच्छा बैठ जाओ। रन्जन अपने स्थान पर बैठ गया।

गुरु जी बोले—क्या तुम लोगों ने यह जानने का प्रयास किया कि ये लोग ईसाई क्यों बने ?

कक्षा के सभी छात्र चुप थे।

गुरु जी कुछ देर रुक कर बोले—नहीं जाना, तो अब जान लो।

हिन्दुओं ने किसी जाति को ऊँचा तथा किसी जाति को नीचा माना और ऊंची जाति के हिन्दुओं ने नीच जाति के हिन्दुओं से घृणा की और उन्हें दबाते रहे।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

इसी कारण उन्होंने धर्मपरिवर्तन कर लिया।

लेकिन कोई ऊँचा और नीचा किसी जाति में जन्म लेने के कारण नहीं, ऊँचे-नीचे कर्म करने के कारण होता है।

हमारे वे भाई जो हिन्दू होते हुए भी नीच समझे जाते हैं, दूसरे धर्म को स्वीकार कर लेते हैं।

यदि हम अपने हिन्दू धर्म का प्रसार चाहते हैं, तो आपस के इस भेद-भाव को मिटायें।

रन्जन खड़ा हो गया और उसने प्रश्न किया—गुरु जी इस धर्मपरिवर्तन को रोका कैसे जाए? गुरु जी ने उत्तर दिया—यदि देखा जाये तो ग्रामवासी हरिजन ही ज्यादा धर्मपरिवर्तन करते हैं, क्योंकि अशिक्षित हैं।

धर्मपरिवर्तन को रोकने हेतु हमें उन्हें शिक्षित करना होगा। हमें उन्हें धर्म का ज्ञान कराना होगा। तब वे धर्मपरिवर्तन नहीं करेंगे।

इतने में घन्टा बजा और गुरु जी कक्षा से बाहर चले गये।

o o o

गुरु जी अपने कमरे में पहुंचे। वहां रमेश और राजेश दोनों अपने स्थान पर खड़े हो गए।

गुरु जी ने रमेश से प्रश्न किया—क्यों, यहां दादागीरी करने आते हो?

रमेश और राजेश दोनों अपने स्थान पर सिर झुकाए खड़े रहे।

गुरु जी कुछ क्रोधित होकर बोले—बोल क्यों नहीं रहे हो? क्या गूंगे हो गये हो?

रमेश दबी आवाज में धीरे से बोला—जी नहीं। दोनों फिर चुपचाप खड़े रहे।

जाओ। कल अपने-अपने संरक्षकों को लेकर विद्यालय आना।

संरक्षक का नाम सुनते ही दोनों भयभीत हो गये। दोनों ने हाथ जोड़े और क्षमा मांगनी शुरू की—गुरु जी अब इस प्रकार के गलत कार्य नहीं करेंगे। गुरु जी, क्षमा कर दीजिए।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

कुछ देर तक दोनों इसी प्रकार क्षमा मांगते रहे। तब गुरुजी बोले—ठीक है, जाओ। इस बार तो क्षमा किये देता हूं, लेकिन इस प्रकार की कोई घटना और घटती है तो दोनों विद्यालय से निष्कासित कर दिये जाओगे।

दोनों गुरु जी के कमरे से बाहर चले गये।

o o o

विद्यालय में छुट्टी हुई। सभी छात्र-छात्राओं ने घर प्रस्थान किया। सड़क पर पहुँचे। सड़क पर रिक्शा पर सवार एक आदमी प्रचार कर रहा था—भाइयो, कल दक्षिण भारत में हुए धर्मपरिवर्तन का विरोध करने के लिए हनुमान् मन्दिर में आज सायं पांच बजे एक विशाल जन सभा का आयोजन किया जा रहा है, जिसकी अध्यक्षता हनुमान् मन्दिर के महंत जी करेंगे। अतः हिन्दुत्वप्रेमी जनता से निवेदन है कि वह शाम को पांच बजे अधिक से अधिक संख्या में उपस्थित होकर कार्यक्रम को सफल बनाये।

रन्जन ने सोचा कि हम अवश्य जायेंगे।

रन्जन घर आया। कापी-किताब रखकर अल्पाहार किया, फिर साइकिल पर सवार हो हनुमान् मन्दिर की ओर चल दिया। कुछ ही क्षणों के बाद वह हनुमान् मन्दिर पहुँच गया।

लगभग दस हजार लोगों की भीड़ वहां उपस्थित थी। महंत जी अपना भाषण दे रहे थे।

रन्जन उद्घोषक के पास पहुँचा। बोला—कृपया मुझे भी बोलने का समय दीजिए। उद्घोषक बोला—अच्छा, अभी महंत जी के बाद। रन्जन ने धन्यवाद दिया, फिर पीछे आकर खड़ा हो गया।

कुछ समय पश्चात् जब महंत जी ने अपना भाषण समाप्त किया, तब रन्जन को भी बोलने का समय दिया गया।

उद्घोषक ने घोषणा की—अब आपके सामने आ रहे हैं एक नवयुवक वक्ता रन्जन, जो कक्षा बारह के विद्यार्थी हैं।

फिर उद्घोषक पीछे जाकर बैठ गया।

रन्जन मंच पर खड़ा हुआ और बोलना शुरू किया। आदरणीय अध्यक्ष महोदय एवं साथियो, आपने धर्मपरिवर्तन के विषय में सुना ही होगा, जो

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

कल दक्षिण भारत के गाँव में हुआ। उसी के विषय में हमें आप लोगों से कुछ कहना है।

यदि इस बात पर विचार किया जाये कि अपने हिन्दू भाइयों ने धर्म-परिवर्तन क्यों किया ? तो इसके तीन कारण मिलते हैं। प्रथम तो यह कि हम उच्चवर्गीय हिन्दू उनको नीच मानकर उन्हें अपमानित करते हैं। दूसरा कारण है गरीबी और तीसरा कारण है अशिक्षा।

यदि हमें हिन्दू धर्म और हिन्दू समाज को मजबूत करना है, तो हमें इन तीनों कारणों को समाप्त करना होगा। इन्हें समाप्त करने के लिए हमें ऊँच-नीच का भेदभाव मिटा देना होगा। हमें उन्हें भाई के समान मानना होगा। मानना क्या होगा, वे सत्यता में हमारे भाई हैं ही।

इस भारत भूमि को हम भारत माता भी कहते हैं। वे जिन्हें ऊँचा कहा जाता है तथा वे जिन्हें नीच कहा जाता, है दोनों इस भारत माता की गोद में जन्म लेते हैं और बड़े होते हैं। जिस प्रकार दो भाई एक माता की गोद में पलकर बड़े होते हैं, उसी प्रकार ऊँचे और नीच दोनों इस धरती पर पलकर बड़े होते हैं। तो इस कारण से हम दोनों भाई-भाई हैं। ऊँचे और नीच नहीं।

दूसरी बात रही गरीबी।

ये ईसाई गरीबों को पैसे का लालच देकर धर्मपरिवर्तन कराते हैं। इस गरीबी को मिटाने के लिए हम जितने धनवान् हिन्दू हैं, उन्हें चाहिए कि अपने धन द्वारा कोई उद्योग या कारखाना आदि खोलकर गरीब हिन्दुओं को कार्य दें, जिससे उनकी गरीबी दूर हो सके और हिन्दू सुखपूर्वक रहें।

तीसरी बात रही अशिक्षा। यह आज भी ग्रामीण हिन्दुओं में बड़ी भयंकरता से फैली है। इस अशिक्षा के कारण वे कुछ सोच नहीं पाते कि किस कार्य में हमें लाभ है और किस कार्य में हानि।

उन्हें जिस तरह कोई मोड़ देता है उसी तरह वे मुड़ जाते हैं।

मुझे अपने गाँव की एक घटना याद आ रही है। दो सगे भाई थे। उनके पिताजी के पास लगभग ६० बीघे जमीन थी। कामचलाऊ टूटा-फूटा मकान भी था। पिता जी की मृत्यु हो चुकी थी। दोनों अपनी पत्नी और बच्चों के साथ आराम से जिन्दगी गुजार रहे थे। पिताजी के मृत्यु के कुछ दिन पश्चात् दोनों भाइयों ने बँटवारा कर लिया था।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

बड़े भाई साहब मारपीट करने में छोटे भाई साहब की अपेक्षा मजबूत पड़ते थे। गाँव के दो चार बदमाशों का भी साथ था। छोटा भाई सीधा-सादा आदमी था।

गाँव के प्रधान जी को जलन होने लगी थी। दोनों को प्रेम से रहते हुए देख कर प्रधान जी ने दोनों भाइयों में झगड़ा कराने की सोची।

प्रधान जी दूसरे दिन बड़े भाई से मिले। बोले—भाई, तुम्हारे पास इतना पैसा है और रहने के लिए मकान तक नहीं है। मकान बनवा डालो।

बड़े भाई साहब उत्तर में बोले हाँ प्रधान, सोच तो रहे हैं लेकिन कोई सहयोग देने वाला नहीं है, क्या करें। भय्या भी परदेश चले गये।

प्रधान जी बोले हम लोग सहयोग क्यों नहीं देंगे? बनवाना शुरू तो करो। बड़े भाई साहब ने उसी दिन गाँव में मजदूर खोजा। सुबह पंडित को बुलवाया और शुभ मुहूर्त में मन्त्र जाप कराकर नींव डलवाना शुरू किया।

बड़े भाई साहब अपने हिस्से में कुछ फुट ज्यादा छोटे भाई की जमीन में घर बनवाने लगे थे। जब मकान बन कर खड़ा हो गया तब छोटा भाई परदेश से लौट आया।

छोटे भाई ने अपना हिस्सा कुछ कम देखा तो पंचायत बैठायी। पंचायत भी इस बात को न तय कर पाई कि किसके हिस्से में ज्यादा है और किसके हिस्से में कम।

फिर छोटे भाई ने गाँव के प्रधान जी से सलाह ली।

प्रधान जी ने कहा—तुम्हें कम हिस्सा मिला है। तुम मुकद्दमा दायर करो। वे पंचायत से नहीं मान रहे हैं।

छोटे भाई ने उस जमीन के लिए मुकद्दमा दायर किया।

उस जमीन के लिए दोनों भाइयों ने तीन-तीन हजार रुपया मुकद्दमे में खर्च किया। तब फैसला हुआ। दुश्मनी अलग से हुई।

मुकद्दमे के इस परिणाम को यदि छोटे भाई पहले ही सोच लेते तो शायद यह दुश्मनी न होती, लेकिन उन में यह सोचने की क्षमता न थी।

यह ग्रामीण अशिक्षा का परिणाम था। इसी प्रकार अशिक्षित ग्रामीण धर्म-अधर्म के विषय में भी नहीं सोच पाते, जिसके फलस्वरूप वे धर्मपरिवर्तन करते हैं।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

हमें यदि धर्मपरिवर्तन को रोकना हो तो इन तीनों कारणों को समाप्त करना होगा। बस, मैं आप लोगों से इतना ही कहना चाहूंगा और आप लोगों से प्रार्थना करूंगा कि आप लोग इन तीनों कारणों को समाप्त करके हिन्दू धर्म को मजबूत बनायें।

जय भारत

इसके बाद रंजन मंच से नीचे आ गया और तालियों की जोरदार गड़-गड़ाहट हुई।

० ० ०

दूसरे दिन रन्जन और नीति विद्यालय में मिले। दोनों में नमस्कार हुआ। फिर नीति ने पूछा भय्या, कल लड़ाई में चोट तो नहीं लगी थी ?

रन्जन बोला— बहिन, आप को बहुत-बहुत धन्यवाद। यदि आप कल न होतीं तो वे मुझे मार देते, लेकिन कृपा आपकी कि आपने उन लोगों को मुझ तक पहुंचने न दिया। फिर दोनों कक्षा के अन्दर चले गये।

० ० ०

आज रन्जन का घर सजा था, क्योंकि आज रन्जन की बहिन का विवाह था।

रन्जन ने विवाह में अपने मुख्य-मुख्य सहपाठियों को निमन्त्रण दिया था।

रन्जन घर के द्वार पर खड़ा मेहमानों का स्वागत कर रहा था।

नीति के हाथ में भेंट करने की वस्तु थी। वह रन्जन के सामने खड़ी होकर बोली—भय्या, नमस्ते। रन्जन ने दोनों हाथ जोड़ कर उत्तर दिया—नमस्ते बहन।

फिर नीति बोली—भय्या, आपने मुझे निमन्त्रण नहीं दिया था, लेकिन मैं चली आयी।

रन्जन बोला—आने के लिए आपको बहुत धन्यवाद। आओ चलें, माता जी के पास।

आगे-आगे रन्जन और पीछे-पीछे नीति घर में प्रवेश करने लगे।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

प्रवेश करते समय नीति ने पूछा—भय्या आपने मुझे क्यों नहीं निमन्त्रित किया ?

रन्जन ने उत्तर दिया—बहन, इसका कारण बहुत कुछ है। बाद में बताऊंगा, क्योंकि इस समय मैं व्यस्त हूं।

इसके पश्चात रन्जन ने नीति का परिचय अपनी माता जी से कराया।

नीति ने रन्जन की माता जी के चरण स्पर्श किये।

रन्जन फिर बाहर चला आया और अन्य कार्यों में व्यस्त हो गया।

कुछ समय पश्चात् जब रन्जन एक महिला आगन्तुक को अन्दर पहुंचाने के लिए पुनः अन्दर आया तो नीति ने कहा—भय्या, अब मैं घर चलूंगी।

नीति ने उपहार का सामान रन्जन की माता जी को दिया और चरण स्पर्श करके प्रणाम किया। फिर रन्जन के साथ बाहर आयी और नमस्ते करके चली गई।

रन्जन फिर अन्य कार्यों में व्यस्त हो गया।

० ० ०

आज विद्यालय में रन्जन दस मिनट पूर्व ही पहुँच गया। कक्षा में प्रवेश किया तो देखा कि अभी केवल नीति ही आयी थी।

नीति रन्जन को देखकर बोली—नमस्ते भय्या, रंजन बोला—नमस्ते बहन।

इसके पश्चात् नीति ने पूछा—कहो विवाह में सब ठीक रहा ?

रन्जन ने उत्तर दिया—सब ठीक ही रहा। इसके पश्चात् नीति ने पूछा—यह बताइये कि आपने मुझे निमन्त्रित क्यों नहीं किया ? रंजन ने उत्तर दिया—बहन तुम नहीं जानती हो कि आज का समाज कैसा है ? समाज के लोग किसी पर भी गलत दोषारोपण कर सकते हैं। उसी प्रकार हम पर भी।

हमारा-तुम्हारा सम्बन्ध भाई-बहन का है, लेकिन लोग इसके विपरीत समझकर दोषारोपण कर सकते हैं।

इस दोषारोपण के डर से हमने तुम्हें निमन्त्रित नहीं किया और कोई बात नहीं थी।

इसके पश्चात् नीति बोली— आपके घर जाकर मैंने गलत कार्य किया।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

रन्जन बोला—नहीं बहन, आपने कोई गलत कार्य नहीं किया। आपने सब कार्य ठीक किया। गलत कार्य किया मैंने जो आपको निमन्त्रण न दिया। इसके लिए मुझे बहुत दुःख है।

नीति बोली—सब ठीक ही हुआ भय्या, आपने भी ठीक ही सोचा था।

इतने में प्रार्थना की घंटी बजी। दोनों प्रार्थना स्थल की ओर चल दिये।

रन्जन और नीति कक्षा में बैठे बातें कर रहे थे। पढ़ाई का यह वर्ष लगभग बीत चुका था, और कुछ ही दिनों के बाद विद्यालय बन्द होने वाला था। रन्जन और नीति बैठे विचार कर रहे थे कि गर्मी की छुट्टी कैसे बितायी जाए।

नीति ने रन्जन से प्रश्न किया—भय्या, आप छुट्टियों में कहां जायेंगे ?

रन्जन ने उत्तर दिया—बहन, मैं अपने गाँव जाऊँगा।

नीति बोली—गाँवों में तो ज्यादा लोग अशिक्षित होते हैं।

रन्जन बोला—हाँ बहन, ठीक ही कह रही हो।

नीति बोली—उन लोगों को देश और समाज के विषय में कुछ बताओगे ?

रन्जन बोला—हां बहन, मन कर रहा है कि यह छुट्टी का समय अशिक्षितों के बीच रहकर कुछ शिक्षा देते, कुछ सेवा करते और धर्म ज्ञान कराते हुए बिताऊँ।

इसके बाद नीति बोली—यह बहुत अच्छा है भय्या। यदि देश में आप जैसे हजार लोग हो जायें तो शायद देश सुधर जाये। आज इस भारत को आप जैसे लोगों की आवश्यकता है।

फिर रन्जन ने प्रश्न किया—बहन, यह बताओ कि तुम यह अवकाश कैसे बिताओगी ?

नीति ने उत्तर दिया भय्या, यह अवकाश शायद पत्रिकाओं को पढ़ते, सिनेमा देखते और रेडियो सुनते ही बीत जाये। लेकिन किसी की सेवा नहीं करने को मिलेगी। सेवा करना तो जैसे भाग्य में ही नहीं लिखा है। फिर कुछ समय तक दोनों चुप रहे। उसके पश्चात् नीति ने प्रश्न किया—भय्या यह बताओ कि आप भविष्य में क्या बनना पसंद करेंगे ?

रन्जन ने उत्तर दिया—बहिन, यह मानव शरीर बहुत भाग्य से मिला है।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

इस लिए कामना यह है कि यह जीवन इस प्रकार बिताऊं इस प्रकार का कार्य करूं कि जिससे मृत्यु के उपरान्त भी लोग मुझे याद करें। यह जीवन इस समाज की सेवा में समाप्त हो।

जिस भूमि पर जन्म लिया है, जिस भूमि से उत्पन्न वस्तुओं का उपभोग कर रहे हैं उसी के लिए यह जीवन समर्पित कर दूं। इसी बात को जीवन का उद्देश्य मान कर कार्य कर रहा हूं। मेरे विचार में भारत माता के प्रत्येक पुत्र का यह कर्त्तव्य होना चाहिए।

इतने में गुरु जी ने कक्षा में प्रवेश किया। नीति और रन्जन की बातों की शृंखला टूटी और गुरु जी ने पढ़ाना शुरू किया।

रन्जन ने गाँव में प्रवेश किया। सामने ही गिरजाघर देखा जिस पर क्रांसे का निशान बना था। रन्जन मन में विचार करने लगा, ये ईसाई के बच्चे यहां पर अपना जाल फैलाने पहुंच गये। इन्हें यहां से निकालना चाहिए।

दूसरे दिन रन्जन ने अपनी ही तरह के गाँव के कई नवयुवकों को एकत्रित किया और वे ईसाइयों को गाँव से निकालने की योजना बनाने लगे।

अगले दिनों में ईसाइयों के नेताआ ने वाले थे, जो ईसाई मत के विषय में लोगों को बताते और धर्मपरिवर्तन करते।

यह समाचार रंजन को विदित हुआ। रंजन ईसाइयों की सभा को भंग करने के विषय में विचार करने लगा।

रंजन सभी के बीच में बैठा और उसने बोलना शुरू किया—आप लोग जानते ही होंगे कि आने वाले दिनों में अपने गांव में ईसाईयों की एक विशाल सभा होगी जिसमें ईसाई ग्रामवासियों को लालच देकर या अपनी बातों में फंसा कर उनसे धर्मपरिवर्तन करा लगे।

आज देश के कोने-कोने में इनका जाल फैला हुआ है। ये हम लोगों को पुनः गुलाम बनाने का स्वप्न देख रहे हैं।

यदि हमें इनकी गुलामी से बचना है तो इसके लिए हम हिन्दुओं द्वारा इनका विरोध आवश्यक है और इसी विरोध अभियान को चलाने के लिए हम लोग यहाँ पर एकत्रित हुए हैं।

इनके विरोध के लिए हमारी योजना होनी चाहिए इनके धर्म-परिवर्तन कराने वाली चालों का भंडाफोड़ करना तथा प्रत्येक व्यक्ति को

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

इनके मनसूबों से परिचित कराना।

तो कल ही एक बड़ी सभा हो जाये जिससे ईसाइयों के मनसूबों पर पानी फिर जाए।

क्यों भाइयो, ठीक रहेगा ?

सभी ने हां में आवाज दो। दिन के दो बजे सभा करने का समय निश्चित हुआ और फिर सभा विसर्जित कर दी गई।

• ० ०

दूसरे दिन।

पेड़ के नीचे गांव के बाल-युवक-वृद्ध सभी एकत्रित हुए।

रंजन सबके सामने मंच पर खड़ा होकर बोलने लगा।

आदरणीय वृद्धजन एवं युवक साथियो, सर्वप्रथम तो आप लोग यह जानना चाहेंगे कि आप लोग यहां क्यों एकत्रित हुए हैं।

हमने आप लोगों को एकत्रित किया है ईसाइयों के रहस्यमय कार्य बताने के लिए।

हम लोग हिन्दू हैं। भारत हिन्दुओं का राष्ट्र है। हम हिन्दुओं का एक अलग धर्म है, अलग संस्कृति है जो विश्व में सबसे श्रेष्ठ है। ये हमारे धम को, हमारी संस्कृति को मिटाना चाहते हैं।

हमारे पूर्वज हिन्दू धर्म, हिन्दू संस्कृति को मानते आये हैं, इसलिए हमें हिन्दू धर्म, हिन्दू संस्कृति को मानना चाहिए। ये ईसाई हमें गुलाम बनाना चाहते हैं। हमारे वृद्धजनों ने अंग्रेजों का जमाना देखा होगा, जो बाहर से व्यापार करने आये और हमारे ऊपर शासन करने लगे थे।

उनकी भी एक राजनीति थी। जिस प्रकार अंग्रेजों ने हमें गुलाम बनाया था, उसी प्रकार ये ईसाई इस धर्मपरिवर्तन की चाल द्वारा हमें गुलाम बनाना चाहते हैं।

ये ईसाई हमारा धर्म बदलेंगे। फिर हमारे धन पर अधिकार करने का प्रयास करेंगे। प्रयास करके हमारे धन पर अधिकार कर लेंगे और उसके बाद हमें गुलाम बना लेंगे।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

भाइयो, यदि अपने को, अपने धर्म को, अपने समाज को, भारत देश को स्वतंत्र रखना चाहते हो तो धर्मपरिवर्तन न करो।

अपना हिन्दू धर्म विश्व का श्रेष्ठ धर्म है। इस की रक्षा कीजिए।

आने वाले दिनों में गाँव में इनकी सभा होने वाली है। उस सभा का हम विरोध करें। हम उस सभा में न जायें।

मैं आप लोगों से इतना ही कहना चाहूंगा तथा यह प्रार्थना करूंगा कि धर्मपरिवर्तन न करें। जय भारत।

इतना कहकर रंजन मंच से नीचे उतर आया और सभा में आए हुए अन्य लोगों का भाषण हुआ। फिर सभा विसर्जित कर दी गई।

० ० ०

रंजन के मित्र मोहन ने आकर बताया—कल गाँव की हरिजन बस्ती में कुछ ईसाई आये थे और उन्होंने पांच लोगों को धर्मपरिवर्तन के लिए तैयार कर लिया है।

रंजन ने मोहन से पूछा—किसे-किसे ?

मोहन ने उत्तर दिया—बुलई, शुकई, बुद्धई, भगेलू और जयराम को।

रंजन ने प्रश्न किया—इस समय ये लोग कहां होंगे ?

सड़क के किनारे वाली बगिया में गेहूं मड़ रहे होंगे। मोहन ने उत्तर दिया।

अच्छा रुको। चल रहे हैं। पूछें कि क्यों धर्मपरिवर्तन कर रहे हैं ?

रंजन घर गया और टेप रिकार्ड उठा लाया और मोहन के साथ बगिया की ओर चल दिया।

टेप रिकार्डर में गाना बज रहा था।

जय जय मेरे देश महान्
जय जय मेरे देश महान्।
सदियों तक झेले हैं जिसने
दुनिया के आंधी-तूफान
जय जय मेरे देश महान्।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

मोहन और रंजन दोनों खलिहान में पहुंचे। भगेलू चारपाई पर बैठा रस्सी बट रहा था। उसकी उम्र पैंतास वर्ष की रही होगी। कुर्ता और धोती पहने था।

रंजन जब चारपाई के पास पहुंचा तो भगेलू बोला—आओ भय्या, बैठो, क्या हाल-चाल है ?

रंजन बोला, काका—सब ठीक है। अपनी सुनाओ।

भगेलू बोला—भय्या, सब दया है आप लोगन की।

रंजन और मोहन दोनों चारपाई के खाली स्थान पर बैठ गये।

चारपाई पर बैठने के बाद रंजन बोला—"काका, हम तौ एक बहुत बेकार बात सुने हैं।"

भगेलू बोला—कहो भय्या, का गलती भवा।

रंजन बोला—हमने सुना है कि आप ईसाई होने जा रहे हैं ?

भगेलू बोला—हां भय्या, तौ का बुरा है ?

रंजन ने पूछा—यह बताओ कि हिन्दू हो तो क्या बुरा है ? हिन्दू से ईसाई क्यों होने जा रहे हो ?

भगेलू बोला—भय्या, बहुत कुछ बुरा है ?

रंजन बोला—जो बुरा है, वह हमें बताओ। हम हूं जाना चाहत हन का बुरा है ?

भगेलू बोला—भय्या, हम हरिजन होई, हमार हिन्दू समाज कोई इज्जत नाहीं करत, हम मन्दिर मा भगवान् कै दर्शन कर नाही जाय पाइत, लाला भय्या, नाहीं अब ी जब सूखा पस रह तौ पानी भरय से रोक दीहिन्ह, हम समाज से अलग हयन तौ हम ईसाई काहे न होई जाई ?

रंजन बोला —काका, बात तौ आप सब सही कहत हौ, लेकिन अभी आप ईसाईन के सार चाल से परिचित नहीं हौ। ये ईसाई भारत के निवासी नाहीं हैं। ये बाहर से आये हैं। ये भारत का गुलाम बनावा चाहत हैं।

भारत जो अपना देश है, उसमें ये अपने धर्म के मानने वालों की संख्या बढ़ाकर टुकड़ों में बांटना चाहते हैं। ये अपने समान आपको नहीं बनायेंगे। ये धर्म बदलवाने के लिए ही इस प्रकार के ढोंग रच रहे हैं।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

आप शायद न जानते होइहौ कि ये अपने देश में एक-दूसरे की हत्या करने पर तु रहते हैं।

सन्त रैदास का नाम आप सुनेऊ होई।

भगेलू बोले —हां भय्या, हमरे जाति कै बहुत पहुंचा सन्त रहे।

रंजन बोला—तो जब आपके जाति में इतने पहुंचे संत रहे तो आप भी हिन्दू धर्म मा रहौ।

काका, अच्छा यह बताओ कि धर्मपरिवर्तन के बाद आप रैदास का अपना पूर्वज कह सकत हौ ?

नाहीं भय्या—भगेलू बोला।

फिर कुछ देर चुप रह कर भगेलू बोला—हां भय्या, तो धर्म न बदली।

रंजन बोला—काका मेरा कहना तो यही होगा कि आप धर्म न बदलें।

इतने में बगल की सड़क से एक कार गुजरी। रंजन कार को देखने लगा। पीछे एक लड़की बैठी थी। आगे एक लड़का कार को ड्राइव कर रहा था।

रंजन को लड़की की शक्ल नीति से मिलती-जुलती लगी।

कार में बैठी लड़की ने ड्राइवर से कहा—रोको, रोको। कार रुक गई।

नीति जब कार से बाहर आयी तो रंजन ने देखा कि वह नीति ही थी। रंजन का सन्देह सही था।

फिर दोनों में नमस्कार हुआ।

नीति चारपाई पर रंजन के बगल में बैठ गई। भगेलू चारपाई पर से उठ कर जमीन पर बैठकर रस्सी बटने लगा।

रंजन ने मोहन से कहा—घर चले जाओ और माता जी को बता दो कि कुछ मेहमान आए हैं। जल्दी से भोजन तैयार करायें। मोहन चला गया।

नीति की बगल में बैठा था नीति का भाई जो कार चला रहा था।

तीनों में बातें शुरू हुईं। सर्वप्रथम रंजन ने पूछा—कहो बहन, इधर कैसे आना हुआ ?

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

नीति ने उत्तर दिया—जा रहे हैं मामाजी के यहाँ।

और फिर नीति ने प्रश्न किया—घर किस ओर है तुम्हारा ?

रंजन ने पूर्व की ओर हाथ उठा कर कहा—यह जो घर दिखाई पड़ रहा है उसी के पीछे।

नीति ने पूछा—तो यहां बैठे क्या कर रहे हो ?

रंजन ने भगेलू की ओर संकेत करके कहा—सुना था कि भगेलू काका ईसाई होने जा रहे हैं तो वही बात करने आया था।

नीति ने पूछा—मान गये या नहीं ?

रंजन ने उत्तर दिया—मान गये।

फिर नीति बोली—क्यों काका, आप धर्म बदलने जा रहे थे ?

भगेलू बोले—हां बच्चा, बदलने का विचार तो था, लेकिन अब नहीं बदलूंगा।

नीति बोली—काका, यदि मैं एक कहानी सुनाऊं तो सुनोगे ?

भगेलू बोले—हां बच्चा सुनब काहे ना।

बड़ा भाग्य जो आप लोगन के दर्शन हुआ।

नीति बोली—गुरु गोविन्दसिंह का नाम सुना है काका ?

भगेलू बोला—हां बच्चा, सुना है। बादशाह औरंगजेब से उनकी लड़ाई हुई थी।

नीति बोली—गुरु गोविन्द जो बादशाह औरंगजेब से लड़े थे उसी लड़ाई की एक घटना है। बादशाह ने गुरु जी को मुसलमान बनाना चाहा था। मुसलमान बनाने के लिए गुरु जी के दो पुत्रों को कैद कर लिया था।

भगेलू रस्सी बटना छोड़ कर कहानी सुनने में मग्न हो गया।

नीति कहानी आगे बढ़ाती गई। कैद करके उन बच्चों को दीवारों में चुनाने लगा। एक ओर छोटे भाई को और दूसरी ओर बड़े भाई को। चुनवाते-चुनवाते छोटे भाई की चुनाई बड़े भाई से कुछ ज्यादा हो गई।

बड़े भाई ने देखा तो उसकी आंखों में पानी भर आया।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

छोटा भाई बड़े भाई की आंखों में पानी देखकर बोला—भय्या, आपकी आंखों में ये आंसू कैसे हैं ? आप इतनी-सी सजा से घबरा गये ?

बड़ा भाई बोला—भय्या, ये सजा से घबराने के आंसू नहीं हैं, बल्कि ये आंसू इस बात के हैं कि माता के उदर से तुमसे पहले मैंने जन्म लिया ; तुमसे पहले मुझे देश के काम आना चाहिए। लेकिन मैं तुमसे पीछे हूं।

अपने पुत्रों को इस प्रकार से व्यथित देखकर भी गुरु गोविन्द सिंह ने धर्म नहीं बदला था और आप लोग इतनी जल्दी धर्म बदलने को तैयार हो जाते हैं।

काका, इतनी जल्दी तो घबराया न करो।

भगेलू बोले—अच्छा बच्चा, अब आपन धर्म न बदलब और दूसरे को भी न बदलय देब।

रंजन ने नीति से कहा—बहुत अच्छा हो गया। चलिए, अब घर चलिए।

० ० ०

स्थान : लाला रामचन्द्र का घर।

गांव के सभी हिन्दू परिवारों के मुखिया मण्डल में बैठे थे। विचार-विमर्श चल रहा था।

रंजन बोलने लगा—हम अपने को हिन्दू कहते हैं। ये हरिजन भी हम हिन्दुओं के अंश हैं, लेकिन ये आज हमसे अलग होने जा रहे हैं। अर्थात् धर्म-परिवर्तन करने जा रहे हैं। यदि इस विषय पर विचार किया जाय कि ये क्यों हमसे अलग होने जा रहे हैं, तो सारा दोष हम उच्चवर्गीय हिन्दुओं का है। हमने इनके साथ भाईचारे का बर्ताव न किया। जातिभेद किया। इन्हें अछूत माना, जिससे हममें एकता न आ सकी और उसी के फलस्वरूप ये आज हमसे अलग हो रहे हैं। तो हमें इनको अलग नहीं होने देना है, क्योंकि ये अपने हिन्दू धर्म के अंग हैं।

हमें उस दिशा में कदम रखना है, जिससे ये अपने से अलग न होने पावें।

क्यों मोहन, क्या प्रयास करना चाहिए जिससे ये अलग न होने पावें।

मोहन बोला—ऊंच-नीच के भेद और छुआछूत को मिटाना चाहिए।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

फिर रंजन बोला—क्यों भाई, सभी सहमत हैं इस बात से ?

सभी ओर से आवाज आई—हां-हां, ठीक है ।

एक दूसरा नवयुवक बोला—आने वाले दिनों में हमारे गांव के कुछ हरिजन ईसाई होने जा रहे हैं । इसलिए शीघ्र ही सहभोज का आयोजन हो जिसमें हम हरिजनों को सम्मान एवं सुरक्षा का आश्वासन दें, जिससे वे ईसाई न होने पावें ।

रंजन बोला—क्यों भाई, सभी सहमत हैं इस बात से ?

आवाज आई हां-हां...

तो परसों बाबा की कुटी पर भोज हो जिसमें सभी साथ-साथ बैठ कर भोजन करें, रंजन बोला ।

फिर आवाज़ आई —हां-हां, ठीक है । सभा विसर्जित हुई ।

o o o

बाबा की कुटी पर ।

सभी एक पंडाल के नीचे एकत्रित थे । रंजन सबके सामने आया और उसने बोलना शुरू किया ।

हम आज एकत्रित हुए हैं सहभोज के लिए । आज तक जो हरिजन अपने को हिन्दुओं से अलग मानते थे, वे समझें कि हम अलग नहीं हैं । बल्कि हम हिन्दू धर्म के एक अंग हैं । हम भारत माता की संतान हिन्दू एक दूसरे के भाई के समान हैं ।

हम लोग आज से व्रत लें कि हम सदैव संसार के प्रत्येक हिन्दू को अपने भाई के समान मानगे ।

हिन्दू समाज पर आने वाली आपत्ति हम सब पर आपत्ति है ।

आज से हम अपने मन से छुआछूत की भावना को निकाल दें । जय भारत ।

फिर सभी लोग भोजन करने बाग में पहुंच गये ।

सबने साथ-साथ भोजन किया और घर वापस आ गये ।

o o o

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

अगले दिन ईसाइयों की सभा होने वाली थी। गांव की हरिजन बस्ती में चार ईसाई आ गए और उन्होंने प्रचार कर दिया कि जिसे धर्म बदलना है, वह आकर नाम लिखा दे।

कोई नहीं आया।

पाँच मिनट बीते कोई नहीं आया। दस मिनट बीते कोई नहीं आया। इसी प्रकार कई घंटे बीत गए कोई नाम लिखाने नहीं आया।

सभी ईसाई निराश वापस आए और दूसरे दिन की सभा रद्द कर दी गई।

° ° °

मिशनरी के एक कमरे में पादरी के बगल वाली कुर्सी पर इलाके का नामी हत्यारा गंगेश बैठा था। सामने मेज पर दो खाली गिलास और एक बोतल व्हिस्की रखी थी। गंगेश को लोग गंगू-गंगू कहा करते थे।

गंगू ने पादरी से प्रश्न किया—कहो, मुझे किस काम के लिए बुलाया गया है ?

पादरी ने बोतल खोली और शराब गिलास में उंडेलते हुए बोला—हमने तुम्हें इसलिए बुलाया है, क्योंकि एक आदमी को साफ करना है। इसके लिए जो चाहो, वह मांग सकते हो।

गंगू बोला—पहले आदमी की पहचान कराओ। पादरी दोनों गिलास भर चुका था। उसने एक गिलास अपने हाथ में उठाया और दूसरा गंगू ने। फिर दोनों ने गिलास आपस में टकराए और पीना शुरू किया।

पीकर गंगू जब नशे में आ गया तो पादरी बोला—अब उसका नाम बता दूं, जिसे साफ करना है।

गंगू बोला—हां।

जिसे साफ करना है वह है रंजन जो अपने को गांव के हिन्दुओं का सबसे बड़ा नेता समझता है—पादरी बोला।

गंगू बोला—अच्छा यह बताओ कि क्या कारण है जो तुम उसे साफ करवाना चाहते हो ?

पादरी बोला—वह जद से आया है, हमारे मिशनरी की प्रत्येक योजना

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

विफल करता जा रहा है। अपने हिन्दू समाज को बचाता जा रहा है। हम समाज को ईसाई बनाना चाहते हैं।

गंगू नशे में बोला—इसका मतलब कि तुम हमसे देशद्रोह का कार्य कराना चाहते हो ?

मैं वह भारतीय नहीं जो रुपये के लिए अपने समाज को गुलाम बनायें।

मैं हत्यारा अवश्य हूं लेकिन देशद्रोही और समाजद्रोही हत्यारा नहीं।

सावधान, यदि अब तुमने ऐसी बात मुंह से निकाली तो रंजन के स्थान पर मैं शायद तुम्हें ही साफ कर दूं।

फिर गंगू खड़ा हो गया और बोला—मैं जा रहा हूं लेकिन यह बताये देता हूं कि यदि तुमने फिर ऐसी कोई योजना बनायी तो ये तुम्हारे मिशनरी उड़ा दिये जायेंगे। फिर नशे में लड़खड़ाते पैरों से वह चल पड़ा अपने घर की ओर।

o o o

अवकाश समाप्त हो चुका था। आज रंजन अध्ययन करने हेतु शहर जा रहा था।

मोहन रंजन के साथ रिक्शे पर सवार बस अड्डे की ओर आ रहा था। रिक्शा द्रुत गति से स्टेशन की ओर बढ़ता जा रहा था।

रंजन मोहन से कह रहा था—मोहन मैं तो जा रहा हूं। देखो अब तुम पर सारा उत्तरदायित्व है। ये ईसाई गांव में किसी प्रकार की समस्या न खड़ी करने पायें।

मोहन बोला—हां रंजन, अब तुम्हारे स्थान पर मैं कार्य करूंगा और इन ईसाइयों को धर्मपरिवर्तन में किसी भी प्रकार से सफल नहीं होने दूंगा। रिक्शा बस अड्डे पर पहुंच चुका था। रंजन ने रिक्शे पर से सामान उतारा और बस पर रखा और स्वयं भी जा बैठा। बस चल पड़ी, रंजन ने खिड़की से मुंह निकाल कर मोहन को नमस्कार किया। फिर बस तेजी से सड़क पर भागने लगी।

मोहन विचारों में खोया लौट रहा था गांव की ओर।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

—प्रो० धर्मवीर
अध्यक्ष, संस्कृत विभाग, डी. ए.-वी. कालेज, अजमेर

यज्ञीय जीवन की आवश्यकता

विद्वानों का विचार है कि नास्तिक व्यक्ति जीवन के प्रारम्भ में अतिशय उत्साहयुक्त प्रतीत होता है, परन्तु आयु की वृद्धि के साथ-साथ वह जीवन में निराशा और उत्साहहीनता की ओर बढ़ने लगता है। अन्त में उसे जीवन कठिन लगता है और वह आत्मघात करने की सोचता है। कभी-कभी ऐसा कर भी बैठता है। यदि इस निराशा के समय उसमें ईश्वर के प्रति विश्वास जाग्रत हो जाये तो उससे नवजीवन का संचार हो जाता है। इस प्रकार आशावान् हो सकना ही जीवन का आधार है, क्योंकि मनुष्य अल्पज्ञ और अल्पशक्ति वाला प्राणी है। अपूर्णता-अभाव से उत्पन्न निराशा दुःख का उत्पादक कारण है। इस बात की सत्यता की ओर ध्यान आकर्षित करते हुए उपनिषद्कार ऋषि कहता है "भूमा वै सुखं नाल्पे सुखमस्ति" जो स्वल्प है उसमें सुख देने का सामर्थ्य नहीं अतः अधिक के लिए,—पूर्णता के लिए प्रयत्न करना आवश्यक है। वह पूर्णता का प्रयत्न आस्तिक भावना के द्वारा ही सफल हो सकता है। इसके सिवाय कोई उपाय नहीं। ऐसा करना इस कारण आवश्यक है कि कोई भी अपूर्ण आधी अधूरी वस्तु और विचार पूर्णता का ज्ञान नहीं करा सकता। इसलिए पूर्ण का अवलम्बन ही मनुष्यों को पूर्णता अनुभव करा सकता है। मनुष्य की अवलम्बन खोजने की प्रवृत्ति उसे अपने अल्प को पूर्ण करने की इच्छा ही है, इसलिए प्रत्येक अल्प किसी का सहारा लेता है। आस्तिक का सहारा तो स्पष्ट है परन्तु नास्तिक भी किसी-न-किसी का आश्रय लेता है और आश्रय में पूर्णता की भावना करता है। इस आस्था का स्वीकृत आधार गुरु, सिद्ध, महापुरुष, नेता, स्मारक, पुस्तक कुछ भी क्यों न हो, होता अवश्य है, जिसके प्रति व्यक्ति समर्पित होता है। वह ऐसा करने के लिए बाध्य है। इसी कारण ईश्वर को सर्वशक्तिमान्, सर्वव्यापक, सर्वज्ञ आदि विशेषण दिये गए हैं। उस पूर्णता का आश्रय लेना—अवलम्बन स्वीकार करना अध्यात्म की ओर अग्रसर होने का मूल मंत्र है और इस संसार में सुख का आधार भी है। ईश्वर को श्रेष्ठ गुणों वाला स्वीकार करने पर मनुष्य में आस्तिक बुद्धि का उदय होता है। यही विचार यज्ञीय भावना का विकास करता है। यज्ञीय जीवन में व्यक्ति देवताओं को प्रभावित करता है और देवताओं की कृपा प्राप्त करता है और परमश्रेय—अन्तिम कल्याण को

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

प्राप्त करता है। "परस्परं भावयन्तः श्रेयः परमवाप्स्यथ" इस प्रकार स्वयं का एवं समाज का सर्व प्रकार का हित करने का नाम यज्ञ है। इस प्रक्रिया से मनुष्य के भौतिक, आध्यात्मिक, सामाजिक एवं व्यक्तिगत सभी उद्देश्य पूर्ण होते हैं। इस कारण वैदिक समाज व्यवस्था में पंचमहायज्ञों की परम्परा को दैनिक जीवन में अपनाने का विधान किया गया है। इस परम्परा के पालन करने से सभी कर्त्तव्यों का निर्वाह होकर सांस्कृतिक उपाय से पूर्णता की ओर अग्रसर होना सम्भव होता है। सबको साथ लेकर व्यक्ति पूर्ण का साक्षात्कार कर सकता है।

आज यज्ञ के नाम पर प्रचलित अनुचित एवं अर्थहीन परम्परायें उसमें कालक्रम से स्वतः आने वाली जीर्णशीर्णता का प्रतीक हैं। उनमें पर्याप्त समय से परिमार्जन करने का अवसर नहीं आया। इस आवश्यकता को अनुभव करते हुए वर्तमान युग में यज्ञ को कर्मकाण्ड की थोथी प्रक्रिया से ऊपर उठाकर उसे ज्ञान विज्ञान का स्थान बतलाते हुए स्वामी दयानन्द ने उसके आध्यात्मिक लक्ष्य की पुनः प्रतिष्ठा की। इस प्रकार मध्यकालीन परंपरा में जहाँ यज्ञ केवल कर्मकाण्ड है, जिसमें वर्णित जटिल विधियां सम्पादन कर सकना ही यज्ञ की सफलता है—उसका परम लक्ष्य है। इस प्रकार यज्ञ की प्रक्रिया से समय की धारा के साथ प्राप्त होने वाली मलिनता और उसके परिणामस्वरूप उत्पन्न अवैज्ञानिक बातों ने यज्ञ को तर्कहीन और सभ्य समाज के लिए अग्राह्य बना दिया था। उसकी उपयोगिता जटिल विधियों से आवृत होकर यज्ञ अरुचिकर बन गया था। ऐसे समय में स्वामी दयानन्द ने यज्ञ के मौलिक स्वरूप को उद्भावित करते हुए स्पष्ट रूप से प्रतिपादित किया कि यज्ञ शब्द का रूढ़ार्थ ही अग्निहोत्र है, परन्तु यथार्थ में पृथ्वी से लेकर परमात्मापर्यन्त समस्त पदार्थों के ज्ञान-विज्ञान की प्रक्रिया का नाम यज्ञ है। यौगिक अर्थ के विचार से इस बात का भली प्रकार बोध हो जाता है। इस प्रकार स्वामी जी ने यज्ञ की जटिलता को दूर करके कर्मकाण्ड की प्रक्रिया को साध्य कोटि से हटाकर उत्कृष्ट लक्ष्य के साधन को रूप में समाज के सम्मुख प्रस्तुत किया और इस यज्ञ को ही व्यक्तिगत एवं सामाजिक जीवन में सामंजस्य उत्पन्न करने का आधार बतलाया और कहा 'एते पंचमहायज्ञा मनुष्यैर्नित्यं कर्त्तव्याः, इन पांच महायज्ञों का मनुष्यों द्वारा प्रतिदिन निर्वाह किया जाना चाहिए। पांच यज्ञों में ब्रह्मयज्ञ—संध्या, देवयज्ञ—अग्निहोत्र, पितृयज्ञ, अतिथि यज्ञ, और बलिवैश्वदेव यज्ञ परिगणित हैं। प्रथम दो यज्ञ मनुष्य के व्यक्तिगत जीवन में आध्यात्मिक सुख और भौतिक उत्कर्ष को प्रदान करने वाले हैं तथा शेष तीन यज्ञों में से दो यज्ञों द्वारा पारिवारिक एवं सामाजिक

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

अनुष्ठान का सम्पादन किया जाता है तथा पांचवें महायज्ञ से प्राणिमात्र के कल्याण की भावना को व्यावहारिक रूप प्रदान किया जाता है। इस प्रकार प्रत्येक बुद्धिमान् मनुष्य के लिए ईश्वर को जानना, मानना और उसकी उपासना करना परम कर्तव्य है। ऐसा न करने वाला व्यक्ति कृतज्ञता आदि गुणों से रहित होकर कृतघ्नता आदि दोषों का भागी बनता है। ब्रह्मयज्ञ अर्थात् ईश्वर की स्तुति-प्रार्थना-उपासना करना इसलिए आवश्यक है, क्योंकि ऐसा करने से स्तुति से स्तुत्य के स्वरूप का कथन होकर तत् सदृश गुण कर्म स्वभाव की सिद्धि होती है। प्रार्थना से निरभिमानता और उत्साह की प्राप्ति होती है तथा उपासना से परब्रह्म की प्राप्ति और साक्षात्कार संभव है। इस प्रकार उपासना द्वारा आत्मिक बल की वृद्धि होकर कष्ट सहने का सामर्थ्य आ जाता है, जिससे पर्वत के समान कष्ट या दुःख आने पर भी मनुष्य विचलित नहीं होता। इस प्रकार का सामर्थ्य अन्य किसी भी उपाय से प्राप्त होना सभव नहीं। देवयज्ञ अर्थात् अग्निहोत्र प्रतिदिन प्रातः-सायं दोनों समय किये जाने का विधान है। इससे रोगनाशक सुगन्धित पदार्थों का होम मंत्र पाठ द्वारा करते हैं। मंत्रपाठ से वेदमन्त्रों का स्मरण, ज्ञान की रक्षा आदि प्रयोजन सिद्ध होना कहा गया है। इस वास्तविक अर्थ को न समझने के कारण यज्ञ में अनेक अनर्थ होते दिखाई देते हैं।

यज्ञीय भावना द्वारा व्यवहार करने से संसार का संतुलन बना रहता है। आज संतुलन का अभाव प्रत्येक क्षेत्र में देखने में आ रहा है, जिसके परिणाम-स्वरूप समाज के सम्मुख घोर संकट उपस्थित हो गया है। आज प्रकृति की दिव्य वस्तुओं का अविचारित उपयोग होने से सन्तुलन में न्यूनता आ रही है और अनेक समस्याओं का सामना करना पड़ रहा है। प्रमुख रूप से आध्यात्मिक जगत् में सन्तुलन के अभाव से भौतिक जगत् में जलवायु आदि प्रदूषण की समस्या प्रमुख रूप से हमारे सामने है। वायु, जल, देश और काल के प्रदूषण से प्राणिमात्र के जीवन को खतरा उत्पन्न हो गया है। इस का कारण यज्ञीय भावना का अभाव है। शास्त्रकार इसी को प्रज्ञापराध कहते हैं। प्रज्ञापराध कर्त्तव्य च्युति है। समाज में जब व्यक्ति सामाजिक दायित्वच्युत हो जाता है, व्यक्तिगत, संकुचित स्वार्थ ही जीवन का ध्येय बन जाते हैं, उससे उत्पन्न परिणामों को भोगने के लिए समाज बाध्य होता है। मनुष्य केवल अपने बारे में सोचता हुआ केवलाघ होता पाप का भक्षण करता है। विचारक का दृष्टिकोण है कि पाप भावना का मूल कारण आलस्य है और आलस्य का मूल अतिभोजन है। आचार्य चरक की मान्यता है कि मनुष्य अधिक भोजन करता है तो शरीर में भारीपन और स्थूलता से श्रम के प्रति अरुचि तथा श्रम के अभाव में आलस्य, आलस्य के परिणामस्वरूप संचय और संग्रह

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

करने की प्रवृत्ति का उदय होता है। इस तरह व्यक्ति वस्तुओं का संग्रह करता हुआ परिग्रही बन जाता है। परिग्रह से लोभ, लोभ से द्रोह और परिणामतः द्रोह से ग्रस्त व्यक्ति असत्य भाषण, असत्याचरण करता है। समाज में असामाजिक प्रवृत्तियों का जन्म होता है। व्यक्ति क्षुद्र स्वार्थों के लिए असंख्य लोगों की असीम हानि करने में संकोच नहीं करता। इस मानसिक प्रदूषण से भूमि, जल और वायु का प्रदूषण हो जाता है, जिससे संसार की अपार हानि होती है। इस हानि से बचने का उपाय यज्ञ है। प्रत्येक व्यक्ति में जबतक यज्ञीय भावनाओं का उदय नहीं हो जाता, तब तक संसार का उपकार नहीं हो सकता। यज्ञ से ही कल्याणकारी वायु बहती है, यज्ञ से तपने वाला सूर्य कल्याणकारी बनता है और यज्ञ से ही जीवनाधार पर्जन्य कल्याणकारी बनकर बरसता है। इसलिए कहा गया है कि 'यज्ञाद् भवति पर्जन्यः'। इस प्रकार एक समान्य-सी प्रतीत होने वाली प्रतीकात्मक प्रक्रिया में संसार में स्वयं सुखी होने और प्राणिमात्र को सुखी करने का उपाय निहित है। अतः इस प्रक्रिया को उसके वास्तविक स्वरूप में प्रचलित करने की आवश्यकता है। इस प्रक्रिया में विधियों का महत्त्व तो कर्म, सौकर्म और सामाजिक एकरूपता के लिए है। इस कारण देशकाल की परिस्थिति पर विचार करके विद्वान् लोग उसमें परिवर्तन और परिवर्धन कर सकते हैं। इसी भावना को लक्ष्य में रखकर स्वामी जी पंचमहायज्ञ विधि में लिखते हैं कि यद् यद् आवश्यकं युक्तिसिद्धं तत् कर्त्तव्यं नेतरत्—जो आवश्यक और युक्तिसिद्ध है वही करना योग्य है, अन्य नहीं। इस प्रकार मनुष्य का कल्याण यज्ञ से और यज्ञीय भावना से ही संभव है, अन्य किसी प्रकार नहीं।

व्यक्ति चाहिए

हमें कुछ ऐसे योग्य व्यक्ति चाहिए जो रिटायर्ड हों। कार्यालय का काम, एकाउन्ट व अन्य काम सँभाल सकें। निवास के अतिरिक्त उचित भोजनादि व्यय भी दे सकेंगे।

कृपया पूरे विवरण के साथ पत्र लिखें—

अध्यक्ष

दयानन्द संस्थान, नई दिल्ली-५

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

—आचार्य मित्रजीवन

पैगम्बर मुहम्मद की नजरों में भारत

पूर्व से आने वाली ठंडी हवाओं के स्पर्श से पैगम्बर मुहम्मद इतना प्रभावित हुआ कि उसने अपने अनुयायियों से कहा—'ऐ मुसलमानो, जानते हो, ये ठंडी-ठंडी हवायें कहां से आ रही हैं ? इस धरती पर एक स्वर्ग है, जिसका नाम भारतवर्ष है। ये सुखद स्पर्श वाली हवायें उसी भारतवर्ष से आ रही हैं। उसके स्पर्श से मेरे दिलो-दिमाग में ठंडक-सी पहुंचती है और मेरा मन शान्ति और आनन्द से आह्लादित हो जाता है। ऐ इस्लाम के मानने वालो ! मेरी एक तीव्र इच्छा है कि मैं इस जन्नत को हासिल करूँ। इसके लिए तुम्हें भारतवर्ष पर आक्रमण करना होगा और उसे जीतना होगा।

भारतवर्ष पर मुसलमानों के आक्रमण के पीछे पैगम्बर मुहम्मद की इस भावना का बहुत बड़ा हाथ है। इस कारण हर मुसलमान यही चाहता है कि किसी न किसी तरह हिन्दुस्तान को इस्लामी राष्ट्र बना दिया जाए। यदि इस कोशिश को समय रहते नाकामयाब न बनाया गया, तो वह दिन दूर नहीं, जब दिल्ली के लाल किले पर हरा परचम लहरायेगा। मैं हिन्दुस्तान में रहने वाले हर हिन्दू को आगाह कर देना चाहता हूं कि वे अपने धर्म की रक्षा के लिए अपने जीवन की आहुति देने हेतु कृतसंकल्प हो जायें। उन्हे अपने धर्म से प्रेम है, तो जिन्दगी से मोह छोड़ना पड़ेगा। त्याग की पवित्र भावना से ओतप्रोत होकर अपनी जीवन ज्योति को उस महान् ज्योति को समर्पित करना होगा। तभी धर्म और राष्ट्र की रक्षा हो सकेगी। मैं विश्वास के साथ कह सकता हूं कि इस महान् कार्य को आर्य समाज अवश्य पूरा कर सकेगा।

धर्म रक्षक साहित्य प्रकाशन के लिए

भूखे रहकर भी

१२५) एक रीम कागज के लिए भेजिए

काम न रुकने दीजिए

—राकेशरानी

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

—स्वर्गीय श्री मैथिलीशरण गुप्त

आर्यसमाज

आर्यसमाज !
आर्य भूमि का अरुणोदय-सा,
उठा उष्ण तू सज कर साज।
अन्धकार था चारों ओर,
देख लिया पर तूने चोर,
घर में शोर मचाया घोर।
सोते स्वजनों को धिक्कार
जगा दिया ठोकर तक मार।
कि हो प्राप्त भय का परिहार।
अलस, प्रमादी, अवसादी,
हम थे सोने के आदी,
जागा तू भैरववादी
लगे विवादी भी कुछ स्वर,
पर हम चौंक उठे सत्वर,
उतरा कुछ तो तन्द्रक ज्वर।
किया क्या तूने खण्डन-मात्र ?
स्वयं तू था मण्डन का पात्र,
गए गुरुकुल में पढ़ने छात्र।
हुई निःशुल्क शिक्षा,
बढ़े अब वह तितिक्षा।
हिन्दू—मानस—महाराष्ट्र, तू
धरे राष्ट्रभाषा की लाज।
आर्यसमाज !

* * *

आर्य समाज !
प्रभु की परम दया है तुम पर,
आ, आनन्द मना तू आज।
शोक न कर तू कर अभिमान
कर निज-वेद-विजय-रस पान,
किया वीर तूने बलिदान।
विधर्मियों से, घर की फूट,
करा रही थी अपनी लूट,
तू सतर्क हो उठा अटूट।
राम ने रखी तेरी रेख,
न मुंह फेरा तूने भय देख,
लिखा निज शोणित से यह लेख—
'कृणुध्वं विश्वमार्यम्'
जयति कृतबुद्धि कार्यम्
शुद्धि-वितान तले श्रद्धा का
दान किया तूने ऋषिराज !
आर्यसमाज !

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

—ब्रह्मचारी आर्यनरेश

वे युग-पुरुष कौन थे ?

वे 'युग-पुरुष कौन थे, जिन्होने आज से ११६ वर्ष पूर्व सर्वप्रथम निम्न-लिखित कार्य किये और पूरे विश्व को प्रभावित किया—

१. किसने सर्वप्रथम स्वदेशी वस्तुओं के प्रयोग का आन्दोलन चलाया तथा इसके साथ ही गरीबों के लिए नमक एवं जंगली लकड़ी से कर समाप्त करवाने व अल्प मूल्य पर न्याय की सुविधा दिलाने के लिए १८६८ में प्रयास किया।

२. देश की अखण्ड और स्वतन्त्रता के लिए हैदराबाद की रियासत को भारत में मिलाने के सफल प्रयास में भारत के इतिहास में जिन्दा जलाये जाने वाले माता गोदावरी एवं श्री कृष्णराव (ईटे),काशिनाथ (धारुर) गोविन्दराव (जानावाड़ी, कर्नाटक) आदि अमरशहीद किस स्वतन्त्रता सेनानी के शिष्य थे ?

३. (क) किसकी देशभक्ति की प्रेरणा से प्रभावित होकर अमर क्रान्तिकारी श्यामजी कृष्णवर्मा ने १९०५ में इंग्लैण्ड जाकर राष्ट्र को स्वतन्त्र करवाने के लिए इण्डिया हाउस की स्थापना की एवं वीर सावरकर, मदन लाल ढींगरा व हरदयाल एम. ए. को छात्रवृत्ति दी। वे तथा इसके साथ ही उसी युग-पुरुष से प्रभावित होकर लाला लाजपतराय, भगत सिंह, राम प्रसाद बिस्मिल, अश्फाक उल्ला खां, चन्द्र शेखर आजाद जैसे सैंकड़ों होनहार युवक देश की आजादी के लिए शहीद हुए और भारत आजाद हुआ।

(ख) अंग्रेज समझते थे कि अगर हम यहां के मूल निवासियों को इस भ्रम में डाल दें कि तुम इस देश के मूल निवासी नहीं, अपितु बाहर से आकर यहां बस गये हो, तो भारतवर्ष में वे बड़ी सुगमता से अपनी जड़ें जमा सकते हैं, क्योंकि यहा के मूल निवासी आर्यों को विदेशी आक्रामक सिद्ध करने के बाद उनके हाथ में एक बड़ा तर्क यह होता कि "तुम आर्य हम अंग्रेजों का विरोध क्यों करते हो ? आखिर तुम भी तो हमारी ही तरह एक विदेशी आक्रामक के रूप में यहां आकर राज्य करने लग गये हो। न्याय से भी जितना अधिकार इस देश पर तुम्हारा है, उतना ही हमारा भी है।" देश-

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

भवत लोकमान्य तिलक जैसे भी अंग्रेजों की इस कुटिल चाल को न समझकर आर्यों को बाहर से आया हुआ बता गये। पर वह दूरदर्शी देवता पुरुष कौन था, जो हमें बहुत पहले से ही अंग्रेज की इस चाल से मुक्त होने का मार्ग बतलाता हुआ आर्यों को इसी देश का मूल निवासी सिद्ध कर गया।

४. सरदार पटेल ने किस महापुरुष के लिए यह कहा था कि भारत के संविधान में छुआछूत को एक अपराध तथा हिन्दी भाषा को राष्ट्रभाषा का स्थान उसी युगपुरुष के प्रभाव से मिला। इतना ही नहीं, अपितु हमारे मत में लड़कियों के लिए उन्नीस वर्ष की विवाह अवस्था, गोरक्षा, शराबबन्दी तथा अन्धविश्वासों के निराकरण आदि की अनेकों धाराएं उसी युगपुरुष की कृपा से संविधान में दृष्टिगोचर हो रही हैं।

५. किस महापुरुष योगिराज की शिष्य मण्डली ने अत्याचारी निजाम के दांत खट्टे करके उसे भारत का अभिन्न अंग बताया ?

६. किस बाल ब्रह्मचारी ने देश को आजाद करवाने के लिए अपने गुरु स्वामी विरजानन्द सहित सन् १८५७ के स्वतन्त्रता संग्राम में सक्रिय भाग लिया।

७. (क) १८५७ ई. की क्रान्ति के बाद महारानी विक्टोरिया ने भारत का राज्य ईस्ट इण्डिया कम्पनी से लेकर अंग्रेजी साम्राज्य में मिला लिया। इस अवसर पर महारानी की ओर से एक घोषणापत्र प्रचारित हुआ, जो अपने राजनीतिक महत्त्व के कारण इतिहास-प्रसिद्ध है। अंग्रेज सरकार ने इस घोषणापत्र में बड़े मीठे-मीठे वायदे किये थे राज्य की ओर से धार्मिक पक्षपात न होगा, प्रजा पर माता-पिता की भांति रानी का शासन होगा, इत्यादि-इत्यादि। किस महापुरुष की लोह लेखनी ने एक ही वाक्य में इस घोषणा का करारा उत्तर दिया कि "चाहे कोई कितना ही करे, परन्तु जो स्वदेशीय राज्य होता है, वह सर्वोपरि उत्तम होता है। अथवा मत-मतान्तर के आग्रह रहित, अपने और पराये का पक्षपात शून्य, प्रजा पर माता-पिता के समान कृपा, न्याय और दया के साथ विदेशियों का राज्य भी पूर्णतया सुखदायक नहीं होता है।"

(ख) केवल ब्राह्म को सत्य एवं जगत् को मिथ्या सिद्ध करने में व्यस्त आदिशंकर से लेकर नानक जी तक दर्जनों आचार्य, विचारक और सन्त महात्मा हुए। किसी एक ने भी भारत में विदेशी आक्रमण की निन्दा और

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

मातृभूमि की स्वतन्त्रता के लिए एक शब्द भी कहने की आवश्यकता नहीं समझी। इसके सर्वथा विपरीत किस उच्च कोटि के योगी ने विदेशी शासन (जिनके राज्य में सूर्य अस्त नहीं होता था) का प्रबल विरोध किया ?

८. किस व्यक्ति की बनाई संस्था के विषय में आज से १०३ वर्ष पूर्व स्टेट्समैन ने लिखा था—The action of the members of the LAHOREARYA SAMAJ founded by the learned Pundit Daya Nand Saraswati should therefore be hailed with satisfaction by those who have the in'erest and welfare of this country at heart. They resolved at a meeting lately held at the premises of the Arva Samaj building to abstain from tne use of Engli sh cloths.

९. किसने अस्पृश्यता के उन्मूलन के लिए अभियान चलाया एवं छुआ-छूत को मिटाने के लिए सम्मिलित भोज का आदर्श चलाया ? उनके ही अमर शिष्य श्री रामचन्द्र जी असवर्णों को कुएं से पानी पिलवाने के लिए सवर्णों की लाठियां खाकर शहीद हो गये।

१०. आर्यों (हिन्दुओं) में से विधर्मी बने ईसाइयों व मुसलमानों की शुद्धि करवाकर देश को विदेशी षड्यन्त्र से सचेत करते हुए किसके शिष्य श्रद्धानन्द, लेखराम, राजपाल आदि शुद्धि के कार्य के लिए ही गोलियों तथा खंजरों से शहीद हो गये ?

११. किसके सुयोग्य शिष्य अमर शहीद श्री स्वामी श्रद्धानन्द जी महाराज ने सर्वप्रथम ४ अप्रैल १९१९ को दिल्ली की जामामस्जिद के मंच से वेद के मन्त्र त्वं हि नः पिता वसो···का पाठ करते हुए सच्ची हिन्दू-मुस्लिम एकता की प्रेरणा का सूत्रपात किया ?

१२. किसके शिष्यों की प्रेरणा से गांधी जी छुआछूत आदि विभिन्न कार्यों को करने में समर्थ हुए तथा महात्मा की उपाधि प्राप्त कर सके।

१३. किस महापुरुष के प्रभावशाली शिष्यों ने हिन्दू से मुसलमान बन चुके गांधी जी के पुत्र हीरालाल को चन्द ही दिनों में पुनः शुद्ध करके मां कस्तूरबा की झोली को खुशियों से भर दिया ?

१४. किसने राष्ट्र के सर्वांगीण विकास व एकता की आधारशिला आश्रमवास सहित सनातन वैदिक गुरुकुल प्रणाली का प्रचलन करते हुए अमीर-गरीब व ऊंच-नीच की भावना से रहित होकर सबको यथायोग्य समान आसन, समान वस्त्र, समान भोजन एवं समान निःशुल्क शिक्षा की व्यवस्था का प्रकाश किया ?

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

१५. किसने पिता के सम्बन्ध एवं सम्पत्ति के अधिकार को जन्म से न मानकर गुण-कर्म स्वभाव से माना ?

१७. भारत में सर्वप्रथम परमात्मा की श्रेष्ठतम कृति मनुष्य सन्तानों को नव-जीवन प्रदान करने के लिए फीरोजपुर (पंजाब) में अनाथालय की स्थापना किस करुणामय हृदय वाले ने की ?

१७. किसने वर्ण व्यवस्था को जन्म से न मानकर वेद व आर्ष-ग्रन्थों के अनुसार गुण-कर्म स्वभाव से ही माना ?

१८. (क) किसने सत्य एवं पक्षपातरहित न्यायप्रियता को मानव तथा राष्ट्र का मूल मन्त्र बताया ?

(ख) व्यक्ति-व्यक्ति तक ईश्वर की अमृतवाणी पहुंचाने के लिए किसने सर्वप्रथम वेदों का प्राचीन ऋषिशैली से हिन्दी भाषा में भाष्य (अनुवाद) किया ?

१९. वेदों पर लगे जातिवाद, छुआछूत, नरवलि, पशुबलि, नारी-निन्दा, जादू-टोना, बहुदेवतावाद, अवतारवाद, जगत् मिथ्यावाद, मृतक-श्राद्ध, मूर्ति-पूजा, सुरापान, गोमांस सेवन व बहुपत्नीवाद एवं अश्लील आक्षेपों का प्राचीन ऋषिशैली से खण्डन करके उन्हें सब सत्यविद्याओं का आदि मूल ग्रन्थ प्रतिपादित किसने किया ?

२०. किसके वेदभाष्य की योगी अरविन्द एवं मैक्समूलर ने मुक्तकण्ठ से प्रशंसा की ?

२१. वेदशास्त्रों एवं संस्कृत भाषा के गौरव को बताते हुए किस महा-पुरुष के शिष्यों ने संसार में सर्वप्रथम (राइअ बन्धुओं से भी लगभग आठ वर्ष पूर्व) सन् १८९५ में स्वयं विमान की रचना करके उसे बम्बई में १८०० फुट ऊंचा उड़ाकर वैदिक धर्म को पूर्ण वैज्ञानिक सिद्ध किया ?

२२. किसने सर्वप्रथम मानव समाज को असख्य मतमतान्तरों की परस्पर विरोधी मान्यताओं से मुक्ति दिलाने का प्रयास किया और एक सार्वभौम सत्यमत पर सभी मतावलम्बियों को आरूढ़ करने के लिए दिल्ली में सर्वधर्म सम्मेलन का आयोजन किया।

२३. किसने स्त्रियों को सामाजिक, धार्मिक तथा शैक्षणिक समान अधिकार दिलवाये, जिनमें विधवा-विवाह भी सम्मिलित है।

२४. किसने एक निराकार, सर्वव्यापक, सृष्टिकर्त्ता के स्थान पर जग

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

देवी-देवताओं तथा नये नये सम्प्रदाय चलाकर मनुष्यों में फूट डालने वाले तथाकथित अवतारों एवं गुरुओं के मिथ्यावाद का निराकरण किया ?

२५. धर्म और आध्यात्मिकता की आड़ में रूढ़िवादी धर्माचार्यों, मठाधीशों, पण्डों व बुद्धिभेद पैदा करने वाले स्वार्थी विद्वानों के विरुद्ध किसने प्रबल संघर्ष किया, जिससे कि आम जनता का आर्थिक, सामाजिक व चारित्रिक शोषण रुक सके ?

२६. मानव समाज को पतन के गर्त में, जाने वाले तथाकथित भाग्यवाद दहेज-प्रथा, फलित ज्योतिष, जादू-टोना, भूत-प्रेत, मूर्तिपूजा व अन्धी श्रद्धा का निर्भीक खण्डन सर्वप्रथम किसने किया ?

२७. उपरोक्त मुख्य कारणों से गुलामी की जंजीरों में जकड़े भारतवर्ष के लिए स्वराज्य शब्द का तिलक से भी ५० वर्ष पूर्व उद्घोष किसने किया ?

२८. किसके शिष्य ने सर्वप्रथम सामाजिक कुरीतियों के मूल बालकन्याओं के साथ वृद्धों के विवाह रोकने के लिऐ अपने हाथों से अपने दांतों को तोड़कर इस कुप्रथा की अन्त्येष्टि की ?

२९. किसके शिष्यों ने पूरे विश्व के लोगों को ओम् तथा गायत्री मन्त्र का सबसे अधिक उपदेश किया ?

३०. भारत में औद्योगिक व तकनीकी विकास के लिए किसने सर्वप्रथम जर्मनी के विशेषज्ञों से पत्रव्यवहार किया एवं मानव समाज की रक्षा के लिए अधिक वृक्ष लगाने का उपदेश दिया ?

३१. किसने सर्वप्रथम नशाबन्दी के लिए प्रयास किया और गोरक्षा के पवित्र अभियान को लाखों लोगों के हस्ताक्षरों सहित प्रारम्भ किया ?

३२. किसने सर्वप्रथम गोमांस भक्षक अंग्रेजों के राज्य में भी रिवाड़ी (हरयाणा) में विश्व की प्रथम गोशाला का निर्माण करवाया ?

३३. (क) किस वीर संन्यासी की पुस्तक को पढ़ते हुए श्री दादाभाई नारोजी ने कहा था कि "तुम यह मत समझना कि मैं आर्य हो गया हूं, पर इसमें दो राय नहीं कि देशभक्ति एवं स्वराज्य प्राप्ति की जितनी प्रेरणा मुझे इस ग्रंथ से मिलती है, उतनी किसी दूसरे ग्रंथ से नहीं मिलती।"

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

(ख) किसने स्वयं हिन्दीभाषी (आर्यभाषी) न होते हुए भी राष्ट्र की एकता के लिए सर्वप्रथम हिन्दी भाषा को ही राष्ट्रभाषा बनाने का उद्घोष किया ?

३४. किस महामानव के चित्र को फ्रांस वालों ने अपने हिन्दी भवन में लगाकर उन्हें विश्वमित्र की उपाधि से सुशोभित किया ?

३५. उन्नीसवीं शताब्दी के किस महापुरुष ने विदेशों में गये बिना एवं अंग्रेजी पढ़े बिना ही अनेकों विदेशियों को अपना शिष्य बनाया ?

३६. हिन्दुओं ने किसकी लिखी संस्कार-विधि का नाम की पुस्तक को दिखाकर इंग्लैण्ड एवं मारिशस में मृतक शरीरों को गाड़ने गाड़ने की अपेक्षा उन्हें वैदिक विधि से जलाने का कानूनी अधिकार प्राप्त किया ?

इन सब प्रश्नों का ऐक ही उत्तर है —महर्षि दयानन्द सरस्वती ।

अपने ढंग का अकेला धर्मरक्षक पत्र

जिसके लेखों से बौखला कर यवन-ईसाई

बारह अभियोग चला चुके हैं।

जन-ज्ञान (मासिक)

के

आजीवन सदस्य बनकर

विजय के लिए

सहयोग दीजिए

दयानन्द संस्थान (पंजीकृत न्यास)

१५६७ हरध्यानसिंह मार्ग, करौलबाग, नई दिल्ली-५

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

—चित्तरंजन वत्स

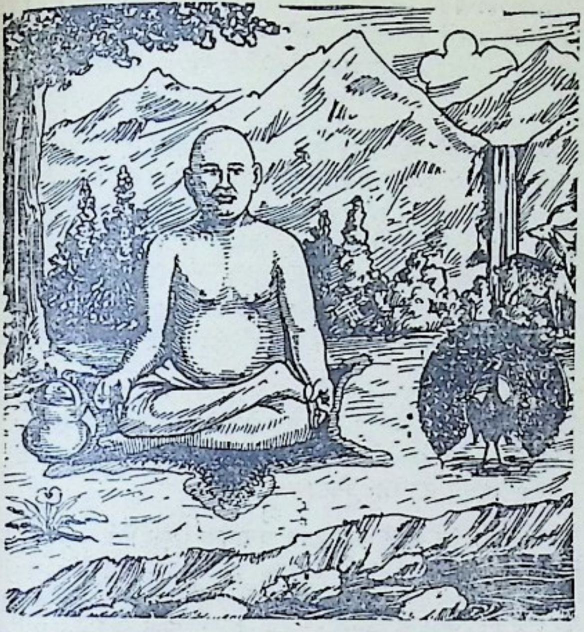

ऋषि दयानन्द की संक्षिप्त जीवनी

ऋषि दयानन्द सरस्वती का जन्म गुजरात प्रान्त के टंकारा गांव में सन् १८२५ ई० (सम्वत् १८८१ वि०) में हुआ। उनका पहला नाम मूलजी दयाराम था। मूलजी के पिता का नाम कर्शनजी तिवारी था। कर्शनजी बड़े जमींदार और साहूकार तथा मोरवी राज्य के एक अधिकारी थे। जब बालक मूलजी लगभग १४ साल के हुए तो शिवरात्रि के दिन उनके पिता, जो कट्टर शिवभक्त थे, उन्हें मन्दिर में ले गए। मूलजी ने शिवरात्रि पर रात भर जागने और उपवास रखने का माहात्म्य सुना हुआ था, इसलिए और सबके यहां तक कि अपने पिताजी के सो जाने पर भी वे आंखों पर पानी के छींटे डालकर जागते रहे। इतने में उन्होंने देखा कि एक चूहा शिवलिंग

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

पर चढ़ी हुई मिठाई खा रहा है, फिर भी महादेव जी कुछ नहीं कर सकते। यह देखकर बालक के पवित्र, सरल दिल में शंका उठी कि यह क्या बात है? जिन महादेव जी के बारेमें पुराणों में इतनी कथाएं त्रिपुरारि आदि राक्षसों को त्रिशूल से मारने की बताई गई हैं, क्या वे छोटे-से चूहे से भी अपनी रक्षा नहीं कर सकते ?

जब बालक के मन में उठी शंका का कोई समाधान न हुआ तब उसने अपने पिता को जगा कर अपनी शंका उनके सामने रख दी। उनसे भी इस प्रश्न का कुछ उत्तर न बना और वे मूलजी को धमकाने लगे कि तू ऐसी शंकाएं क्यों करता है ? पिता जी के उत्तर से बालक के दिल को जरा भी तसल्ली न हुई और छोटी-सी उमर में ही उन्होंने यह निश्चय कर लिया कि जब तक मैं सच्चे महादेव (परमेश्वर) का पता न लगा लूंगा, तब तक चैन न लूंगा। उसी दिन से उस सरल हृदय बालक का चित्त मूर्तिपूजा से हट गया।

इसके बाद मूलजी के जीवन में कुछ एक ऐसी घटनाएं और घटीं, जिनसे बालक के दिल में वैराग्य पैदा हो गया और आखिर उन्होंने सच्चे ईश्वर का ज्ञान प्राप्त करने के लिए घर छोड़ दिया।

जब मूलजी अभी १५ साल के थे, तब अचानक एक दिन उनकी छोटी बहन को चेचक निकल आई। अच्छी से अच्छी दवाई करने पर भी आराम न हुआ और उसका निधन हो गया। इस मौत को देखकर और सब तो जोर-जोर से रोने लगे पर बालक मूलजी एक कोने में खड़े होकर यही सोचते रहे कि किस तरह मृत्यु पर विजय पाई जा सकती है।

इसके दो साल बाद उनके चाचा की मृत्यु हो गई। वह मूलजी को बहुत प्यार करते थे, इससे उनकी वैराग्य की भावना और भी दृढ़ हो गई और उन्होंने जैसे भी हो सके, मौत से छुटकारा पाने और अमर बनने का पक्का निश्चय कर लिया।

लगभग २८ साल की आयु में मूलजी ने स्वामी पूर्णानन्द सरस्वती नामक एक विद्वान् से संन्यास लिया। उनका नाम दयानन्द सरस्वती रखा गया। स्वामी दयानन्द जी के गुरु स्वामी विरजानन्द जी थे, जो मथुरा में रहते थे। उन्हीं से ऋषि दयानन्द ने वेद-वेदाङ्गों को विशेष रूप से पढ़ा। उन्होंने दयानन्द से गुरु दक्षिणा के तौर पर यह मांगा कि तुम सर्वत्र वेदों का प्रचार करो, लोगों को ऋषियों के बनाए उत्तम ग्रन्थों को पढ़ने की प्रेरणा दो तथा वेद-विरुद्ध सब बातों और रीति-रिवाजों से लोगों को मुक्त करो।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

उस गुरु-ऋण को चुकाने के लिए ऋषि दयानन्द ने विद्या समाप्त करके वैदिक धर्म के प्रचार और समाज सुधार के लिए अपना सारा जीवन लगा दिया।

उन्होंने काशी के बड़े-बड़े पण्डितों से ईश्वर के वास्तविक स्वरूप पर शास्त्रार्थ किए, जगह-जगह (खासकर कुम्भ आदि के मेलों में) वैदिक धर्म पर जोरदार व्याख्यान दिए और वैदिक धर्म के सिद्धान्तों की व्याख्या के लिए बहुत-से ग्रन्थ लिखे, जिनमें से निम्नलिखित अधिक प्रसिद्ध हैं—

१. यजुर्वेद का संस्कृत और हिन्दी भाषा में पूरा भाष्य।
२. ऋग्वेद के साढ़े छः मण्डलों का संस्कृत भाष्य।
३. आर्याभिविनय—वैदिक प्रार्थनाओ की पुस्तक।
४. सत्यार्थ प्रकाश।
५. ऋग्वेदादिभाष्य भूमिका।
६. संस्कार विधि।
७. काशी-शास्त्रार्थ, भ्रमोच्छेदन, वेदविरुद्ध-मत-खण्डन इत्यादि छोटी पुस्तकें।
८. जीवरक्षा और मांस-निषेध प्रचार के लिए गोकरुणानिधि।

संस्कृत भाषा के प्रचार के लिए कई स्थानों पर ऋषि ने संस्कृत पाठशालाएं खुलवाईं। अनाथों की रक्षा के लिए अनाथालय खुलवाये।

जन्म-मूलक जात-पात, छूतछात, बाल विवाह, मृतक-श्रद्ध, तीर्थ यात्रा इस उद्देश्य से करना कि इससे किए हुए पाप दूर हो जाएंगे, बाल विधवाओं को आजीवन पुनर्विवाह से वंचित रखना इत्यादि बुराइयों का ऋषि ने विरोध किया और वर्णाश्रम धर्म का सच्चा स्वरूप लोगों के सामने रखा। ब्रह्मचर्य के प्रचार के लिए गुरुकुल शिक्षा प्रणाली का आदर्श सत्यार्थ-प्रकाश आदि में विस्तार से प्रतिपादित किया।

धर्म-प्रचार के कारण ऋषि दयानन्द को तरह-तरह के कष्ट उठाने पड़े। स्वार्थी, धूर्त लोगों ने बहुत बार उन्हें जहर दिया। उन पर पत्थर, कीचड़, गोबर आदि फेंके और फिकवाए तथा तरह-तरह से उन्हें बदनाम और अपमानित करने की कोशिश की गई। फिर भी ऋषि दयानन्द ने शान्त भाव से इन सब कष्टों को सहा और वे कभी भी विरोधियों को नुकसान पहुंचाने का विचार तक मन में नहीं लाए।

धार्मिक और सामाजिक सुधार के अतिरिक्त ऋषि दयानन्द ने राज-

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

नैतिक सुधार के लिए भी बहुत प्रयत्न किए। ऋषि दयानन्द ने राजधर्म और प्रजाधर्म का वेद आदि सत्य शास्त्रों के आधार पर प्रचार किया। स्वराज्य का महत्व लोगों के सामने इन स्पष्ट शब्दों में रखा कि 'कोई कितना ही करे परन्तु जो स्वदेशीय राज्य होता है वह सर्वोत्तम होता है तथा मत-मतान्तर के आग्रह रहित, अपने और पराये का पक्षपात शून्य, प्रजा पर पिता-माता के समान कृपा, न्याय और दया के साथ विदेशियों का राज्य भी पूर्ण सुखदायक नहीं।" (सत्यार्थ-प्रकाश समुल्लास ८)

इसी तरह उन्होंने सत्यार्थ-प्रकाश के ११वें समुल्लास में स्वदेशी वस्त्र धारण करने पर जोर दिया।

उन्होंने लोगों में स्वावलम्बन का भाव खासतौर पर जगाया। उपनियमों में उन्होंने आर्यों को जहां तक हो सके अदालतों में न जाकर आपस में ही निपटारा कर लेने की सलाह दी।

ऋषि दयानन्द की मृत्यु मंगलवार, कार्तिकी अमावस्या, ३० अक्तूबर, १८८३ ई. दीवाली के दिन सायंकाल ६ बजे अजमेर में हुई। मृत्यु का कारण इस प्रकार बताया गया है—

जोधपुर के राजा का नन्हीजान नामक वेश्या से लगाव था। ऋषि दयानन्द को जब वह जोधपुर में उस राजा के अतिथि थे, यह बात नागवार गुजरी। उन्होंने उसे फटकार बताई। नन्हीजान ने बदला लेने की ठानी। उसने उनके सेवक जगन्नाथ को प्रलोभन देकर ऋषि को जहर दिला दिया, जिसके प्रभाव से उनके शरीर में फोड़े-फुंसी हो गए और अन्त में उनका देहान्त हो गया। अन्त समय तक ऋषि दयानन्द शान्त चित्त से वेदमंत्रों द्वारा ईश्वर का भजन तथा प्रार्थना करते रहे। इस दृश्य को देखकर पं. गुरुदत्त जैसे नास्तिक विचारों के सज्जन भी कट्टर आस्तिक बन गए। ऋषि दयानन्द ने अपनी जेब से कुछ धन देकर वहां से भाग जाने के लिए कहा ताकि रियासत की पुलिस उसे न पकड़ सके। इस प्रकार उन्होंने अपने हत्यारे की जान बचाकर उस पर अद्भुत दया दिखलाई। ऐसे आदर्श सुधारक योगिवर ऋषि दयानन्द का विस्तृत जीवन चरित्र सब बालक-बालिकाओं और नर-नारियों पढ़कर उनके चरण चिह्नों पर चलने का प्रयत्न करना चाहिए।

देश भर में हिन्दू कल्याण समिति की शाखाओं का जाल बिछा दें।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

—जयभगवान् आर्य

समाज में नारी का स्थान

जगत् जननी, जगत् निर्मात्री, जगत् विधात्री नारी की महानता को कौन स्वीकार नहीं करता ? नारी समाज का गौरव है, परिवार का केन्द्र-विन्दु है, जाति का अभिमान है, देश की शक्ति और विश्व की 'मां' है। कितनी मोहकता, प्रेम प्रबलता और कितना वात्सल्य है इस 'मां' शब्द में। नारी पुरुष में संवर्धन, प्रोत्साहन और शक्ति की प्रेरणास्रोत है। नारी सृजन और निर्माण शक्ति की विभूति है। सभ्यता और संस्कृति की प्रथम आधार-शिला है। देश और धर्म की बलिवेदी है। कोमलता, स्निग्धता, ममता, शील, वत्सलता और मृदुलता की प्रतिमा है। जीवन का एक प्रधान अंग है। नारी नर की निर्मात्री है।

जितना पुराना इस सृष्टि का इतिहास है, उतनी ही प्राचीनता इस नारी शब्द में है। करोड़ों वर्षों से नारी जीवन के प्रांगण में अपने प्रेम, ममता और वात्सल्य भाव का प्रदर्शन करती आई है। नारी ने यदि नर के साथ जीवन की यात्रा में पग से पग न मिलाया होता तो मानव आज इस संसार में गौरवशाली न होता। नारी ने यदि मानव की जीवनरूपी गाड़ी में अपना कन्धा न दिया होता, तो इस सृष्टि का अस्तित्व करोड़ों वर्ष पहले ही समाप्त हो गया होता। मानव की इस गौरवमयी कहानी का अस्तित्व ही न होता। दोनों के साथ-साथ चलने से ही वे जीवन के इस आधुनिक क्षेत्र में पहुंच सके हैं। दोनों के प्रेम और मिलाप ने ही इस सृष्टि की संवर्धना की है। दोनों की ही जीवनमयी प्रेरणा ने शताब्दियों से उनके जीवन में स्फूर्ति और बल का संचार किया। दोनों के आगे बढ़ने से समाज आगे बढ़ा है। दोनों ने मिल कर समाज की रचना की है। नर और नारी दोनों ही समाज के अनिवार्य अंग हैं। एक के बिना दूसरा अधूरा है।

जगत् उत्पत्तिकर्ता परमपिता परमेश्वर ने नारी को स्वभाव से ही कोमल बनाया है। मृदु स्वभाववाली बनाया है। पुरुष बलवान् और शूरवीर है। शक्ति का स्रोत है। समाज के दोनों अंगों में पुरुष ने स्वयं को बलशाली प्रदर्शित किया। नारी बेचारी उसका विरोध न कर सकी। वैदिक युग में नारी सभी क्षेत्रों में पुरुष की समभागिनी थी। उसे सब अधिकार प्राप्त थे। धार्मिक, सामाजिक और राजनैतिक सभी कार्यक्षेत्रों में नारी अपना योग-

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

दान करती थी। उसे यज्ञ करने, वेद पढ़ने, शिक्षा ग्रहण करने का पूर्ण अधिकार था। सभाओं में वह पुरुष के समान सभी कृत्य करती थी। युद्ध आदि सभी कार्यों में भाग लेती थी। पुरुष के समान वह भी समाज का एक मान्य अंग थी।

ज्यों-ज्यों समय बदलता गया, समाज के वातावरण में परिवर्तन होता गया। पुरुष बदला, उसका पौरुष बदला और उसका स्वभाव भी बदल गया। उसने अपनी शक्ति की वृद्धि आरम्भ की। वह बल पकड़ता गया। नारी का क्षेत्र सीमित होता गया। समाज के विस्तृत क्षेत्र से निकालकर पुरुष ने उसे घर में रहने को बाध्य किया। उसने नारी की सरलता का लाभ उठाना प्रारम्भ किया। उसे सभी अधिकारों से वंचित हो जाना पड़ा। घर की चार-दीवारी ही नारी का आश्रय-स्थल बन गई। पुरुष ने उसे अपनी पाशविक शक्ति के साथ-साथ अपमानित करना प्रारम्भ किया। जिस नारी को समाज में उच्च स्थान प्राप्त था, जिसे आचार्य से भी बढ़कर सम्मान मिलता था, जिसे दुर्गा, लक्ष्मी और सरस्वती समझा जाता था, जिसे मातृ-शक्ति का अवतार समझा जाता था, वैदिक युग में जो नारी वेद मन्त्रों की व्याख्या करती थी, वेद पढ़ती थी, यज्ञ करती थी, जिस नारी को गौरव में एक लाख उपाध्याय, दस हजार आचार्यों, एक हजार पिताओं से बढ़कर माना जाता था, जिस स्थान पर नारी पूजी जाती है, देवता वहां निवास करते हैं, ऐसी उक्तियों से नारी की प्रशंसा के गीत गाए जाते थे, धीरे-धीरे उसी नारी को समाज के इस प्रबल अंग ने नरक का द्वार, पांव की जूती आदि घृणित नामों से पुकारा! उसे पशुओं के समान बताया। त्याज्य कह कर उसकी अवहेलना की। नारी को भोग-विलास की सामग्री समझकर उस पर अत्याचार किए गए। उसे पीड़ित किया गया। नारी को बोलने तक की आज्ञा न दी गई। उसे सभी सामाजिक, राजनैतिक और धार्मिक क्षेत्रों से निष्कासित कर दिया गया। नारी की वैदिक युग में जो स्थिति थी, वह उससे छीन ली गई। मुस्लिम काल में नारी को पर्दे में रखा गया। ईसाई जगत् ने तो नारी को आत्महीन ही बना दिया। धीरे-धीरे वह भी समय आ गया, जब नारी नर के हाथों एक कठपुतली बन कर रह गई। वह जिस प्रकार चाहे उसे नचा सकता था, मनमानी कर सकता था। वह उसका स्वामी था और नारी उसकी दासी। स्वामी के सेवक पर अत्याचार बढ़ते गए। उसके अर्धांगी भाग पर भी नर का भाग हो गया। नारी की नकेल नर के हाथ में आ गई। नर ने जो चाहा सो किया। उसे देव-दासी, देवकन्या, नगर वधू बना कर अपनी पाशविक मनोवृत्ति का प्रदर्शन किया। उसे पातिव्रत्य धर्म से निकाल कर बाजारों की झूठी शान की चमक

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

बना दिया। चान्दी के चन्द सिक्कों पर नारी का पातिव्रत्य बिकने लगा। उसे चकलों में बिठाया गया। मन्दिरों की शोभा बनाया गया।

समय के रंगमंच पर नारी से क्या-क्या अभिनय नहीं कराया गया? समाज का प्रधान अंग होकर पुरुष ने नारी जाति का दमन किया। अपने हाथों का खिलौना बनाया। नारी कमजोर होती चली गई। उसने भांति-भांति के कष्ट सहे।

पुरुष का दमन चक्र चलता गया। नारी उसकी शक्ति के आगे झुकती चली गई। अपनी आकांक्षाओं का बलिदान करती चली गई। सन्त-महात्माओं तक ने नारी का निरादर किया। उसने नर के आगे घुटने टेक दिए।

समय का चक्र चलता गया। संसार में समय के इस रंगमंच पर नारी के इस अभिनय का कार्य चलता गया। उसे नये-नये रूप देकर मानव ने इस रंग मंच पर पेश किया। स्वयं वह दिग्दर्शक बना। रंगमंच का निर्माता बना। साहित्यिक क्षेत्र में नारी पर आक्षेप किया गया। कई शंकराचार्य और तुलसीदास उत्पन्न हुए।

समय के रंगमंच के सम्मुख जिस पर नारी का अभिनय हुआ, वहां पर छाई अंधियारी में प्रकाश की एक किरण प्रस्फुटित हुई। नारी को सन्मार्ग की ओर ले जाने वाली एक शक्ति का प्रादुर्भाव हुआ। एक ऐसी शक्ति, जिसने नारी जाति के उत्थान के लिए अपना जीवन लगा दिया। वैदिक युग की उस दुर्गा को सही दुर्गा और सरस्वती बनाने का बीड़ा उठाया। उसे रीता से सीता बनाने का प्रयत्न किया गया। नारी जाति में एक नई चेतना, एक नई जागृति, नई स्फूर्ति आ गई। उसे फिर से पठन-पाठन का अधिकार मिलने लगा। सभाओं में उसका आगमन होने लगा। जब उसे अधिकार प्राप्त होने लगे, तो नारी जाति की इस चेतना ने समाज में एक परिवर्तन ला दिया।

शताब्दियों से पुरुषों की दासता के चंगुल में फंसी बेचारी नारी इतना शीघ्र इस जाल से छुटकारा पाने में असमर्थ थी। फिर भी वह जागरूक हुई। नारी की यह जागरूकता बहुतों को खलने लगी। परन्तु उस महान् शक्तिशाली प्रकाशपुंज से प्रस्फुटित किरणों का प्रकाश अब चतस्र दिशाओं में फैलना आरम्भ हो चुका था। इस नई रोशनी से बहुतों की आंखों में रोशनी आ गई।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

आज के स्वतन्त्र भारत की नारी पुरुष वर्ग के बराबर समानाधिकारिणी है। स्वतन्त्रता के इस युग में नारी की परतन्त्रता की शृंखलाएं अब टूट चुकी हैं, जिनमें वह शताब्दियों से जकड़ी हुई थी। नारी आज प्रत्येक क्षेत्र में पुरुष के समान सभी कार्य कर सकती है। वैदिक युग के समान उसे सभी अधिकार प्राप्त तो हैं परन्तु वह मान, वह श्रद्धा अभी तक नारी को प्राप्त नहीं हुई। उसे मां, बहन अवश्य कहा जाता है, परन्तु अभी तक इन शब्दों में उतना सम्मान नहीं है। उसे सभी अधिकार प्राप्त हैं। वह समानाधिकारिणी है, वह स्वतन्त्र है, परन्तु वह सबला नहीं है, अभी भी वह अबला ही बनी हुई है। शताब्दियों के घोर अन्धकार की गहन चादर अभी भी उसके मस्तिष्क पर पड़ी है स्वतन्त्र होते हुए भी नारी अभी पर्दे में है। उसका कार्य क्षेत्र बढ़ गया है परन्तु अभी वह उस क्षेत्र की स्वामिनी नहीं बन पाई। उसके दासत्व की शृंखलाएं टूट अवश्य गई हैं परन्तु उसके निशान अभी तक बने हुए हैं।

आज के इस स्वतन्त्र युग में नारी स्वच्छन्द है, स्वतन्त्र है, समानाधिकारिणी है परन्तु उसकी यह स्वतन्त्रता इतनी सार्थक नहीं हो पाई जितनी उसे होना चाहिए था। उसकी इस स्वतन्त्रता का लाभ पुरुष वर्ग ने उठाया। नारी सचेत न हो सकी। समान अधिकार मिलने पर भी वह वैदिक युग की नारी के समान नहीं है। उसमें उच्छृंखल भाव पनपने लगे हैं। वह विदेशियों के आचार-विचार, व्यवहार की ओर आकृष्ट हो गई है। उनकी सभ्यता-संस्कृति में उसकी रुचि बढ़ गई है। आज की नारी एक ऐसे बहाव में बह गई है जिससे निकल पाना आज उसके लिए असम्भव हो गया है।

आज की नारी सीता और सावित्री के उस सतीत्व और पातिव्रत्य धर्म के प्रति कुछ उदास-सी दृष्टिगोचर होने लगी है। वह पातिव्रत्य धर्म जिस पर समाज और जाति गर्व करते हैं। इसका यह अर्थ नहीं कि आज की नारी विलासिता के समुद्र में बह गई है। उसे अपनी संस्कृति और मान-मर्यादा का कुछ भी ध्यान नहीं है। परन्तु फिर भी वह सीता तो नहीं, रीता अवश्यक बन गई है। वह रीता जिसे भारतीय समाज और संस्कृति तो कदापि स्वीकार नहीं कर सकते। आज के रंगमंच, थियेटर, क्लब, चलचित्र आदि ने नारी को एक नई दिशा में मोड़ दिया है।

सिनेमा ने उसे अपनी सभ्यता, मान-मर्यादा और पातिव्रत्य धर्म तक को तिलांजलि देने के लिए बाधित किया है और आज की जागरूक नारी वही कुछ करती है जो वह चलचित्रों में देखती है। वह सिनेमा के प्रति

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

आकर्षित है और वही आकर्षण उसे एक प्रकार से देश की सभ्यता और संस्कृति से दूर लिये जा रहा है।

परन्तु फिर भी आज की नारी समाज की तंग दीवारों को तोड़कर जागृति की ओर अग्रसर हो रही है। पुराने रीति-रिवाजों, अन्ध-विश्वासों, जड़ता आदि को ठुकराकर उन पर कुठाराघात करके वह जीवन के नए प्रांगण में आ गई है। आज नारी नर के समान है, वह उसकी दासी नहीं, वरन् उसकी सहयोगिनी है, उसकी अर्धांगिनी है। उसकी जायदाद या पाँव की जूती नहीं। आज वह उसकी प्रेरणा दात्री है।

सृष्टि शब्द अपने आप में स्त्रीलिंग है। सृष्टि निर्माण हेतु परमात्मा ने नर और नारी को उत्पन्न किया। दोनों का निर्माण समभाव से किया। एक के बिना दूसरा अधूरा है। एक के बिना दूसरे का महत्त्व स्वयं समाप्त हो जाता है।

वी० पी० मंगानी छोड़िए
जन-ज्ञान का शुल्क
मनीआर्डर से ही भेजिए

एक वी० पी० पर ५) अधिक व्यय आता है
तो क्यों नहीं आप अपना शुल्क मनीआर्डर से भेजते ?

प्रतिवर्ष एक लाख रुपया
वी. पी. की भेंट चढ़ता है

डाक खर्च दोगुना हो गया है, वी० पी० मत मंगाइए।

हमारी सहायता कीजिए
जन-ज्ञान (मासिक)

वेद मंदिर, पो० आ० अलीपुर, दिल्ली-३६

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

—योगेन्द्रसिंह एडवोकेट

संस्कृत साहित्य—सूक्तियों का भण्डार

आधुनिक कहलाने के दम्भ में अनेक व्यक्ति संस्कृत को रूढ़िग्रस्त एवं मृत भाषा कहकर सम्बोधित करने में अपना गौरव मानते हैं और कतिपय उदाहरणों द्वारा इसका उपहास उड़ाया करते हैं। उनकी यह धारणा कुछ रूढ़िवादी संस्कृतज्ञों के जीवन क्रम को देखने से बनी प्रतीत होती है, क्योंकि प्रायः संस्कृत वाले नये विचारों के अनुसार अपने में शीघ्र परिवर्तन लाने में असमर्थ और कुछ रूढ़िवादी पाये जाते हैं। परन्तु यह दृष्टिकोण पक्षपातपूर्ण है। सभी भाषाओं के जानने वालों में प्रगतिवादी और रूढ़िवादी दोनों ही प्रकार के व्यक्ति देखे जा सकते हैं। हम देखें तो हमें ऐसे व्यक्ति देखने को मिलेंगे, जो पाश्चात्य शिक्षा पद्धति द्वारा उच्च शिक्षित कहे जाने वाले समाज की इकाई हैं लेकिन झाड़-फूंक, गण्डा-तावीज, व्रतोपवास, भाग्यवाद, तीर्थ तथा मनौतियों के झंझटों के शिकार हैं। ऐसी स्थिति में किसी वर्ग-विशेष की गतिविधियों द्वारा किसी भाषा के विषय में यह धारणा बना लेना कि वह रूढ़िग्रस्त एवं मृत भाषा है, नितान्त भ्रमपूर्ण है।

संस्कृत भाषा को पक्षपात रहित दृष्टि से पढ़ने पर इसमें रूढ़िवादी और प्रगतिवादी दोनों ही प्रकार का साहित्य मिलेगा, जैसा हर भाषा के साहित्य में देखा जा सकता है। कहीं-कहीं दोनों प्रकार की रुचियों वाले व्यक्ति अपनी विचारधारा की अभिव्यक्ति करते देखे जाते हैं। ऐसी स्थिति में दुराग्रहवश केवल संस्कृत को रूढ़िवादी भाषा कहना कहां तक न्यायसंगत है ?

इसी प्रकार धर्म के बाह्य रूपों, जन्मगत वर्णव्यवस्था, भाग्यवाद, बलि, मन्त्र जाप एवं तीर्थ स्नान से बुरे फलों की निवृत्ति आदि का वर्णन पाये जाने के कारण भी उसे विशेष रूप से रूढ़िग्रस्त माना जाता है, परन्तु सुधीजनों से यह बात छिपी नहीं कि इन आचरणों के खंडनात्मक वाक्यों से संस्कृत साहित्य भरा पड़ा है। अतः एकपक्षीय निर्णय का कोई औचित्य नहीं रह जाता। रही संस्कृत भाषा को मृत कहने की बात। वह भी पूर्वाग्रह दूषित पाश्चात्यों द्वारा कही गयी उक्ति का अन्धानुकरणयुक्त कथन है। जिस भाषा में पदार्थ विज्ञान, खगोल विज्ञान, चिकित्सा शास्त्र, अर्थशास्त्र, कामशास्त्र आदि व्यवहारोपयोगी विषयों पर उच्च कोटि का जीवनोपयोगी साहित्य प्राप्त हो, जो आज के साहित्य को भी कुछ दे सकने की सामर्थ्य रखता हो, जो

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

साहित्य आज भी मानव जीवन के हर पहलू को प्रकाशित एवं निर्देशित करने में सक्षम हो एवं जिसके मूल में "तमसो मा ज्योतिर्गमय" एवं "न हि ज्ञानेन सदृशं पवित्रमिह विद्यते" की उदात्त भावनाओं का सामघोष मुखरित हो, उसे न तो रूढ़िवादी कहा जा सकता है और न मृत ही। किसी व्यक्ति, समाज एवं राष्ट्र की समृद्धि एवं सुरक्षा का आधार उसकी व्यवस्थायें हुआ करती हैं तथा उन व्यवस्थाओं एवं कर्त्तव्यों का परिपालनसदा चार एवं नीति की शिक्षा से परिप्लावित अन्तःकरण युक्त व्यक्ति से ही संभव है। संस्कृत साहित्य में सदाचार एवं नीतिविषयक जितना साहित्य है, उतना संसार की किसी भाषा के साहित्य में उपलब्ध नहीं।

आगे की पंक्तियों में दिये गये उदाहरणों द्वारा संस्कृत के प्रगतिशील जीवनोपयोगी भावों को पाठक स्वयं ही हृदयंगम कर सकते हैं—

दृष्ट्वा रूपे व्याकरोत्सत्यानृते प्रजापतिः।
अश्रद्धामनृतेऽदधात् श्रद्धां सत्ये प्रजापतिः॥ यजु० १९,३०

संसार के स्वामी प्रजापति ईश्वर ने सत्य एवं असत्य के रूप को पृथक्-पृथक् कर दिया है। उस ईश्वर ने झूठ अर्थात् नियमविरुद्ध अज्ञान एवं अन्याययुक्त व्यवहार में अश्रद्धा अर्थात् घृणा एवं परित्याग को तथा सत्य अर्थात् नियम, ज्ञान एवं यथार्थ में श्रद्धा अर्थात् विश्वास, सम्पर्क एवं प्रेम को प्रतिष्ठित किया है। सत्यासत्य और कार्याकार्य का विवेक हमें शास्त्रों द्वारा सरलता से हो जाता है, जिससे हम शास्त्रविधि द्वारा कार्य को सम्पादित कर उससे सफलता, सुख और तत्पश्चात् मोक्ष को प्राप्त कर सकते हैं।

यः शास्त्रविधिमुत्सृज्य वर्तते कामकारतः।
न स सिद्धिमवाप्नोति न सुखं न परां गतिम्॥ गीता १६,२३

जो मनुष्य शास्त्रविधि को छोड़कर स्वेच्छापूर्वक कार्य को अपनाता है, उसे न तो सफलता ही प्राप्त होती है, न सुख ही प्राप्त हो सकता है और न मोक्ष की ही प्राप्ति हो सकती है।

तस्माच्छास्त्रं प्रमाणं ते कार्याकार्यव्यवस्थितौ।
ज्ञात्वा शास्त्रविधानोक्तं कर्म कर्तुमिहार्हसि॥ गीता १६,२४

अतः मानव जीवन की सफलता एवं सुख की तथा मानव जीवन के परम लक्ष्य मोक्ष की प्राप्ति के लिए शास्त्रविधि का अनुसरण करना चाहिए। परन्तु याद रहे, जिन व्यक्तियों में स्वयं की प्रज्ञा (ऊहात्मक बुद्धि) का अभाव होता है, उनका शास्त्र भी भला नहीं कर सकते।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

भस्य नास्ति स्वयं प्रज्ञा शास्त्रं तस्य करोति किम् ।
लोचनाभ्यां विहीनस्य दपर्णः किं करिष्यति ।। चाणक्य

अतएव शास्त्रीय विधि-विधान के व्यवहार काल में व्यक्ति को अपनी ऊहात्मक बुद्धि का उपयोग करना आवश्यक है, क्योंकि

पुराणमित्येव न साधु सर्वं न चापि काव्यं नवमित्यवद्यम् ।
सन्तः परीक्ष्यान्यतरद् भजन्ते, मूढः परप्रत्ययनेयबुद्धिः ।। कालिदास

न तो पुरातन शास्त्र बिलकुल सही है और न नवीन बिलकुल अशुद्ध है। सज्जन पुरुष किसी शास्त्र के सिद्धान्त को व्यवहार में लाते समय उसे सुपरीक्षित रूप में ही ग्रहण करते हैं, परन्तु मूर्ख जन उसका अन्धानुकरण ही करते हैं।

इसी प्रकार धर्म के बाह्य रूपों की रूढ़ि का खंडन करके धर्म का बुद्धिवादी रूप प्रतिष्ठित करते हुए मनु ने "न लिंगं धर्मकारणम्" कहते हुए "यस्तर्केणानुसन्धत्ते स धर्मं वेद नेतरः" की घोषणा की है, जहां रूढ़िवादिता के लिए कोई स्थान ही नहीं।

इसी प्रकार जन्मगत वर्णव्यवस्था के स्थान पर गुण, कर्म एवं स्वभाव के आधार पर वर्णव्यवस्था को प्रतिष्ठित किया गया है।

न योनिर्नापि संस्कारो न श्रुतं न च सन्ततिः ।
कारणानि द्विजत्वस्य वृत्तमेव तु कारणम् ।।
न कुलेन न जात्या व क्रियाभिर्ब्राह्मणो भवेत् ।
न जात्या ब्राह्मणश्चात्र क्षत्रियो वैश्य एव न ।।
महाभारत वन पर्व

द्विजत्व अर्थात् ब्राह्मणत्व, क्षत्रियत्व एवं वैश्यत्व जन्म, कर्मकाण्डीय व्यवस्था, विद्या और किसी का पुत्र होने से सिद्ध नहीं होता है, उसका एक मात्र कारण आचरण ही है। ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य आचरण व्यवहार से ही बनते हैं, किसी कुल या जाति में जन्म लेने से नहीं—

न शूद्रो न चैव म्लेच्छो, भेदितः गुण कर्मभिः ।। शुक्र नीति ।
चातुर्वर्ण्यं मया सृष्टं गुणकर्मविभागशः ।। गीता

इन श्लोकों से भी वही भाव ध्वनित है। यही कारण है कि सभी शास्त्रकारों ने ब्राह्मणादि के गुण-कर्मों का वर्णन किया है। जन्मगत वर्ण-

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

वस्था होने पर ब्राह्मणादि के गुण-कर्मों की विवेचना की आवश्यकता नहीं थी।

इसी प्रकार बलि प्रथा, जिसके करने वाले उसमें की गयी हिंसा को इसी लिए हिंसा नहीं मानते कि उनकी मान्यता है कि इस क्रिया में बलिपशु को स्वर्ग की प्राप्ति होती है, अतः इस उपकार भाव के कारण इसमें कोई हिंसा का भाव नहीं आता है, इस मिथ्यात्व का खंडन संस्कृत साहित्य में बड़े तर्क-पूर्ण ढंग से किया गया है—

पशुश्चेन्निहतः स्वर्ग ज्योतिष्टोमे गमिष्यति।
स्वपिता यजमानेन तत्र कस्मान्न हिंस्यते॥

यदि यज्ञ में मारा हुआ पशु स्वर्ग जाता है तो यजमान उस यज्ञ में पिता का वध क्यों नहीं करता, जिससे वह स्वर्ग चला जाये।

इसी प्रकार ग्रह बाधा, स्वप्न फल और अपशकुन आदि की सार्थकता पर भी प्रबल प्रहार किया गया है—

ग्रहाणां चरितं स्वप्नोऽनिमित्तौत्पातिकं तथा।
फलन्ति काकतालीयं तेभ्यः प्राज्ञा न बिभ्यति॥ (वेणी संहार)

शनि आदि ग्रहों का फल, स्वप्नफल, अपशकुन और प्राकृतिक उपद्रवों का कोई भी प्रभाव नहीं होता। कभी काकतालीयवत् कोई घटना घट जाने से हम उसे उन ग्रह, स्वप्नादि का फल समझ लेते हैं, लेकिन वस्तुतः इनसे उनका कोई सम्बन्ध नहीं है। इसीलिए समझदार लोग इनके फलाफल पर विचार नहीं करते।

भाग्यवाद रूढ़िवादी विचारधारा का मेरुदण्ड है। आगे के उदाहरणों में भी भाग्यवाद पर तीखा प्रहार किया गया है—

उद्योगिनं पुरुषसिंहमुपैति लक्ष्मीः दैवं हि दैवमिति का पुरुषा वदन्ति।
दैवं निहत्य कुरु पौरुषमात्मशक्त्या यत्ने कृते यदि न सिध्यति कोऽत्र दोषः॥

संसार की सभी भौतिक उपलब्धियां उद्योगशील पुरुषों को ही प्राप्त होती हैं। भाग्य ही से सब कुछ प्राप्त होता है—यह तो आत्मविश्वास एवं पुरुषार्थहीन पुरुषों का कथन है। इसलिए भाग्य का भरोसा छोड़कर अपनी शक्ति के अनुसार पुरुषार्थ करो। हां, यत्न करने पर भी सफलता न

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

मिले तो समझना चाहिए कि कार्यप्रणाली में ही कहीं दोष है।

यही नहीं "क्लीवा दैवमुपासते" (दुर्बल एवं कायर मनुष्य भाग्यवादी होते हैं)। धीर पुरुष सदैव पुरुषार्थ की उपासना करते हैं

धीमन्तो वन्द्यचरिता मन्यन्ते पौरुषं महत्।

सभी कार्य केवल विचार से नहीं, पुरुषार्थ करने से ही सिद्ध होते हैं।

उद्यमेन हि सिध्यन्ति कार्याणि न मनोरथैः।

न हि सुप्तस्य सिंहस्य प्रविशन्ति मुखे मृगाः॥ (पञ्चतन्त्र)

इसलिए प्रत्येक काय को विचारपूर्वक करना चाहिए।

सहसा विदधीत न क्रियामविवेकः परमापदाम्पदम्।

वृणुते हि विमृश्यकारिणं गुणलुब्धाः स्वयमेव सम्पदः॥ (किरतार्जुनीय)

कोई भी कार्य बिना विचारे नहीं करना चाहिए, क्योंकि बिना विचारे किये हुए कार्य आपत्तिमूलक होते हैं। गुणलोभी सम्पत्तियां सदा विचारशील का ही वरण करती हैं।

अयं निजः परो वेति गणना लघुचेतसाम्।
उदारचरितानां तु वसुधैव कुटुम्बकम्॥

यह मेरा है, वह उसका है, यह हीन विचारधारा संकुचित मनोवृत्ति वालों की होती है। उदारचरित पुरुषों का तो सम्पूर्ण पृथ्वी ही कुटुम्ब होता है।

क्या इस प्रकार का साहित्य रूढ़िवादी कहा जा सकता है? यही नहीं, विदेशी विद्वानों का इस भाषा से जब प्रथम परिचय हुआ, तब वे उससे बहुत ही प्रभावित हुए और निष्पक्ष विचारकों ने इसकी बड़ी सच्चाई से प्रशंसा की है। विदेशी संस्कृतज्ञ मोनियर विलियम्स ने संस्कृत को भारतीय साहित्य, संस्कृति, सभ्यता, इतिहास और धर्म को समझने का आधार माना है और उसकी भूरि-भूरि प्रशंसा की है। इसी प्रकार शोपनहार ने भी संस्कृत साहित्य के आध्यात्मिक कोश (उपनिषदों) पर मुग्ध होकर प्रशंसापूर्ण उद्गार व्यक्त किये हैं।

क्या इसके बावजूद यह कहना उपयुक्त है कि संस्कृत रूढ़िग्रस्त एवं मृत भाषा है? आओ, हम सभी पुनः एक बार संस्कृत भाषा को संसार की श्रेष्ठ भाषा बनाने में अपना योगदान दें और उससे प्राप्त उपलब्धियों से अपने देश का विकास कर संसार को एक नई मिसाल दें। ०

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

—सत्यपाल शास्त्री

सामयिक विचार

क्या शेख अब्दुल्ला का धर्मनिरपेक्षता में विश्वास था?

अंग्रेजी में एक उक्ति है कि All controversies should be hushed up in the face of death अर्थात् मृत्यु के साथ सब विवादों का अन्त हो जाना चाहिये। हम भी यह विवाद न उठाते, लेकिन कश्मीर के मुख्यमंत्री शेख मुहम्मद अबदुल्ला के देहान्त पर प्रायः सभी अखबारों ने धर्मनिरपेक्षता में विश्वास रखने वाले नेता के तौर पर उन्हें श्रद्धांजलि अर्पित की है। क्या शेख अब्दुल्ला सचमुच धर्मनिरपेक्षतावादी थे? इस प्रश्न का उत्तर 'न' में ही देना होगा। यदि शेख भी धर्मनिरपेक्षतावादी थे, तो फिर कट्टर से कट्टर साम्प्रदायिक को भी धर्मनिरपेक्ष कहना होगा। प्रारम्भ से ही शेख अब्दुल्ला कट्टर मुस्लिम साम्प्रदायिक रहे। उन्होंने मुस्लिम कान्फरेंस की स्थापना की, लेकिन जब देखा कि कुछ हिन्दुओं को भी साथ लिए विना सत्ता नहीं हथियाई जा सकती, तब उन्होंने मुस्लिम कान्फरेंस का नाम बदल कर नेशनल कान्फरेंस रख दिया। वे कश्मीर के तत्कालीन महाराजा हरिसिंह के विरुद्ध मुसलमानों को भड़काते रहे। उन्होंने महाराजा हरिसिंह के शासन को डोगराशाही का नाम दिया। कश्मीर में हिन्दू मुस्लिम दंगे करवाये। महाराजा को पदच्युत करने के लिए सब तरह के हथकंडे अपनाये। अन्ततः स्वर्गीय जवाहरलाल नेहरू की सहायता से वे महाराजा को रियासत से निष्कासित करवाने में सफल हुए। सत्ता की बागडोर संभालने पर उन्होंने हिन्दू नेता प्रो. बलराज मधोक को रियासत से निष्कासित करवाया और हिन्दू हितों के लिए लड़ने वाले अनेक कार्यकर्त्ताओं को जेल में डाला। अन्ततः हिन्दू संगठनों को मिलकर जम्मू आन्दोलन के नाम से विख्यात अन्दोलन चलाना पड़ा, जिसमें डा० श्यामाप्रसाद मुखर्जी को अपने प्राणों तक की आहुति देनी पड़ी। इस पर जब सारे देश में शोर मचा, धिक्कार दिवस मनाया गया और राजर्षि पुरुषोत्तमदास टंडन व लोकनायक जयप्रकाश नारायण सदृश तपःपूत राष्ट्रवादी नेताओं ने

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

भी शेख अब्दुल्ला को धिक्कारा, तब लज्जित होने और अपने को सुधारने की बजाय शेख ने कश्मीर का सुलतान बनने की ठानी, बड़े-बड़े राष्ट्रवादी नेताओं को साम्प्रदायिक कहना शुरू किया व बख्शी गुलाम-मुहम्मद को मंत्रिमण्डल से निकलने पर विवश कर दिया। इस पर स्वर्गीय रफी अहमद किदवई की प्रेरणा से नेहरू जी की सरकार ने उन्हें बन्दी बनाया। वे पांच वर्ष तक जेल में रहे, लेकिन रिहाई पर फिर साजिशें करने लगे। कश्मीर षड्यन्त्र केस चला और वे फिर जेल भेजे गये। बाद में भी वे नजरबन्द किये गये। उनकी हरकतें देशद्रोहपूर्ण थीं। उन्होंने अपने साथी मिर्जा अफजल बेग के साथ मिलकर जनमत-संग्रह मोर्चा गठित किया और कश्मीर में जनमतसंग्रह की मांग की। संविधान की धारा ३७० का पूरा लाभ उठाया। कोई भारतीय नागरिक (सरकारी विभाग भी) कश्मीर में भूमि नहीं खरीद सकता, जब कि पाकिस्तान जा चुके मुसलमानों के पुनर्वास के लिए विधान सभा में बिल पास करवाया गया। अपने अन्तिम भाषण में उन्होंने कहा कि "उत्तर भारत के हिन्दू नेता कश्मीर के मुस्लिम बहुसंख्यक स्वरूप को बदलना चाहते हैं, लेकिन ऐसा नहीं होने दिया जायेगा।" वे राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के कटु आलोचक रहे और मुस्लिम हितों के लिए लगातार संघर्ष करते रहे।

क्या इस सब के बावजूद वे धर्मनिरपेक्षतावादी कहलाने के अधिकारी हैं ?

एक बात और। श्रीमती इन्दिरा गांधी की तरह उन्होंने भी अपने पुत्र को अपना उत्तराधिकारी बनाया, जब कि महाराजा हरिसिंह का विरोध करते समय उनका एक नारा यह भी था कि वंशागत शासन समाप्त किया जाना चाहिए। उनके परिवार के अनेक लोगों पर भ्रष्टाचार के आरोप लगे। शेख स्वयं भी दूध के धुले न थे।

ऐसे व्यक्ति के निधन पर चुप रहना तो समझ में आता है, लेकिन श्रद्धांजलियां भेंट करने में कोई तुक नहीं। उनके निधन पर केन्द्रीय सरकार ने अपने दफ्तरों में छुट्टी रखी। जनता ने इस बात को पसन्द नहीं किया।

मेरठ में दंगा क्यों हुआ ?

सितम्बर के प्रथम सप्ताह के अन्तिम दिनों में मेरठ के शाहघासा मुहल्ले में दंगा-फिसाद की भूमिका बनी, जिसके फलस्वरूप अब तक वहां चौदह व्यक्ति मारे जा चुके हैं और अनेक घायल हुए हैं। दंगा क्यों हुआ ? संक्षेप में कहना हो, तो कहा जायेगा कि दिल्ली की जामा मस्जिद के शाही इमाम की 'मेहरबानी' से। घटना क्रम इस प्रकार है –

उक्त मुहल्ले में पिप्पलेश्वर

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

महादेव का एक मन्दिर है, जो ६५ वर्ष पुराना है। इस मन्दिर की दूसरी मंजिल पर शिवलिंग स्थापित है। यहां चिर काल से पूजा-अर्चना होती चली आ रही है। निचली मंजिल पर दूकानें हैं। मंदिर के परिसर में ही पीपल का पेड़ और कुआं है। इस मंदिर का निर्माण सन् १९१६ में हुआ था और सन् १९२३ में नगरपालिका ने इसका कर-निर्धारण किया था। यह भवन निर्विवाद रूप से हिन्दुओं का उपासना-स्थल और हिन्दू ट्रस्ट की सम्पत्ति है, जिसका सरकारी कागजात में भी उल्लेख है।

एक वर्ष पूर्व तक मन्दिर का काम सुचारु रूप से चलता आ रहा था। विवाद तब खड़ा किया गया, जब हिन्दुओं ने मन्दिर का जीर्णोद्धार करने का प्रयत्न किया। मुट्ठीभर स्थानीय मुसलमानों ने इसका विरोध किया। जब यह विवाद बढ़ा, तब मेरठ के पुलिस अधीक्षक श्री प्यारेलाल ने १२ अप्रैल को हिन्दुओं और मुसलमानों की बैठक बुलाई। इस बैठक में मुसलमानों के प्रतिनिधि ने कहा कि मन्दिर में बजने वाली घंटे की आवाजें मुसलमानों को अच्छी नहीं लगतीं। उस दिन इस मामले का निपटारा न हो सका। १८ अप्रैल को जब पीपल की जड़ के चारों ओर सफाई प्रारम्भ हुई, तब स्थानीय मुसलमानों ने इस पर आपत्ति की और पुलिस को सूचना दी कि हिन्दू मंदिर में नई मूर्ति बनवा रहे हैं और वहां झगड़ा हो गया है। पुलिस ने जांच की, तो दोनों शिकायतें असत्य पायी गईं। २० अप्रैल को फिर सरकारी अधिकारियों की उपस्थिति में बातचीत हुई। इन्हीं दिनों मेरठ नगर के विधायक मंजूर अहमद (इन्दिरा कांग्रेस) का नगर में आगमन हुआ। उनका कहना था कि शाहघासा में एक मजार है। उन्होंने वहां चादर चढ़ाने की घोषणा की। इसके फलस्वरूप जब नगर में तनाव फैला, तब पुलिस ने जांच की, जिसके दौरान मुसलमानों ने माना कि वहां कोई मजार नहीं। मजार है, लेकिन किसी दूसरी जगह। इसके बावजूद मजार की बात उछाली जाती रही। २२ अप्रैल को फिर कोतवाली में दोनों पक्षों की बैठक हुई। वहां भी मजार होने की बात सिद्ध न की जा सकी। २३ अप्रैल को फिर बैठक हुई और तय हुआ कि केवल दो व्यक्ति मंदिर में जाकर आरती कर पायेंगे। तब से १२ अगस्त तक प्रतिदिन घंटा और शंख बजाकर मंदिर में आरती सम्पन्न होती रही। उस दिन जन्माष्टमी थी। सायंकाल अचानक पुलिस ने मन्दिर पर ताला डाल दिया। यह देखकर मुहल्ले के हिन्दू कोतवाली गये और आरती करने की अनुमति मांगी। अनुमति मिल गई, लेकिन आधी रात को चार व्यक्ति आरती करने के आरोप में

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

गिरफ्तार कर लिये गए। समझौता-वार्त्ता चलती रही और २० अगस्त को समझौता हो भी गया। २१ अगस्त को धूमधाम से पूजा-अर्चना हुई। इसी दिन जामा मस्जिद के शाही इमाम सय्यद अब्दुल्ला बुखारी मेरठ आये और उन्होंने मुसलमानों की गुप्त बैठक में भाषण दिया। शाही इमाम से सलाह-मशविरे के बाद सायंकाल मुसलमानों ने हिन्दुओं द्वारा पिप्पलेश्वर महादेव के मन्दिर में पूजा करने पर आपत्ति की। उनकी इस शिकायत के आधार पर प्रशासन ने अधिक लोगों के मन्दिर में जाने और वहां घंटा बजाने पर रोक लगा दी। घंटा उतार दिया गया। इसके बाद ५ सितम्बर तक कोई घटना नहीं हुई। पांच सितम्बर को सवेरे साढ़े दस बजे शाही इमाम फिर मेरठ पधारे। उन्होंने बन्द कमरे में मुसलमानों से मशविरा किया। अगले दिन शाह-घासा मुहल्ले में बम विस्फोट हुआ और मंदिर के पुजारी को छुरा घोंपा गया। उसकी अस्पताल में मृत्यु हो गयी। सात सितम्बर को कर्फ्यू लागू कर दिया गया। मुसलमानों ने पुलिस पर हमले किये।

पिछले एक महीने में शाही इमाम तीन बार मेरठ गये। उनके दौरे के फलस्वरूप विवाद उलझता गया और अन्ततः उसने दंगे का रूप धारण कर लिया। ८ सितम्बर को जब शाही इमाम ने फिर मेरठ में घुसने का प्रयत्न किया, तब उन्हें रोक दिया गया। यदि उन्हें पहले ही रोक दिया जाता,तो दंगा न होता और जन-धन की हानि न होती। ०

इन्ग्रेड फेरर मनीषा आनन्द बनीं

देहरादून। २० अगस्त को वैदिक साधन आश्रम तपोवन के सायंकालीन यज्ञ में ईसाई पादरी की कन्या मिस इन्ग्रेड फेरर को वैदिक धर्म की दीक्षा देकर उनका नाम मनीषा आनन्द रखा गया। कुमारी मनीषा आनन्द डाक्टर आनन्द सुमन के विचारों से प्रभावित थीं। डाक्टर आनन्द सुमन के द्वारा ही उन्हें दीक्षा दी गई।

डाक्टर आनन्द सुमन ने मनीषा आनन्द को सत्यार्थ-प्रकाश एवं गीता भेंट की व सभी ने मिलकर आशीर्वाद दिया।

अपने–अपने क्षेत्र में
हिन्दू रक्षा समिति स्थापित करें।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

—प्रो० बलराज मधोक

भारतीय जनसंघ की प्रासंगिकता

आज हिन्दुस्तान फिर चौराहे पर खड़ा है। जिन तत्त्वों द्वारा और जिस ढंग से १९४७ में मातृभूमि के टुकड़े हुए थे और हिन्दुस्तान की धरती पर पूर्व और पश्चिम में दो नये इस्लामी राज्य कायम हुए थे, उन तत्त्वों ने फिर सक्रिय होकर १९४७ के पूर्व के रंगढंग अपना लिए हैं। अब उनकी पीठ पर न केवल पाकिस्तान और बंगलादेश हैं, अपितु सभी इस्लामी विशेष रूप से अरब देशों का अथाह धन और हर प्रकार का समर्थन उनके साथ है। इसलिए अब वे खण्डित भारत का इस्लामीकरण करके सारे देश को ही एक बड़ा पाकिस्तान बनाने के कुचक्र चला रहे हैं। फलस्वरूप देश की एकता ही नहीं अपितु उसका अस्तित्व और हिन्दू पहचान भी संकट में पड़ गए हैं।

आर्थिक दृष्टि से समाजवाद के नाम पर लोगों के जीवन पर सरकार का शिकंजा निरन्तर बढ़ रहा है। स्वराज्य का अर्थ कोटा-परमिट राज्य और भ्रष्टाचार हो गया है।

लोकतन्त्र के नाम पर एक दल का ही नहीं, अपितु एक परिवार का शासन स्थापित हो गया है। मुस्लिमों के वोट लेने के लिए मुस्लिम तुष्टीकरण में सभी राजनैतिक दलों का निहित स्वार्थ उत्पन्न हो गया है। वे सभी सैक्युलरिज्म और धर्मनिरपेक्षता के नाम पर राष्ट्रविरोधी तत्त्वों का चरण चुम्बन कर रहे हैं और राष्ट्रीय हिन्दू समाज को त्रस्त कर रहे हैं।

विदेश नीति का आधार भी मुस्लिम तुष्टीकरण बन गया है। पश्चिम एशिया के सम्बन्ध में सरकार की नीति से ऐसा लगने लगा है मानो हिन्दुस्तान एक छोटा-सा अरब देश है और अरबों से भी अधिक अरब बनने का प्रयत्न कर रहा है।

ऐसी परिस्थिति में भारतीय जनसंघ जैसे राष्ट्रवादी और हिन्दुत्ववादी दल की आवश्यकता पहले से कहीं अधिक है। "राजा कालस्य कारणम्" शाश्वत सत्य है। जिस समाज का अपने देश की राजनीति पर प्रभाव नहीं होता, वह मृतप्राय हो जाता है और कोई भी उसके हितों की चिन्ता नहीं करता। यही स्थिति आज हिन्दुस्तान में हिन्दू समाज की हो रही है। हिन्दू के नाम पर अपनी-अपनी दूकानें चलाने वाली संस्थाएं भी राजनीति के

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

क्षेत्र में ऐसे दलों का साथ दे रही हैं, जो मुस्लिमपरस्ती और पाकपरस्ती में कांग्रेस से भी आगे बढ़ने का प्रयत्न कर रहे हैं। उनके नेताओं को मुस्लिमों को तुष्ट करने के लिए मस्जिदों में जाकर नमाज पढ़ने में भी शर्म नहीं आती। फलस्वरूप हिन्दू समाज की स्थिति अपने ही देश में अनाथ और असहाय जैसी हो गई है। उसकी भावनाओं, उसकी संस्कृति और उसके हितों की राजनैतिक क्षेत्र में प्रभावशाली अभिव्यक्ति के लिए जनसंघ को पुनः सशक्त और प्रभावशाली बनाना अनिवार्य हो गया है। यही जनसंघ की प्रासंगिकता है।

जनसंघ के चिंतन और नीतियों के चार मूल स्तम्भ हैं। पहला स्तम्भ राष्ट्रवाद है। जनसंघ हिन्दुस्तान को हिन्दू राष्ट्र मानता है और इसे हिन्दू राज्य बनाने के लिए कृतसंकल्प है। इसका सुविचारित मत है कि हिन्दू राज्य बने बिना भारत हिन्दू राष्ट्र भी नहीं रह सकेगा।

दूसरा स्तम्भ लोकतन्त्र है। भारतीय जनसंघ की विचारों की स्वतन्त्रता पर आधारित शासनतन्त्र में आस्था है। लोकतन्त्र के कई रूप हो सकते हैं, परन्तु रूप जो भी हो, उसका आधार विचारों की स्वतन्त्रता ही हो सकता है। जहाँ प्रेस की स्वतन्त्रता समेत विचारों की स्वतन्त्रता नहीं, वहां लोकतंत्र जीवित नहीं रह सकता।

आर्थिक क्षेत्र में जनसंघ ऐसी जनकल्याणवादी अर्थव्यवस्था का पक्ष-धर है, जिसमें जन-जन का कल्याण हो, परन्तु सरकार का हस्तक्षेप कम से कम हो। शास्त्रों के अनुसार जिस राज्य में राज्य व्यापारी बन जाता है, वह राज्य नष्ट हो जाता है। समाजवाद के नाम पर आज जो अर्थव्यवस्था देश पर लादी जा रही है, उसके कारण आर्थिक जीवन में सरकार का एका-धिकार निरन्तर बढ़ रहा है। देश में बढ़ते भ्रष्टाचार और गरीब तथा अमीर के बीच बढ़ती खाई का यही प्रमुख कारण है। अतः जनसंघ समाजवाद को, जिसका उद्देश्य उत्पादन व वितरण के साधनों पर सरकार का एकाधिकार स्थापित करना है, देश के लिए हितकर नहीं मानता। जनसंघ ऐसी स्वाव-लम्बी अर्थव्यवस्था का पक्षधर है, जिसमें कृषि, जो भारत का मूल उद्योग है और ग्राम विकास को प्राथमिकता मिले। औद्योगिक उत्पादन श्रमप्रधान छोटी इकाइयों में किया जाये, जिससे उत्पादन के साथ रोजगार भी बढ़ सके। सरकार को आर्थिक क्षेत्र में आर्थिक कारणों से ही आना चाहिए, राजनैतिक कारणों से नहीं। जब कभी सरकार आर्थिक क्षेत्र में आए, प्रति-द्वन्द्वी के रूप में आए, एकाधिकारी के रूप में नहीं। उपभोक्ता के हित प्रतिद्वन्द्विता की अर्थनीति में ही सुरक्षित रह सकते हैं। एकाधिकार किसी

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

का भी हो बुरा, है और सरकार का, जिसके पास पुलिस और सेना की शक्ति भी होती है, एकाधिकार सबसे बुरा होता है।

जनसंघ के चिंतन और नीति का चौथा स्तम्भ, सर्वधर्म/पंथ समभाव के भारतीय सिद्धान्त पर आधारित धर्म राज्य (Rule of law) है। सैक्युलरिज्म एक नकारात्मक अवधारणा है। इसका अर्थ धर्म और परमात्मा को नकारना है। यह 'थियोक्रेसी' अथवा मजहबी राज्य का उलट है। हिन्दू राज्य कभी भी मजहबी राज्य न हुआ है, न हो सकता है। इतिहास इस बात का साक्षी है। जब सारे संसार में ईसाई और मुसलमान मजहब के नाम पर मार-काट कर रहे थे, उनकी मतान्धता से बचकर आए यहूदियों और पारसियों को हिन्दुस्तान में ही अभय-दान और शरण मिली थी। धर्म अर्थात् नैतिक मूल्य और नियम किसी भी स्वस्थ समाज और राष्ट्र की जीवनधारा होता है। इसे 'मजहब' के साथ गल्त-मल्त करना धर्म के मूल अर्थ और धर्म के स्रोत से अनभिज्ञता का सूचक है। जो समाज धर्मनिरपेक्ष होगा, वह अनैतिकता और भ्रष्टाचार की ओर बढ़ेगा। इसलिए जनसंघ धर्मनिरपेक्ष के स्थान पर धर्मसापेक्ष समाज और राष्ट्र का पक्षधर है, जिसमें सभी पन्थों और मजहबों के लोगों को अपनी पूजा-पद्धति की स्वतन्त्रता हो, परन्तु सभी धर्म के शाश्वत मूल्यों का पालन करें।

आज हिन्दुस्तान को नई दिशा देने और इसे ठीक रास्ते पर चलाने के लिए इन चार स्तम्भों पर खड़े भारतीय जनसंघ को बलशाली और सशक्त बनाना देश की सबसे बड़ी आवश्यकता है। इस काम में सभी हिन्दुत्ववादी और राष्ट्रवादी तत्त्वों, संगठनों और संस्थाओं को सक्रिय सहयोग देना चाहिए।

नोट लेख में लिखित विचारों में सर्वधर्मसमभाव की बात समझ से परे है। हम सभी को पूजा-पाठ की स्वतंत्रता देने के पक्षधर हैं, किन्तु सर्वधर्मसमभाव शब्द से सहमत नहीं।

—सम्पादक

श्री रघुवीर सिंह शास्त्री का निधन

अभी-अभी समाचार मिला है कि सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के भूतपूर्व मंत्री श्री रघुवीर सिंह शास्त्री का २९-९-१९८२ को देहान्त हो गया।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

विचारों के लिए सम्पादक उत्तरदायी नहीं।

आपका धर्मरक्षाभियान प्रशंसनीय है

पूजनीया बहन जी,

चरणस्पर्श।

मैं जन-ज्ञान में प्रकाशित आपके विचारों से बहुत प्रभावित हूं। आपकी जितनी भी प्रशंसा की जाये, कम हैं। मैंने आपकी पत्रिका कुछ लोगों में बांटी। वे भी प्रभावित हुए। आपने और महात्मा वेदभिक्षु जी ने जो धर्म-रक्षाभियान प्रारम्भ किया है, वह प्रशंसनीय है। हमारे देश को आप जैसी वीर बहनों की आवश्यकता है। आप पर जो अभियोग चलाये गये हैं, आप उनसे निराश न हों। अच्छे कामों में कठिनाइयों का सामना तो करना ही पड़ता है। मैं आप की और आपके सहयोगियों की दीर्घायु की कामना करता हूं।

जंगीलाल सिंह

बदीर

प्रतिमास शतांश भेजूंगा

बहनजी,

चरणस्पर्श।

जन-ज्ञान और आपकी पुस्तिकाओं के माध्यम से मुझे आप द्वारा प्रारम्भ किये गये महान् और साहसपूर्ण धर्मरक्षाभियान संबंधी जानकारी मिली। मेरा विश्वास है कि वैदिक धर्म, आर्यावर्त्त और मानव जाति की रक्षा ऐसे अभियानों से ही होगी। मैंने प्रतिमास अपनी आय का शतांश आपको भेजने का निश्चय किया है। मेरी ईश्वर से प्रार्थना है कि वह इस देश के प्रत्येक निवासी को शक्ति दे कि वह इस अभियान में आपको सहयोग देकर इसे सफल बनाये।

व्यंकटाचार्य द्विवेदी

कोहमारा

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

आपका प्रयास गौरवास्पद है

आदरणीया बहनजी,

सादर नमस्ते ।

जन-ज्ञान के माध्यम से यह पर्याप्त विश्वास हो चला है कि भारत राष्ट्र को सीधा खड़ा करने का बीड़ा आपने उठाया है और आप उसे अपने अस्तित्व व वर्चस्व का बोध कराने का समर्पित प्रयास कर रही हैं। यह बहुत ही गौरव की बात है। हम हिन्दू आज अपने इतिहास और संस्कृति को भूल चुके हैं, विदेशी आक्रान्ताओं द्वारा या विदेशी लेखकों द्वारा प्रस्तुत ऐतिहासिक भवनों को मुगलकालीन भवन कहते हुए नहीं अघाते और उनकी संस्कृति का गुणगान करते हुए नहीं थकते। पाठ्य पुस्तकों से लेकर शोध लेखों तक में उन्हीं घिसी-पिटी अप्रामाणिक युक्तियों द्वारा उन्हीं बातों को उलट-पुलट करके बतलाया जाता है।

जन-ज्ञान से यह अपेक्षा है कि वह उन ऐतिहासिक पन्नों को भी उलटने की कोशिश करे, जिनसे अपनी सांस्कृतिक गरिमा को कलंकित करने वाली बातों का करारा जवाब दिया जा सके।

मुस्लिम समुदाय की एकमात्र मजहबी किताब कुरान के बारे में आपके जन-ज्ञान में बहुत कुछ पढ़ने को मिलता है। कुरान में बहुत ही दूषित और घृणा फैलाने वाली शिक्षाएं हैं। यह मैंने डा० श्रीराम आर्य की पुस्तक 'कुरान दर्पण' में पढ़ कर जाना है। उनकी शिक्षाएं प्राकृतिक नियमों के विपरीत जाती हैं। इसलिए अवैज्ञानिक और अग्राह्य हैं। मगर उनमें तर्क करने को तो प्रोत्साहन मिलता नहीं सिर्फ थोपी हुई बातों पर ईमान लाने का ही आग्रह होता है। कुरान में कही हुई बातों से जरा भी इधर-उधर खिसकने के लिए वे तैयार नहीं होते। इसीलिए तर्क से उनको घबराहट होती है। युक्ति की बात न मानकर आक्रमण पर उतरना ही उन्हें पसन्द आता है।

उदाहरणार्थ फैजाबाद से अंजुमन इस्लाहुल मुस्लिमीन का पत्र उनकी मनोवृत्ति जाहिर करता है। कुछ रु० भेजे हैं, ताकि आर्य (हिन्दू) के जागरण के कार्य में मेरा भी एक कण सम्मिलित हो सके। मुझे आपसे बहुत आशा बँध रही है कि आपने जो सत्य-प्रकाश की लौ जलाई है, वह चिर स्थायी रहेगी।

आपने वेदों को भाषा-टीका सहित प्रकाशित करा कर मानव कल्याण हेतु अति सराहनीय कार्य किया है। ईश्वर आपको सारी बाधाओं पर विजय पाने की क्षमता दें।

बरौनी

अरुण प्रसाद शर्मा

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

मैं तन-मन-धन से आपके साथ हूँ

आदरणीया दीदी जी,

सादर चरणस्पर्श।

मैं प्रतिज्ञा करता हूं कि आपने जो पवित्र कार्य प्रारम्भ किया है, उस कार्य को पूर्ण करने में मैं अपना जीवन भी होम करने से पीछे नहीं हटूंगा। आपके इस धर्म-युद्ध में मैं तन-मन-धन से आपके साथ हूं। आज मैं भारत को पूर्ण स्वतन्त्र, धर्मपरायण, हिन्दू गणराज्य घोषित कराने का संकल्प लेता हूं। जीवन की अन्तिम सांस तक जो भी हो सकेगा, वह मैं करता रहूंगा।

आपने सभी भाइयों से बहुत सामयिक अपील की है। आज जरूरत इस बात की है कि सभी हिन्दू भाई एक साथ खड़े हो जायें और संसार के लोगों को बता दें कि हिन्दुओं की नसों में लाल रक्त बह रहा है, पानी नहीं।

आपने सोये हुए शेरों को जगाने का जो शुभ कार्य प्रारम्भ किया है, भगवान् उसमें अवश्य आपको सहायता देगा। अगर आज भी हिन्दू सोते रहे तो आने वाली पीढ़ियां उन्हें कभी क्षमा नहीं करेंगी। लेकिन दुःख है कि इसके बाद भी हिन्दू कायरों की तरह सो रहे हैं। आज जरूरत इस बात की है कि सभी हिन्दू प्रतिज्ञा करें कि जब तक उनके शरीर में एक बूंद भी रक्त है वे हिन्दू धर्म की रक्षा में तत्पर रहेंगे।

हमारा पथ कांटों से भरा है। हमें अनेक बाधायें पार करनी हैं। विरोधी हमें कुचलने का प्रयास करेंगे। लेकिन हमें इन सब से अपनी रक्षा कर अपना कार्य करना होगा। तभी हम सफल हो पायेंगे।

दीपक सक्सेना

झांसी

आपके सम्पादकीय खुली पुस्तक के समान हैं

परम आदरणीय बहन पं० राकेशरानी जी,

सादर चरणस्पर्श।

जन-ज्ञान बहुत समय से हमारे यहां आता है, किन्तु मैंने कभी इसे पूर्ण रूप से नहीं पढ़ा। जब पढ़ा तो महसूस हुआ कि मैं वास्तव में एक गहन अन्धकारपूर्ण जीवन बिता रहा था। एक साथ जन-ज्ञान के विगत कई वर्षों के अंकों का अध्ययन किया है। नवीन अंक में 'सिख क्या थे…?' प्रसिद्ध पत्रकार श्री अरुण शोरी के विचारों पर आधारित तथ्य पूर्णतः प्रमाणिक हैं। आपके सम्पादकीय राष्ट्रचिन्तकों हेतु एक खुली पुस्तक के समान प्रतीत होते है। मेरा विश्वास है कि सरकार आपका कुछ न बिगाड़ सकेगी।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

साथ ही देश के समस्त पत्रकार बन्धुओं से अनुरोध है कि वे आपकी आवाज को जन-जन तक पहुंचाने हेतु एवं आपका साथ देने हेतु हर समय तैयार रहें, क्योंकि यह उनकी एक कुशल, निष्पक्ष व निःस्वार्थ बहन व पत्रकार की स्पष्टवादिता पर उंगली उठाया जाना है, जो असहनीय है। भगवान् राष्ट्र-निर्माताओं को सद्बुद्धि दे, जिससे वे राष्ट्रहित विचार सकें।

मेरठ नगर

सुधाकर 'आशावादी'

राकेशरानी जी पर से मुकद्दमे वापस लिये जायें

महोदय,

जनज्ञान मासिक की सम्पादिका एवं दयानन्द संस्थान, नई दिल्ली की अध्यक्षा पं. राकेशरानी को एक बार पुनः गिरफ्तार करके जो भेदभावपूर्ण रवैया अपनाया गया है, उससे शासन की मुस्लिम तुष्टीकरण की नीति का पर्दा फाश होता है। जन-ज्ञान के जिन लेखों पर धारा १५३-ए लगायी गई है, उनका अध्ययन करने से ज्ञात होता है कि उन लेखों में सच्चा इतिहास लिखा गया है। यदि सत्य घटना लिखने पर किसी सम्प्रदाय-विशेष को आपत्ति होती है, तो केवल उसके तुष्टीकरण हेतु राष्ट्रहित की बात करने वाले को दंड देना कहां का न्याय है? अकबर महान् (?) यदि किरण देवी द्वारा प्रताड़ित किया जाता है, तो इसे लिखने में क्या बुराई है, जबकि बलात्कार करने के उद्देश्य से अकबर ने किरण देवी का अपहरण करवा लिया था।

इस संदर्भ में ध्यान देने योग्य बात यह है कि नई दिल्ली तथा समस्त देश से प्रकाशित होने वाली मुस्लिम उर्दू पत्र-पत्रिकायें जिस प्रकार से साम्प्रदायिक और पृथक्तावादी लेख लिखा करती हैं, उन पर यदि सरकार ध्यान दे तो शायद उन सभी पत्रों पर धारा १५३-ए लग सकती है। खेद है कि सरकार उन पत्रों के विरुद्ध तो कोई कार्रवाई नहीं करती और राष्ट्रहित में कही गई बातों पर हिन्दुओं के विरुद्ध कार्रवाई करती है।

मेरा सरकार से अनुरोध हैं कि पं० राकेशरानी के विरुद्ध सभी मुकद्दमे अविलम्ब वापस लिये जायें।

विनायक भारती

लखनऊ

अस्तित्व की रक्षा के लिए

महोदय,

प्रत्येक हिन्दू यह शपथ ले कि वह स्वयं को गर्व के साथ हिन्दू कहेगा। वास्तव में आजादी के बाद राजनीतिबाजों ने राजनीति की गंदी चालों से

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

हिन्दू शब्द की ऐसी दुर्दशा की है कि यह शब्द साधारण जन के के बीच एक गाली का द्योतक हो गया है। यह कार्य उन्होंने मुस्लिम और ईसाई वोटों के लालच से किया है। ये राजनीतिबाज विभिन्न उपजातियों की भावना को उभारते हैं तुम ब्राह्मण हो, तुम ठाकुर हो, तुम यादव हो इत्यादि। इसके पश्चात् वे हिन्दुओं को गाली देकर मुस्लिम और ईसाई मतों को बटोरने का प्रयास करते हैं।

एक शब्द धर्मनिरपेक्षता का भी इन्हीं लोगों ने गलत ढंग से प्रचार किया है। आज धर्मनिरपेक्षता का अर्थ है स्वयं को हिन्दू न कहना। प्रत्येक नेता यह सफाई देता रहता है कि वह धर्मनिरपेक्ष है और धर्मनिरपेक्ष होने का प्रमाणपत्र हिन्दुओं को बुरा कह कर मिलता है, ऐसी धारणा इन राजनीतिबाजों की है।

आज इस संकट की घड़ी में आवश्यकता इस बात की है कि हम जात-पात की भावना से ऊपर उठें और स्वयं को डंके की चोट पर निर्भीक स्वर से हिन्दू कहें।

इलाहाबाद राजीव मिश्र

मेरा तन-मन-धन अर्पित है

आदरणीया बहन राकेशरानी जी
सादर नमस्ते।

मैं जून मास के अन्तिम सप्ताह में आपके कार्यालय में पहुंचा। परन्तु आपसे भेंट न हो सकी। आदरणीय वेदभिक्षु जी से भेंट हुई। उनकी दशा कुछ ठीक न थी। दवाई आदि का सेवन कर रहे थे।

मैंने बहुत पहले पुस्तकों का आदेश दिया था। जन-ज्ञान निःशुल्क ही २० आदमियों को दे रहा हूं।

धन्य हैं आप कि इतनी ओजस्वी भाषा में सच्चाई को बहरे कानों तक पहुंचा रही है।

मैं एक अवकाशप्राप्त शिक्षक हूं। तन-मन-धन से आपकी इस अग्नि-शिखा में हुत होना चाहता हूं। आपको ५०/- का चैक भेज रहा हूं। मुझे जन-ज्ञान मासिक का आजीवन ग्राहक दर्ज कर लें।

पुस्तकें भी भेज दें। मैं घर-घर पहुंचा कर इन ठण्डी पहाड़ियों के निवासियों की धमनियों में गरमी लाऊंगा।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

'हिन्दू' की भावनाओं से खिलवाड़ देखा नहीं जा रहा।

मुझे आशा है कि सारा हिन्दू राष्ट्र राकेशरानी जी का समर्थन करेगा। आपका सारा सहयोगी वर्ग बधाई का पात्र है। प्रभु श्री वेद भिक्षु: जी को दीर्घायु करें।

सुन्दरनगर

केदारनाथ

सरस्वती : दुर्गा को एक साथ नमन !

श्रद्धेय मां,

१३ सितम्बर को भीलवाड़ा में आपको देखा। रात्रि को ११ बजे आपकी वाणी सुनी और मैं मंत्रमुग्ध रह गया। मैं सनातनधर्मी मूर्तिपूजक हूं, दुर्गा की नियमित रूप से उपासना करता हूं। किन्तु आपकी मंत्रमुग्ध करने वाली वाणी सुनकर मुझे लगा कि मैं साक्षात् दुर्गा मां के दर्शन कर रहा हूं।

मैंने बहुत भाषण सुने हैं, पर जैसा आपका सुना, हृदय को छू लेने वाला, वह उपमा रहित है। ३०-४० हजार जनता जिस मौन के साथ ३५-४० मिनट आपकी वाणी सांस रोक कर सुन रही थी, उससे तो यही लगता है कि आपमें दैवी शक्ति है।

मेरा जीवन धन्य हो गया। मैं व्रत लेता हूं कि भविष्य में अपनी पूरी शक्ति हिन्दू धर्म की सेवा में ही लगाऊंगा।

भीलवाड़ा

राजदेव कुमार गहलौत

आप जैसी वीर बहनों की आवश्यकता है

पूजनीया वीरांगना बहन

पंडिता राकेश रानी जी,

चरण स्पर्श।

मैंने आपके द्वारा सम्पादित 'जनज्ञान' मासिक पत्रिका पढ़ी। मैं उससे प्रभावित हूं। जो अपने को हिन्दू मानते हैं, प्रायः वे सभी प्रभावित हो सकते हैं। उसमें आपके विचार पढ़कर मुझे बहुत प्रसन्नता हुई, परन्तु यह जानकर दुःख भी हुआ कि आप संकटग्रस्त हैं। आपके ऊपर बहुत-से मुकद्दमे चलाये जा रहे हैं। निराशा की कोई बात नहीं। आपकी विजय होगी। आप अपने कर्त्तव्य पर दृढ़ रहें, भगवान् पर भरोसा रखें। मैं आशा करता हूं कि आप निराश न हुआ करेंगी।

हमारे देश में आप जैसी वीर बहनों की आवश्यकता है। मुझे पूर्ण विश्वास है कि आप जैसी कमंठ वीर महिला और वेदभिक्षु जैसी महान्

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

विभूति अगर देश को प्राप्त हो तो वह अवश्य ही पतन की ओर न जाकर उन्नति के उच्च शिखर पर चढ़ सकेगा।

मैं भगवान् से यही प्रार्थना करता हूं कि वे आपका और वेदभिक्षु:जी का उत्साह बढ़ाते रहें, जिससे देश का कल्याण हो सके।

आपके आह्वान पर आपको यथाशक्ति सहायता करने के लिए मैं दृढ़ संकल्प लेता हूं। मेरी आर्थिक स्थिति तो उतनी अच्छी नहीं, फिर भी मैं आपको अपनी बहन मानकर आपके साथ हूं और साथ रहूंगा, यह मेरी दृढ़ प्रतिज्ञा है। समय-समय पर सहायतार्थ रकम भी भेजता रहूंगा। अभी मैं हिन्दू रक्षा समिति के 'प्राथमिक सदस्य' का सदस्यता शुल्क २५ रुपये भेज रहा हूं।

बहन जी, आपसे मेरा अनुरोध है कि आप हिम्मत से काम लें; उसे खोएँ नहीं। अन्त में आपकी विजय निश्चित है।

आप सदा सुखी एवं प्रसन्न रहें और आप व वेदभिक्षु: जी अपने लक्ष्य में विजय प्राप्त करें, इसी शुभ कामना के साथ—

राजगोविन्द सिंह शास्त्री

बोकारो थरमल

तुच्छ भेंट स्वीकारें

आदरणीय बहन जी
व आदरणीय वेदभिक्षु: जी,

सादर चरणस्पर्श।

जन-ज्ञान मासिक का भाद्रपद अंक प्राप्त हुआ। पाठकों को इस पत्रिका के प्राप्त होने की लालसा लगी रहती है। पत्रिका देश, धर्म व समाज पर आये भावी संकटों से हमें परिचित करा रही है और उसका सामना करने के लिए मार्ग भी दिखा रही है।

धर्म रक्षा के लिए १०) भेज रहा हूं। तुच्छ भेंट स्वीकारें (अभी विद्यार्थी हूं)। प्रयास कर रहा हूं कि कुछ धन संग्रह करके संस्थान को पहुंचा दूं।

आज यह हिन्दू समाज अन्धा हो रहा है। धर्म, देश, समाज पर संकट छाया हुआ है। इन्हें नहीं सूझ रहा। इन्हें केवल कमाने की चिन्ता है। एक पैसा धर्म रक्षा के लिए देने को तैयार नहीं। वैसे लाखों की सम्पत्ति है। क्या किया जाए?

आत्मा बहुत दु:खी होती है। इनके बच्चे शराब, सिनेमा, जुआ, वेश्यालयों में हजारों रुपये उड़ा रहे हैं पर धर्म और देश की रक्षा के नाम पर ये राक्षस एक पैसा भी नहीं देते। अरे मेरे हिन्दू बन्धुओ, इन्हे समझाओ। तभी काम अच्छी प्रकार चलेगा।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

वर्तमान समस्याएं और उनका समाधान

[हिन्दुत्व के प्रखर चिन्तक सुप्रसिद्ध उपन्यासकार श्री वैद्य गुरुदत्त जी की लेखनी से]

जब से इस्लामी आक्रमण इस देश पर आरम्भ हुए, तभी से हिन्दुस्तान के रहने वाले उनका प्रतिरोध करते रहे हैं। सन् ७१२ ईसवी में सिन्ध पर प्रथम इस्लामी आक्रमण हुआ था और उसका प्रतिरोध सिन्ध के राजा दाहर ने किया था। पीछे गजनी के महमूद ने भारत में लूट मचाने के विचार से कई आक्रमण किये। इनका भी यत्र-तत्र प्रतिरोध होता रहा। जब मुहम्मद गौरी ने दिल्ली में अपना राज्य स्थापित किया, तब भी प्रतिरोध हुआ था। ये सब प्रतिरोध हिन्दुस्तानी शासकों द्वारा विदेशियों के ही विरुद्ध थे।

इसके उपरान्त भी जब इस्लामी शासन स्थापित हो गया था, तब भी प्रतिरोध हुआ था - पठानों के राज्य काल में और मुगलों के राज्यकाल में भी —राजपूतों द्वारा, मराठों द्वारा, बुन्देलों द्वारा और अन्त में सिखों द्वारा। इन सब प्रतिरोधों में देशवासी विदेशियों के विरुद्ध लड़े थे।

समाज में जन्म-जाति तथा ऊँच-नीच के भेदभाव तथा संगठनात्मक साधनों में न्यूनता आ जाने से विदेशियों का प्रतिरोध सफल न हो सका। इस पर भी प्रतिरोध होता रहा और इस प्रतिरोध ने अन्त में भारत में इस्लामी राज्य को जर्जर करके रख दिया। अभिप्राय यह है कि सन् ७१२ ईसवी से लेकर सन् १७५७ ईसवी तक जो संघर्ष रहा, वह विदेशी आक्रान्ताओं और देश-रक्षकों में था। यह संघर्ष विदेशियों के विरुद्ध स्वदेश-प्रेमियों का था।

इस प्रकार जहां तक हिन्दुस्तान के रहने वालों का संघर्ष था, वह देश के रहने वालों का विदेशियों के विरुद्ध ही था। इस विशुद्ध राजनीतिक संघर्ष में आक्रान्ता मुसलमान और यूरोपियन (पुर्तगाली, फ्रांसीसी तथा अंग्रेज भी) मजहब को आश्रय और उद्देश्य बना कर युद्ध करते रहे।

विदेशियों के इन आक्रमणों और शासनों द्वारा मजहबों को आधार बनाने कापरिणाम यह हुआ कि देशवासियों का विरोध उनके मजहबों का विरोध ही माना जाने लगा। मजहब का विरोध करने वाले भी मजहबी बन गये। सन् ७१२ ईसवी से लेकर सन् १७५७ ईसवी तक (जब हिन्दुस्तान में मुसलमानी राज्य की अन्येष्टि हुई) और सन् १७५७ से लेकर १९४७ तक अंग्रेजी शासन का विरोध करने वाले भी एक मजहब बन गये। वास्तव में विरोध करने वले

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

हिन्दुस्तान के रहने वाले हिन्दू ही थे। वे विदेशी आक्रान्ताओं का सदियों तक विरोध करते रहे थे और क्योंकि आक्रान्ता मजहवी बन कर यहां आये, इस कारण उनके विरोधी भी एक मजहब मान लिये गये। वास्तव में हिन्दू हिन्दुस्तान के रहने वाले लोग हैं, हिन्दुस्तान से प्रेम करने वाले हैं और इसकी खुशहाली के लिए त्याग तथा तपस्या करते रहे हैं और जब तक हिन्दू नाम रहेगा, ये देश की सुरक्षा और खुशहाली के लिए त्याग तथा तपस्या करते रहेंगे।

हिन्दू मजहब नहीं है

हिन्दू मजहब नहीं है। हिन्दुस्तान के रहने वाले हिन्दू हैं।

विचारणीय है कि मजहब क्या होता है ? भूमण्डल के दो बड़े मजहबों पर विचार करें तो मजहब शब्द के अर्थ स्पष्ट हो जायेंगे। दो बड़े मजहब हैं—इस्लाम और ईसाइयत। इन दोनों को उनके अनुयायी भी मजहब ही मानते हैं। ईसाई मजहब दो सहस्र वर्ष पुराना है और इस्लाम तेरह वर्ष से चला आ रहा है।

पहले ईसाई मत पर ही विचार करेंगे। बाइबल में एक कथन है—

Let not your heart be troubled: Ye believe in God, believe also in me.

(तुम चिन्ता न करो, तुम परमात्मा में और मुझमें विश्वास रखो।) और भी लिखा है—

Jesus saith unto him, I am the way, and the truth, and the life; no man cometh unto the Father, but by me.

अर्थात् यशु मसीह ने उसे कहा—मैं हीं मार्ग हूं, मैं ही सच्चाई हूँ और जीवन हूँ। कोई परमात्मा से नहीं मिल सकता, बिना मेरी सहायता के।

एक अन्य स्थान पर कहा है—

All that ever came before me are thieves and robbers.

वे जो कभी मुझसे पहले आये थे, चोर और लुटेरे थे।

इन कथनों में कोई भी बुद्धिगम्य नहीं है। सब कुछ पूर्णरूपेण विश्वास और श्रद्धा पर आधारित है। बस, हमारा कहना यह है कि यह मजहब है।

क्या यह सत्य माना जा सकता है कि हजरत ईसा से पहले जो (पैगम्बर) आये थे, वे सब चोर और लुटेरे थे ? क्या यह माना जा सकता है कि घोर पाप कर्मों का करने वाला हजरत ईसा पर ईमान लाने से उन पाप कर्मों के फल से बच जायेगा ? इसमें कोई युक्ति नहीं।

इसी प्रकार इस्लाम भी मजहब है। एक आयत का अभिप्राय है तुम उनके लिए क्षमा की प्रार्थना करो, या क्षमा की प्रार्थना न करो; यदि तुम

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

सत्तर बार भी उनके लिये क्षमा की प्रार्थना करोगे तो भी अल्लाह उन्हें कदापि क्षमा नहीं करेगा। यह इसलिये कि उन्होंने अल्लाह और पैगम्बर (रसूल) से कुफ्र किया है और अल्लाह अवज्ञाकारियों (नाफरमानी करने वालों) को मार्ग नहीं दिखाता।

इसी प्रकार एक अन्य स्थान पर कहा है—

अल्लाह कहता है—ऐ पैगम्बर! तुम कहो कि लोगों में तुम सबकी तरफ उस अल्लाह के भेजे हुए हो, जिसकी बादशाही आसमान और जमीन पर है; उसके सिवा कोई पूजित नहीं। वही जिलाता और मारता है। तो अल्लाह पर ईमान लाओ और उसके भेजे हुए उसके अनपढ़ नबी पर, जो अल्लाह और उसकी किताबों पर ईमान रखते हैं और उन्हीं की पैरवी करो, शायद तुम सीधी राह पर आ जाओ।

और अन्य स्थान पर कुरआन में कहा है—

सो तुम्हारे परवरदिगार की कसम कि जब वे लोग आपसी झगड़ों में तुमको मुन्सिफ न जानें और फिर तुम्हारे फैसले को न मानें, तब तक वे ईमान वाले न होंगे।

इस प्रकार अनेक उदाहरण दिये जा सकते हैं जिनमें यह कहा गया है कि जो कुछ पैगम्बर साहब कहते हैं, वही सत्य है और उसे न मानो तो तुम ईमान वाले (मजहब के मानने वाले) नहीं कहे जा सकते।

बस, इसी को हम मजहब मानते हैं। बिना हील-हुज्जत के गुरु, पीर-पैगम्बर तथा रसूल की बात को मानना मजहब है। अथवा बिना बुद्धि द्वारा परीक्षा किये किसी पुस्तक को मार्गदर्शक मान लेना मजहब है।

और हमारा कहना है कि किसी की भी कही बात को जब तक बुद्धि स्वीकार न करे तब तक न मानना मजहब का न होना है।

हिन्दू धर्मग्रन्थ क्या कहते हैं? भगवद्गीता में कहा है—

दूरेण ह्यवरं कर्म बुद्धियोगाद्धनंजय।

अर्थात् हे अर्जुन! बुद्धि से दूर कर्म निकृष्ट है।

इसी कारण हम कहते हैं कि गीता के मानने वाले मजहबी नहीं हैं। मजहब वह है जिसमें रसूल, गुरु, पीर, पैगम्बर की बात को बिना सोचे-समझे स्वीकार करने के लिये कहा जाये।

हिन्दू अपने मजहब को राज्य कार्य में दखल नहीं देने देते। इसी कारण हमारा दावा है कि यदि हिन्दू-पद्धति पर राज्य होगा तो वह मजहबी राज्य नहीं होगा।

जहां मनुष्य की प्रवृत्ति बुद्धिगम्य होगी, वहां मजहब अर्थात् किसी पर

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

अन्ध श्रद्धा रह नहीं सकती।

हिन्दू धर्मशास्त्र बुद्धि को पथ-प्रदर्शक मानते हैं। हिन्दुओं के विख्यात स्मृति ग्रन्थ मनुस्मृति में दस लक्षणों में 'धी' और 'विद्या' भी हैं। 'धी' का अर्थ है बुद्धि और 'विद्या' का अर्थ है ज्ञान। अर्थात् इनका प्रयोग करना धर्म के लक्षणों में है। यह हिन्दू धर्म की ही विशेषता है।

यही कारण है कि हिन्दुस्तान के राज्यों में जव तक का इतिहास मिलता है, राज्य कार्य में मजहव का समावेश नहीं मिलता। इस परम्परा में परिवर्त्तन जैनों और बौद्धों के काल में आया था। अन्यथा मजहव और राज्य असम्वन्धित ही रहे हैं।

हमने मजहव की व्यवस्था में कहा है कि वे विचार अथवा वे व्यवहार जो विना बुद्धि से विचार किये, केवल मात्र श्रद्धावश स्वीकार किये जायें, वे मजहवी होते हैं। ये कार्य (श्रद्धायुक्त विचार से प्रेरित होते हुए भी) वाहरी लक्षणों से प्रदर्शित होते हैं। यथातिलक लगाना, चोटी रखना, यज्ञोपवीत धारण करना, सुन्नत करवाना, पांच कक्के, सलीव धारण करना इत्यादि। ये मजहव चिह्न जव भी किसी अर्थयुक्त विचार से सम्वन्धित होंगे और किसी बुद्धियुक्त उद्देश्य को प्रकट करेंगे,वे मजहवी लक्षण न रहकर धर्म के लक्षण वन जायगे।

हिन्दू एक समुदाय है और उसमें अनेक मत (मजहव) हैं। वे मत परस्पर-विरोधी भी हैं। इस पर भी वे मतों में विरोध होने पर झगड़ते नहीं। यह वात इस्लाम और ईसाइयत में नहीं है। वे विना विचार किये अपने मत के पैगम्वर की वात मानने पर विवश हैं और फिर उनके पैगम्वर की वात (जैसी वे समझते हैं) कोई न माने तो उसे मार डालने योग्य समझते हैं।

इस्लाम की इसी प्रवृत्ति के अधीन इस्लाम के वाहर वालों के साथ उनके व्यवहार की वात छोड़ दी जाये तो भी उनके अपने मजहव वालों से मजहवी वातों पर किंचित् मात्र मतभेद होनेपर रक्त की नदियां वहती देखी जाती हैं।

अभी कुछ वर्ष हुए पाकिस्तान में अहमदियों का कत्लेआम हो गया था, केवल इसलिये कि अहमदी यह मानते हैं कि हजरत मुहम्मद के उपरान्त उनके मजहव के वानी भी खुदा के पैगम्वर हैं।

ऐसी वात हिन्दुओं में नहीं है। इस प्रकार की घटना हिन्दू समुदाय में कहीं नहीं मिलती।

यदि हिन्दू एक मजहव नहीं, समाज नहीं, तो यह क्या है? हमारा कहना हैं कि यह एक राष्ट्र है। **राष्ट्र का अर्थ है वह जनसमूह जो समान संस्कृति रखता हुआ देश का शासक हो।** भारत की वर्तमान स्थिति में देश भारत है और राष्ट्र हिन्दू है। कठिनाई यह है कि अंग्रेजी शिक्षा से दूपित मानसिक

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

अवस्था के कारण हिन्दू राष्ट्र ने अपने में कुछ अराष्ट्रवादी तत्त्व घुस अ दिये हैं।

राष्ट्र को अंग्रेजी में 'स्टेट' कहते हैं। परन्तु स्टेट के अन्य भी बहुत-से अर्थ हैं। इस कारण यदि राष्ट्र की बजाय स्टेट शब्द का प्रयोग करना हो तो यह आवश्यक है कि यह स्पष्ट किया जाना चाहिये कि राष्ट्र किन अर्थों में स्टेट है।

Webster's International Dict. (Ed. 1967) में 'स्टेट' शब्द के दस अर्थ दिये गये हैं। उन दस अर्थों में तीन अर्थ ही हैं, जिनका सम्बन्ध देश, प्रजा और राज्य से है। इन तीनों में भी 'स्टेट' शब्द का अर्थ 5-ए ही राष्ट्र का अभिप्राय प्रकट करता है। वह अर्थ इस प्रकार है—

A body of people permanently occupying a definite territory and politically organised under a sovereign government almost entirely free from external control and possessing coercive power to maintion order within the community.

अर्थात् एक जनसमूह, जो एक भूमिखण्ड (देश) में स्थायी रूप से रहता हो और राजनीतिक विचार से एक संगठित स्व-सत्ता सम्पन्न शासक हो, पूर्णतः विदेशीय नियन्त्रण से मुक्त हो तथा अपने समुदाय में नियन्त्रण रखने की सामर्थ्य रखता हो।

परमात्मा के अस्तित्व को मानना अथवा ज्ञान-विज्ञान को प्राप्त करना मजहबी बातें नहीं हैं। न ही आवश्यकता है अपने मजहब की बात को किसी दूसरे मजहब से छिपाकर रखने की। यह तो ठीक है कि कोई भी व्यक्ति किसी दूसरे के मजहब की निन्दा न करे—हँसी न उड़ाये, परन्तु किसी एक मजहब की बात दूसरा न जान सके, यह अयुक्तिसंगत है। चोरी छिपे कोई बात करना अपराध है। साथ ही सभ्य भाषा में एक-दूसरे के सम्बन्ध में विचार व्यक्त करना क्षम्य है। सभ्य भाषा में विचार-विनिमय तथा आलोचना ज्ञान के स्रोत हैं। हां, एक-दूसरे के लिये निन्दनीय शब्दों का प्रयोग वर्जित होना चहिये। सभ्य-सौम्य भाषा में मजहबी बातों पर विचार गोष्ठियां होनी ही चाहियें। किसी मजहब को मानने वालों की संख्या में वृद्धि भी किसी प्रकार वर्जित नहीं हो सकती। यही हिन्दू जीवन मीमांसा का आधार है। विभिन्न विषयों पर वाद-विवाद अर्थात् शास्त्रार्थ अनादि काल से होते आये हैं। मजहबी झगड़े तो परस्पर विरोधी व्यवहार पर होते हैं। व्यवहार में विरोध राजनियम से वर्जित होता है।

हम कुछ एक उदाहरण देना चाहते हैं। कुर्बानी की गाय का जलूस निका-

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

लना एक व्यवहार है। यदि किसी मजहब को यह पसन्द न हो तो इसकी स्वीकृति नहीं दी जा सकती।

इसी प्रकार यहूदी काफिर हैं अथवा मुहम्मद साहब पर ईमान न लाने वाले काफिर हैं, कहना वर्जित नहीं। परन्तु काफिर होने से कोई मारे जाने योग्य है अथवा घृणा का पात्र है, यह एक व्यवहार से सम्बन्धित होने से वर्जित है।

हिन्दू राष्ट्र की कल्पना में विचार-विनिमय और विचार प्रसार की खुली छूट है, परन्तु परस्पर असभ्य व्यवहार पर प्रतिबन्ध है।

यह है हिन्दू राष्ट्रवाद। मजहब व्यक्तिगत बात है। पति-पत्नी, बहन-भाई, माता-पुत्र का मजहब भिन्न-भिन्न हो सकता है, परन्तु सबकी राष्ट्रीयता एक है अर्थात् उन बातों में, जिनका उल्लेख हमने राष्ट्र के लक्षणों में किया है, मतभेद नहीं हो सकता।

यदि भारत में हिन्दू राष्ट्र हो तो लोगों में मजहबों की भिन्नता से परस्पर विरोध नहीं होगा। हां, यदि राष्ट्र की बातें मानते हुए भी मजहब परस्पर लड़ने लगें तो फिर यह शासन का उत्तरदायित्व हो जाता है कि वह शांति बनाये रखे।

राष्ट्र प्राकृतिक विरोधों से तथा विदेशी आक्रान्ताओं से देश और देश के रहने वालों की रक्षा के लिये संगठन का नाम है।

सिकन्दर के काल की बात ही लें। सिकन्दर ने ३०० ईसवी में भारत पर आक्रमण किया था। सिकन्दर यूरोपीय इतिहास के अनुसार व्यास नदी से आगे नहीं बढ़ सका। (भारतीय इतिहास और ईरानी लेखकों के अनुसार सिकन्दर जेहलम के पश्चिमी तट से ही लौट गया था।)

वह आगे क्यों नहीं बढ़ सका था? इसमें कारण यह था कि उस समय भारत में छोटे-छोटे राज्य होते हुए भी एक राष्ट्र था और राष्ट्र-भावना बहुत प्रबल थी। जन-जन के मन में विदेशी आक्रान्ताओं से देश की रक्षा की भावना थी और सिकन्दर का जेहलम के किनारे पहुंचते-पहुंचते ही उत्साह भंग हो गया था। उसकी सेना हतोत्साह हो अपने नेता से बगावत करने के लिए तैयार हो गई थी।

अशोक से पूर्व तो किसी बाहरी शक्ति का भारत पर आक्रमण करने का साहस भी नहीं हुआ था। वह राष्ट्रीय भावना का ही चमत्कार था।

वर्तमान भारत और हिन्दू राष्ट्र

इस समय देश में हिन्दू राष्ट्र नहीं है।

आइये, राष्ट्र के लक्षणों को एक-एक कर लें और देखें कि ब्रिटिश काल के हिन्दुस्तान में और आज के भारत में वे लक्षण कहां तक मिलते हैं।

राष्ट्र के लक्षणों में एक लक्षण है—'ब्रह्म' अर्थात् किसी महान् व्यापक

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

शक्ति के अस्तित्व को स्वीकार करना जो मनुष्यों के जीवन से ऊपर हो और उच्छृंखलों, धूर्तों, बलशालियों तथा गुटबाजों को सन्मार्ग दिखाने वाली हो। आस्तिक जन इसे परमात्मा कहते हैं। परमात्मा को न मानने वाले उसे प्रकृति कहते हैं। कुछ लोग इसे कार्यफल कहते हैं। कुछ इसे जन-जन की पुकार कहते हैं।

जो लोग किसी शक्ति के अस्तित्व को नहीं मानते, वे कभी राज्य में शक्तिसम्पन्न हो जायें तो अनर्थ ही करते हैं।

आज भारत में ऐसी शक्ति को मानने वाला कोई दिखाई नहीं देता। विशेष रूप से जो लोग राज्य-सत्ता प्राप्त हैं, वे मन में भले ही कुछ समझते हों, व्यवहार में और वचन में वे परमात्मा अर्थात् अपने से ऊपर किसी शक्ति के अस्तित्व को नहीं मानते।

जब से स्वराज्य हुआ है, तब से ही देश में 'ब्रह्म' का विचार नहीं आया। यह ठीक है कि महात्मा गांधी रामधुन का नित्य गान करते थे, परन्तु आचरण में वे भी अनीश्वरवादी ही थे। ईश्वर पर विश्वास का अभिप्राय बलशाली की बात को मानकर उसके आदेश का पालन करने लगना नहीं।

सन् १९२२ में गांधी जी ने खिलाफत की खातिर पूर्ण भारत देश की भलाई को निछावर कर दिया था। उस समय गांधी जी भारत के बेताज बादशाह माने जाते थे। देश का सब सज्ञान वर्ग उन्हें अपना नेता समझता था। इन महानुभाव ने मुसलमानों की सहानुभूति प्राप्त करने के लिए, टर्की की जनता की इच्छा के विपरीत, भारत के तथा दुनिया भर की गैर-मुसलमान जनता के हितों के विपरीत खलीफा की गद्दी के लिये हिन्दुस्तान के भाग्य की बाजी लगा दी थी।

सत्याग्रह असफल हुआ। खिलाफत के अनुयायियों ने देश में हिन्दुओं के रक्त की नदियाँ बहानी आरम्भ कर दीं। परन्तु इन अपने को ईश्वर-भक्त कहने वाले को समझ नहीं आयी कि वे अन्याय का पक्ष ले रहे हैं और भविष्य में ऐसा नहीं करेंगे।

यह सन् १९२२ की बात थी और गांधी जी ने सन् १९४७ में भी उस खिलाफत के अनुयायियों के आगे घुटने टेके थे। यदि गांधी जी अपने असहयोग आन्दोलन की असफलता के उपरान्त राजनीति से पीछे हट जाते अथवा आततायियों का विरोध और उत्पीड़ितों को संगठित करने में लग जाते तो स्वराज्य प्राप्ति के समय देश का चित्र वह न होता जो अब हुआ है।

हम समझते हैं कि देश में राष्ट्र का वह लक्षण, जिसे ऊपर कहा गया है, देश में न ब्रिटिश काल में था, न अब स्वराज्य प्राप्ति के उपरान्त दिखाई देता

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

है। सन् १९४७ के उपरान्त तो ब्रह्म पर आस्था एक मजहबी बात मान ली गयी है।

परमात्मा पर विश्वास मजहब नहीं है। यह एक वैज्ञानिक तथ्य है। जैसे पृथिवी गोल है। पृथिवी सूर्य के चारों ओर घूमती है, सूर्य नहीं। जैसे यह और इसी प्रकार के वैज्ञानिक तथ्य हैं वैसे ही परमात्मा एक वैज्ञानिक तथ्य है।

वैदिक राष्ट्र अर्थात् हिन्दू राष्ट्र मजहब से पृथक् कल्पना है। इसके अन्तर्गत किसी देश अर्थात् भूमि खण्ड पर रहने वाले जनसमूह की बाहरी लोगों ओर प्राकृतिक प्रकोपों से रक्षा के उपाय हैं। यह मजहबी बात नहीं है।

भारत में दो बड़े समुदाय हैं जो अपनी जातीय श्रद्धा-भक्ति देश से बाहर बताते हैं। एक बड़ा समुदाय है मुसलमानों का। इनके नेता जब भी अवसर देखते हैं, यह बात भारत के रहने वालों पर स्पष्ट कर देते हैं कि भारत के प्रति उनकी वफादारी दूसरे दर्जे की है। अभी कुछ दिन पूर्व दिल्ली की जामा मस्जिद के इमाम बुखारी के विषय में यह कहा जा रहा था कि उसने एक वक्तव्य में कहा है कि एक मुसलमान की वफादारी पहले इस्लाम के लिये है और पीछे भारत के लिए.

सन् १९४६ में यही विचार देश-विभाजन का कारण बना था। सन् १९४६ के लेजिस्लेटिव असेम्बली के चुनाव इसी आधार पर हुए थे कि मुसलमान हिन्दुओं से पृथक् एक कौम हैं। इस कारण वे अपने लिये पृथक् देश (पाकिस्तान) चाहते हैं। **उस निर्वाचन में मुसलमान मतदाताओं में से लगभग ९५ प्रतिशत मत इसी आधार पर मुस्लिम लीग को मिले थे। जो पांच प्रतिशत के लगभग मत मुस्लिम लीग को नहीं मिले, उनमें से अधिकतर मत उत्तर-पश्चिमी सीमा प्रान्त में खान मिनिस्ट्री को तथा पंजाब में खिजर मिनिस्ट्री को मिले थे।**

उससे भी पहले मौलाना मुहम्मद अली यह ऐलान करते रहते थे कि उनकी वफादारी इस्लाम के प्रति पहले है और हिन्दुस्तान के प्रति पीछे।

देश-विभाजन के उपरान्त हिन्दुस्तान में सात-आठ करोड़ मुसलमान रह गये थे। इन सात-आठ करोड़ मुसलमानों में से प्रायः सबने सन् १९४६ में पाकिस्तान के पक्ष में मत दिया था। ऐसी अवस्था में यह मान लेने में कुछ संकोच नहीं किया जा सकता कि इनकी वफादारी यदि भारत के प्रति है तो दूसरे दर्जे पर है।

हिन्दुओं में भी कई मजहब हैं, परन्तु आज तक किसी भी हिन्दू ने अपने मजहब को देश के मुकाबले में न तो कभी खड़ा किया है, न ही मजहब को देश से ऊपर कहा है।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

हम समझते हैं कि हिन्दू राष्ट्र में इस प्रकार के मुसलमानों के लिये, जो देश के प्रति वफादारी को दूसरा दर्जा देते हों, स्थान नहीं है। वे देश का तथा राष्ट्र का अंग नहीं माने जा सकते।

राष्ट्र के बताये अंगों में ऐसे लोगों का, जो भारत के प्रति वफादारी को दूसरा दर्जा देते हों, न तो सहयोग हो सकता है, न ही स्थान। इस पर भी भारत में इनका क्या स्थान है, यह स्पष्ट किया जा सकता है।

एक बात यहां स्पष्ट करनी पड़ेगी कि कोई भी राष्ट्र अपने भीतर अराष्ट्रवादियों की संख्या बढ़ने नहीं दे सकता। मुसलमानों की संख्या सन् १९५१ से सन् १९७१ के बीच बहुत बढ़ी है। यह चिन्ता का विषय है। इसका प्रबन्ध कैसे किया जाये? इस पर विचार करना होगा।

मुसलमानों के अतिरिक्त ईसाई हैं। विशेष रूप में रोमन कैथोलिका इनकी वफादारी भी भारत से बाहर है। ये लोग कहते हैं कि रोम के पोप के प्रति इनकी वफादारी राजनीतिक नहीं है। वे यह भी कहते हैं कि वे भारत देश के वफादार नागरिक हैं। इस कारण यह स्वीकार करना करना ही पड़ेगा कि इनका मामला मुसलमानों से भिन्न है। इस पर भी जहां तक राष्ट्रीयता का प्रश्न है, इनको देश में विघटन की आशंका में कारण समझा जाना असम्भव नहीं।

गोहत्या और इस्लाम-ईसाइयत

इस्लामी राज्य में गो-हत्या एक मजहबी अधिकार समझा गया था और ईसाइयों के राज्य में गो-मांस खाना पेट भरने के अधिकार से उचित माना गया था। ये दोनों अधिकार युक्तिमुक्त नहीं हैं। गो-हत्या के विषय में हम कठोर नियंत्रण की आवश्यकता समझते हैं। दूध का स्थानापन्न अभी तक पता नहीं चला। इस कारण भी गो-वंश की रक्षा होनी चाहिये।

राष्ट्र के सब कार्य राज्य अपने डंडे के बल से नहीं कर सकता। यही हमने बताने का यत्न किया है। शासन का राष्ट्र के कार्यों में हस्तक्षेप सीमित ही है।

राज्य और राष्ट्र एक ही क्यों नहीं?

हिन्दू अर्थात् प्राचीन भारतीय प्रथा के अनुसार राज्य दंड है। यह अपने कर्त्तव्य दंड की सहायता से पूर्ण करता है। क्योंकि राष्ट्र के सब अंग दंड से नहीं चल सकते, इस कारण राज्य का नियंत्रण उन अंगों पर नहीं हो सकता।

क्या ऐसे कुछ कार्य हैं जो राष्ट्र के तो हैं, परन्तु राज्य उन्हें करने में अस-

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

मर्थ है। अथवा राज्य उनको करे तो दंडधारी होने से राज्य उनको बिगाड़ देगा।

हमारा मत है कि आइये, राष्ट्र के लक्षणों में देखें कि उनमें कौन-कौन कार्य ऐसे हैं, जो दंड [शासन] से नहीं हो सकते अथवा यदि वे दंड से किये जायें तो उनसे लाभ के स्थान पर हानि होने की सम्भावना है।

वेद में राष्ट्र के जो लक्षण बताये गये हैं, उन लक्षणों में से एक-एक को लेकर हम बताना चाहते हैं कि वे राज्य के हस्तक्षेप का विषय हैं अथवा नहीं।

वेद में पहली बात कही है—परमेश्वर। जब तक हम यह मानते हैं कि एक सर्वव्यापक, सर्वोपरि, सर्वशक्तिमान् तत्त्व है, तब तक विवाद नहीं। इसमें राज्य कुछ नहीं कर सकता। अधिक से अधिक राज्य यह कर सकता है (जो एक रूप में अब भी करता है) कि राज्याधिकारी राज्य पद को ग्रहण करते समय शपथ ले कि वह ईश्वर को साक्षी रखकर यह वचन देता है कि वह अपने कर्म को राज्य के नियमानुसार चलायेगा।

वर्तमान संविधान में इतनी छूट है कि वे लोग, जो परमात्मा को नहीं मानते, अपनी ईमानदारी और अपने अन्तरात्मा की सौगन्ध लेकर यही शपथ लेते हैं। प्रश्न यह है कि सबका अन्तरात्मा, जो कुछ भी वह है, क्या एक समान विचार और आदेश देने वाला यंत्र है? सब में सदा एक समान रहने वाला कोई तत्त्व है? यदि नहीं है तो उसका भरोसा कैसे किया जा सकता है?

मान लीजिये, एक प्रधानमंत्री अपने पद की शपथ लेते समय अपने अन्तरात्मा में यह समझता है कि भारत के संविधान को संसद् नहीं बदल सकती तथा इसको बदलने के लिये एक विशेष संविधान सभा ही सक्षम है। परन्तु एक ही वर्ष के उपरान्त वह यह समझने लगता है कि संविधान को बदलने की सामर्थ्य संसद् में है और उसे बदलने पर कोई आपत्ति नहीं कर सकता। तो वह प्रधानमंत्री अपने व्यवहार को बदलने में न्यायसंगत है अथवा नहीं?

इस कारण किसी व्यक्ति की अन्तरात्मा को साक्षी मान कर ली गयी शपथ अर्थहीन है। वह शपथ है ही नहीं। शपथ तो किसी अटल, स्थिर और सदा एक-से रहने वाले तत्त्व की ली जा सकती है। इसी प्रकार अपने मान-प्रतिष्ठा की सौगन्ध भी अर्थहीन है।

इसी कारण हमारा कहना है कि अपने अन्तरात्मा, 'कॉन्शैन्स', 'जमीर' इत्यादि की शपथ भी अर्थहीन है, क्योंकि ये परिवर्तनशील तत्त्व हैं।

शपथ किसी स्थायी तत्त्व की होनी चाहिये। वह तत्त्व प्रकृति हो सकती है, परन्तु जमीर, अन्तरात्मा इत्यादि नहीं हो सकता।

शपथ योग्य परमात्मा है।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

ऐसी शक्ति का कुछ भी नाम रखें, इससे अन्तर नहीं पड़ता।

यह शक्ति तो है। परन्तु इस शक्ति के स्वरूप के विषय में निश्चय करने का कार्य राज्य का नहीं है। यह व्यक्ति के अपने-अपने विचार की बात है। इसके स्वरूप का प्रचार और प्रसार राज्य का काम नहीं है। यदि राज्य यह कर्म करेगा तो वह उसे मनवाने के लिये बल का प्रयोग भी करेगा। तब यह तानाशाही हो जायेगी।

परन्तु राष्ट्र, राज्य सत्ता के विना, इस विषय में यत्न कर सकता है। उसके पास राज्य सत्ता के अतिरिक्त भी साधन हैं। वे साधन हैं—शिक्षा, विद्वानों के प्रवचन, विज्ञ लेखकों के लेख, कलाकारों के प्रदर्शन इत्यादि। ये सब बता सकते हैं, युक्ति-प्रतियुक्ति कर सकते हैं, प्रमाण से सिद्ध कर सकते हैं। इनमें कुछ ऐसे भी होंगे जो किसी पैगम्बर की भांति कह सकते हैं कि वह सातवें आसमान पर बैठा है और फरिश्तों से दुनिया की खबर लेता रहता है।

यह राष्ट्र का कार्य है। अभिप्राय यह है कि राष्ट्र के शिक्षा संचालकों का कार्य है कि जन-जन को परमात्मा के स्वरूप का दर्शन करायें। परन्तु राष्ट्र का यह अंग सेना, पुलिस और न्यायालयों से सम्बन्धित नहीं हो सकता।

इसी प्रकार विद्वान् लोग संसार की विभिन्न समस्याओं पर क्या विचार करते हैं, यह राष्ट्र के कार्यों के अन्तर्गत तो है, परन्तु यह कार्य भी राज्य से अर्थात् राज्य के दंड से पृथक् है। एक वाक्य में हम यह कह सकते हैं कि राष्ट्र पाठशालाओं, विद्यालयों और विश्वविद्यालयों का स्वामी है और राष्ट्र का यह अंग राज्य से पृथक् है। अभिप्राय यह है कि राष्ट्र डण्डे से स्वतंत्र होना चाहिये।

इस बात को कुछ स्पष्ट करने की आवश्यकता है। ऊपर हमने कहा है कि राष्ट्र को आस्तिक होना चाहिये। यदि कोई विद्यालय अथवा विश्वविद्यालय यह पढ़ाने लगे कि परमात्मा है ही नहीं, संसार में जिसकी लाठी उसकी भैंस है, तो यह राष्ट्र के मूलभूत आधार का विध्वंस करना होगा। वह अराष्ट्रीयता का अपराधी होगा और राष्ट्र राज्य की सहायता से उसको सन्मार्ग दिखा सकता है।

राष्ट्र का विधान यह है कि मनुष्य के कार्यों से ऊपर एक सर्वशक्तिमान् तत्त्व है।

यहां हम केवल इतना ही स्पष्ट करना चाहते हैं कि राज्य पूर्ण राष्ट्र नहीं। यह राष्ट्र का एक अंग मात्र है। राज्य के अतिरिक्त भी राष्ट्र के कार्य हैं। उन कार्यों का प्रवन्ध राष्ट्र को राज्य की सहायता के बिना करना चाहिये, उनमें राज्य की सहायता तभी ली जा सकती है, जब उन कार्यों को करने वाले

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

राष्ट्र-विरोधी कार्य बलपूर्वक करने लगें।

राष्ट्र के उन लक्षणों का जो अंग्रेजी शब्द कोश में कहे हैं, अध्ययन करने पर पता चलेगा कि राष्ट्र (स्टेट) राज्य से कुछ अधिक है। उसके अनुसार भी राष्ट्र एक जनसमूह है। जनसमूह का अभिप्राय है मनुष्यों का एक समूह, भेड़ों का नहीं। भेड़ों के समूह में और मनुष्यों के समूह में अन्तर है। भेड़ें इकट्ठी रहती हैं दो कारणों से। एक तो एक दूसरे को देखकर इकट्ठी रहती हैं, उनके स्वरूप में समानता रहती है तथा उनका एक-दूसरे से जन्म का सम्बन्ध होता है। इनके अतिरिक्त गड़रिये का डण्डा भी उनको इकट्ठा रखता है। परन्तु मनुष्य के इकट्ठे रहने का कारण इनके अतिरिक्त कुछ और भी होता है। वह कारण है विचार और आचार की समानता। मनुष्य अपने जैसे विचार और आचरण वालों में रहने से सुख अनुभव करता है। इसी कारण इस जनसमूह को जो समान रूप से व्यवहार रखते हैं, समाज कहते हैं। पशुओं (भेड़ों) के झुंड को समाज नहीं कहते।

इसका अभिप्राय यह हुआ कि स्टेट का अर्थ है एक समान आचार-व्यवहार रखने वाले मनुष्यों का समूह। यह स्वेच्छा से ही हो सकता है। विभिन्न आचार और व्यवहार के मनुष्यों का समूह स्वेच्छा से नहीं होता। कभी किसी स्थान पर विभिन्न विचार और आचार के लोगों को इकट्ठा रखा भी जा सकता है। वहां उनके आचार और व्यवहार में कुछ एक बातों में भी समानता न हो तो वे इकट्ठे नह रहीं सकते। वे लड़ पड़ेंगे।

आचार-विचार की समानता बलपूर्वक नहीं लायी जा सकती, अतः यह दंड विधान का विषय नहीं है। यह शिक्षा का विषय है, यह कानून का रूप नहीं।

इस कारण किसी देश में जनसमूह का निर्माण दंड विधान का विषय नहीं। जनसमूह का होना दो बातों पर निर्भर करता है। एक यह कि देश में रहने वाले मनुष्यों में कुछ बातें समान हित की हों। उन समान हित की बातों को देश के रहने वाले अपने हित में समझें। तब उस देश के रहने वाले एक-मानव-समूह बन जायेंगे। अन्यथा वह समूह नहीं रह सकेगा और यदि उसे बलपूर्वक सेना और पुलिस के बल से एक रखने का यत्न किया जायेगा तो वह भेड़ों का एक रेवड़ बन जायेगा। उसमें मानवता के लक्षण नहीं रहेंगे।

अतः शब्दकोश में प्रथम लक्षण राष्ट्र (स्टेट) का यह कथन है कि उसमें मनुष्यों का समूह रहता हो, जो कुछ एक बातों में अवश्य ही समान हित की भावना रखता हो।

समान हित की उन बातों में यदि उस जनसमूह का कोई अंश भेदभाव

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

करने लगे तो वह जनसमूह राष्ट्र नहीं रह सकता।

उदाहरण के रूप में हमने यह निश्चय किया है कि मजहवी मामलों में हम स्वतन्त्र हों। इसका अभिप्राय यह है कि एक जनसमूह में उतने ही मजहव हो सकते हैं जितने उसके घटक हैं।

इसे समझने के लिये मजहव के लक्षण करने होंगे अर्थात् मजहव के निश्चित अर्थ मानने होंगे।

एक मुसलमान यह मानता है कि उसे सुन्नत करवानी चाहिये, उसे खड़े होकर परमात्मा की वन्दगी करनी चाहिये और उसकी नमाज अरवी के शब्दों में होनी चाहिये। वह ऐसा मान सकता है। परन्तु वह किसी दूसरे को वैसा करने पर विवश नहीं कर सकता।

निजी आचार-विचार की वात को मजहव कहते हैं और यदि इस प्रकार के व्यवहारों में राजदण्ड का प्रयोग होगा तो वह उन अर्थों में राष्ट्र (स्टेट) नहीं होगा, जिन अर्थों में अंग्रेजी शब्दकोश में कहा है।

इससे स्पष्ट है कि अंग्रेजी शब्दकोश के लक्षणों में भी राष्ट्र का यह लक्षण ऐसा है जो दण्ड विधान के अधीन नहीं।

इसी प्रकार एक मनुष्य कलमा पढ़ता है और मानता है कि 'मुहम्मद रसूल इल्लाह' हैं। उसका साथी ऐसा नहीं भी मान सकता। यह मनाना वलपूर्वक नहीं हो सकता। जहां इसके लिए वलप्रयोग होगा, वहां राष्ट्र के इस लक्षण का विरोध होगा।

अंग्रेजी शब्दकोश में राष्ट्र (स्टेट) का दूसरा लक्षण है कि वह एक भूमि-खण्ड पर रहता हो।

किसी भूमि-खण्ड पर रहना क्या रहने वाले की इच्छा का विपय है अथवा वहां के राज्य का ? हम समझते हैं कि मनुष्य कहां रहे, यह उसके निजी विचार करने का विषय है। इसमें देश या राज्य हस्तक्षेप नहीं कर सकता।

इस विपय में वर्तमान व्यवस्था को समझना चाहिये। भूमण्डल के प्रायः सव देशों ने देश से वाहर जाने वालों पर और वाहर से देश में आने वालों पर प्रतिवन्ध लगा रखा है।

हम समझते हैं कि यह किसी भी मनुष्य को देश छोड़ने और भूमण्डल के किसी भी भूखण्ड पर जाकर रहने में वाधासूचक नहीं है। यह वहां के समाज का अंग वनने पर प्रतिवन्ध है।

उदाहरण के रूप में भारत का एक नागरिक भारत छोड़कर इटली में जाकर रहना चाहता है। उस मनुष्य ने यदि देश के और समाज के प्रति सव प्रकार के देय दे रखे हैं तो देश की सरकार उसे जाने का पासपोर्ट देने से इन-

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

कार नहीं कर सकती ।

यह एक नागरिक का कानूनी हक है कि उसे देश से बाहर जाकर विदेशों में घूमने, फिरने तथा रहने की अनुमति हो। हां, वह तब तक देश नहीं छोड़ सकता, जब तक उसने देश के टैक्स इत्यादि देय देने हों।

इस प्रकार कोई विदेश उसे अपने देश में तब तक घुसने नहीं दे सकता अर्थात् उसे वहां आने का प्रवेशपत्र नहीं दे सकता, जब तक उस देश को विश्वास नहीं हो जाता कि वह उनके समाज में किसी प्रकार का विस्फोट अथवा वहां के कानून से दण्डनीय कोई कार्य नहीं करने आ रहा।

हमारे कहने का अभिप्राय यह है कि राष्ट्र का दूसरा लक्षण कि वह एक भूमिखण्ड पर स्थायी रूप से रहता हो, कोई ऐसा लक्षण नहीं जो किसी दण्ड विधान से विवश कर कराया जाता है। मनुष्य स्वेच्छा से ही अपने जन्म के देश में रहता है।

राष्ट्र (स्टेट) के तीसरे लक्षण को राज्य-संचालित शब्द में बांधा जा सकता है। किसी राष्ट्र के उस भूमिखण्ड पर उसका स्वायत्त शासन हो। इसका अभिप्राय यह है कि वह राष्ट्र वहां शान्ति-व्यवस्था कायम रख सके। राष्ट्र यह व्यवस्था राज्य के द्वारा ही कायम रख सकता है।

इसी प्रकार लक्षण चार है कि किसी प्रकार का विदेशीय नियंत्रण इस राष्ट्र पर न हो। इसमें भी राष्ट्र को राज्य की सहायता की आवश्यकता होगी। हां, कई एक बातों में विदेशीय नियंत्रण विदेशी राज्य के बल से नहीं किया जाता। वैसे नियन्त्रण से बचने का उपाय भी राष्ट्र राज्य की सहायता के बिना कर सकता है।

इसका अभिप्राय यह है कि विदेशी प्रभाव दो प्रकार का होता है। एक तो राजकीय। उदाहरण के रूप में कोई विदेशी राज्य हमारी भूमि पर अधिकार जमाने का प्रयत्न करे। यह विदेशी राज्य सेना द्वारा ही कर सकता है और सेना द्वारा ही इसका विरोध हो सकता है।

विदेशी राज्य आक्रमण के बिना भी अपना प्रभाव उत्पन्न करने का यत्न कर सकता है। जैसे रूसी कम्युनिस्ट अथवा चीनी कम्युनिस्ट भारत राष्ट्र पर प्रभाव उत्पन्न कर रहे हैं। इसका विरोध राष्ट्र ही कर सकता है।

अतः विदेशीय नियन्त्रण से बचने के लिए एक क्षेत्र में राज्य कार्य करता है और दूसरे अन्य क्षेत्र में राष्ट्र राज्यातिरिक्त साधनों से कार्य करता है।

राष्ट्र (स्टेट) का पांचवां लक्षण है शान्ति रखने का सामर्थ्य। शान्ति से अभिप्राय केवल शान्ति-व्यवस्था ही नहीं। यह तो राज्य का ही कार्य है। आजकल के कानून में 'लॉ ऐंड आर्डर' का प्रयोग प्रत्यक्ष रूप में धर्म (कानून)

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

का उल्लंघन करने वालों को पकड़ कर दंडित करना माना जाता है। परन्तु इसका एक दूसरा स्वरूप भी है। अपराध अर्थात् धर्म का उल्लंघन मनुष्य मन से प्रेरित होकर करता है। यह प्रेरणा मुख्य रूप में दो स्रोतों से प्राप्त होती है। एक तो कामनाओं का सामर्थ्य से अधिक हो जाने के कारण; दूसरे कानूनी सुविधाओं के न मिलने अथवा कम मिलने के कारण। मनुष्य का सामर्थ्य असीम नहीं होता। परन्तु मन जो कामनाओं का स्थान है, वह अपनी उड़ान की असीम सामर्थ्य रखता है। जब कामनाएं व्यक्ति की सामर्थ्य के भीतर रहें तो वे पूर्ण होती रहती हैं। जब कामनाएं व्यक्ति की सामर्थ्य के बाहर चली जाती हैं तो पूर्ति के लिए सब प्रकार के अधर्माचरण की प्रेरणा देने लगती हैं। इस कारण कामनाओं और व्यक्ति की सामर्थ्य का संतुलन रखने के लिए ज्ञान की आवश्यकता होती है। यह शिक्षा का विषय है।

धर्म के उल्लंघन करने का एक दूसरा कारण हमने बताया है कानून द्वारा प्राप्त सुविधाओं का अपर्याप्त होना। तब कानून भंग करने की प्रेरणा होती है। जहां पहला कारण राष्ट्र के शिक्षा विभाग का क्षेत्र है, वहां दूसरा कारण देश के कानून और संविधान में सुधार का है।

यहां हमने यह बताने का यत्न किया है कि अंग्रेजी शब्दकोश के अर्थों में भी राष्ट्र के कुछ कार्य ऐसे हैं जो राज्य नहीं कर सकता और राज्य को वे नहीं करने चाहियें। वे कार्य राज्य के अतिरिक्त साधनों से राष्ट्र कर सकता है और उसे ही करने चाहियें।

राष्ट्र राज्य से बड़ा संस्थान है। राज्य राष्ट्र का एक अंग मात्र ही है।

हमारा यह कहना है कि मुसलमानी राज्य में भी हिन्दुस्तान में हिन्दू राष्ट्र ही था। दुर्भाग्य से राष्ट्र और राज्य में विरोध चल पड़ा और हिन्दू राष्ट्र के अपने स्वरूप को भली-भांति न पहचानने के कारण राज्य राष्ट्र से प्रबल हो गया।

चाहिये यह था कि राष्ट्र राज्य पर प्रभावी होता, परन्तु राष्ट्र में कुछ दोष घुस आने के कारण देश का राज्य राष्ट्र पर प्रभावी हो गया। पूर्ण राष्ट्र राज्य के पांव तले कुचला जाता रहा। सन् १९०० तक भी देश में राष्ट्र हिन्दू ही था—यद्यपि राज्य अंग्रेजों के अधीन चला गया था।

सन् १८५७ के स्वतन्त्रता संग्राम के उपरान्त अंग्रेज शासकों को समझ आया कि राज्य और राष्ट्र में असंगति है। जब सर ए० ओ० ह्यूम ने सेक्रेटरी ऑफ स्टेट फॉर इंडिया को यह रिपोर्ट दी थी कि हिन्दुस्तान की जनता राज्य से असन्तुष्ट है तो यह इस बात का प्रमाण था कि उस काल का राष्ट्र राज्य से तालमेल नहीं रखता था। यही बात मुसलमानी राज्य में थी। दोनों कालों

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

में सांझी बात यह थी कि राज्य इतना प्रबल था कि वह राष्ट्र की अवहेलना कर सकता था। दूसरे शब्दों में यह भी कहा जा सकता है कि राष्ट्र इतना दुर्बल था कि कुछ सहस्र राज्य अधिकारियों को सन्मार्ग नहीं दिखा सकता था।

इस पर भी यह स्पष्ट है कि मुसलमानी काल और ब्रिटिश् काल में राष्ट्र और राज्य दोनों थे और दोनों पृथक्-पृथक् थे।

यही बात आज देश में दिखाई देती है। राज्य और राष्ट्र में तालमेल नहीं है।

एक विशेष बात यह है कि राज्य का ढांचा प्रजातंत्रात्मक होने से राज्य ने राष्ट्र को कुछ दुर्नीतियुक्त ढंग से दबा कर रख रहा है। प्रजा के एक अंग को दूसरे अंग के विपरीत भड़का कर नेता देश में अराष्ट्रवादी अंगों को खड़ा कर रहे हैं और इस प्रकार वे लोग राज्याधिकारी बने हुए हैं जो राष्ट्र-विरोधी व्यवहार अपनाते हैं।

बात केवल इतनी है कि इन सब को हिन्दू नाम लेने में लज्जा आती है। वास्तव में यह लज्जा नहीं है। यह भय है मुसलमानों, ईसाइयों और विशेष रूप से विदेशियों का।

यदि हम सन् १९०६ से भारत के इतिहास का अध्ययन करें तो पता चलेगा कि हिन्दू नाम से देश के एक बहुत बड़े जनसमूह को पृथक् करने का षड्यन्त्र अंग्रेजी नीतिज्ञों ने किया है। मुसलमान अपने को एक मजहबी जन-समूह मानते हुए हिन्दू शब्द के विरुद्ध हो गये थे। जब लार्ड मिन्टो ने सन् १९०६ में यह घोषणा की थी कि देश के रहने वाले जनसमूह से मुसलमान एक पृथक् जनसमूह है तो मुसलमान हिन्दुओं से अपने को पृथक् मानने लगे।

यह अनुभव अंग्रेज राजनीति चलाने वालों को सन् १८५७ के स्वतंत्रता संग्राम के उपरान्त हुआ था कि राष्ट्र, देश के राज्य के विरुद्ध संगठित हो रहा है और उन्होंने राष्ट्र में दरार उत्पन्न करने का विचार बनाना आरम्भ कर दिया। इसी विचार को लेकर सर ए०ओ० ह्यूम ने जब कांग्रेस की स्थापना की थी तो मुसलमानों के डेलीगेटों का कांग्रेस में पृथक् 'कोटा' निर्धारित किया था।

हमारे अंग्रेजी पढ़े-लिखे 'बुद्धिमान्' लोग अंग्रेजों की इस नीति को अभी भी चालू रखने का यत्न कर रहे हैं। इस्लाम को एक मजहबी समुदाय मानने की बजाय हिन्दू को एक मजहबी समुदाय मान रहे हैं। इन बुद्धिमानों को न तो इतिहास का ज्ञान है, न ही भारत के जनमानस का।

वस्तुस्थिति यह है कि भूमण्डल में इस्लाम नाम से एक संगठन बन रहा है। उस संगठन के भय का अर्थ यूरोपियन लोग समझ ही नहीं रहे। वे

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

प्रजातन्त्र के गोरख-धन्धे में फंसे हुए इसे एक आर्थिक झगड़ा समझ रहे हैं। परन्तु जो कुछ ईरान अथवा फिलस्तीन में हो रहा है, वह आर्थिक झगड़ा नहीं है। वह मजहबी झगड़ा है और पूर्ण भूमण्डल की प्रजा की टांग पकड़ कर शताब्दियों पीछे ले जाने का प्रयास है। जो कुछ ईरान में हो रहा है, वह एक संकेतमात्र है, जो किसी भी दिन अफ्रीका और पश्चिम के देशों में प्रज्वलित हो जाने वाला है।

वास्तव में हिन्दू राष्ट्र के प्रवक्ता उस भूमण्डल में भड़कने वाली अग्नि का विरोध ही कर रहे हैं और भारत में अंग्रेजी कूटनीति का शिकार बने लोग हिन्दू शब्द का विरोध कर रहे हैं। हमारा दावा है कि वर्तमान शासन असली अर्थों में 'सैक्युलर' नहीं है। यह एक मजहबी राज्य है और अपने इस दूषित वर्ण को छिपाने के लिए सैक्युलरिज्म की छतरी लगाये घूम रहा है।

भूमण्डल के मुसलमानों की मनोवृत्ति का दिग्दर्शन ही ईरान और पाकिस्तान में हो रहा है, जिसका जानबूझकर अथवा अनजाने में वर्तमान भारत का शासन समर्थन कर रहा है।

रावी से मराको तक और भूमध्य सागर से लेकर आशा अन्तरीप तक जहां-जहां मुसलमानों का बस चलता है, वहाँ-वहाँ गैर-मुसलमानों को दूसरे दर्जे का नागरिक बनाने का यत्न किया जा रहा है। जहाँ तो मुसलमानों की संख्या का अनुपात बहुत अधिक है, वहाँ अभी संघर्ष प्रत्यक्ष नहीं हो रहा है। वहाँ मुसलमान गैर-मुसलमानों को भय का कारण नहीं मानते; परन्तु जिन-जिन देशों में मुसलमान अपने विरोध में कुछ भी बल देखते हैं, वहां संघर्ष प्रबल है।

भारत एक ऐसा देश है, जहाँ मुसलमान अभी प्रबल नहीं हैं। यहां वे अपनी जनसंख्या में वृद्धि कर रहे हैं। यदि परमात्मा न करे, भारत में मुसलमानों की जनसंख्या पचास प्रतिशत से ऊपर हो गई तो हम किस प्रकार यहां भी पाकिस्तान जैसा मजहबी राज्य स्थापित करने से उन्हें रोक सकेंगे।

भारत का शासन, जो सन् १९४७ से चल रहा है, वह देश को देश के रहने वालों का देश नहीं वरन् मुसलमानों का देश बनाने का यत्न कर रहा है।

इक्के-दुक्के मुसलमानों को छोड़कर सामान्य मुसलमानों को भारत का मजहबी आधार पर विभाजन पसन्द था। मुसलमान वही कर रहे हैं जो वे पिछले एक सहस्र वर्ष से कर रहे थे। अभिप्राय यह कि देश में मतांध मुसलमानों की जनसंख्या में वृद्धि और जहां-जहां मुसलमान बहुसंख्या में हो जाते हैं, वहां उस देश को पृथक् रखने का प्रयास है। यही अब कश्मीर में हो रहा है।

हम इस्लाम का विरोध बौद्धिक स्तर पर वाद-विवाद से करना चाहते हैं।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

परन्तु जहां राजनीति में मजहबी वरीयता का प्रश्न है, वह राष्ट्र का प्रश्न है। राज्य को इसका विरोध करना चाहिए।

देश में राष्ट्र (स्टेट) का बहुसंख्यक जनसमूह देश की भलाई करने वाला हो। यह मजहबों के पचड़े से ऊपर हो, यही हिन्दू राष्ट्र का अभिप्राय है।

देशवासियों को मजहबी कहकर, उन्हें हीन कहकर अराष्ट्रवादियों को पनपने का अवसर यह कहकर देना कि हम बहुत उदार हैं, महान् मूर्खता का लक्षण है।

वे समझते हैं कि मुसलमान भी हमारी भांति उदार हो जायेंगे। परन्तु क्या तब वे मुसलमान ही रहेंगे? इस्लाम उदार हो जायेगा, ऐसा कहना अपने को मूर्ख सिद्ध करना होगा। मुसलमान मानते हैं कि इस्लाम के अतिरिक्त संसार में कुछ अन्य श्रेष्ठ हो ही नहीं सकता।

यहां हम एक बात ईसाइयों के विषय में भी लिख देना चाहते हैं। ईसाई देशों में, हमारा अभिप्राय है कि जिन देशों में ईसाइयों का राज्य है, वहां वैसा कुछ नहीं हो रहा, जैसा इस्लामी देशों में हो रहा है, यह ठीक है। इस पर भी हम पूछते हैं कि फिर धन देकर, झूठ बोलकर, सांसारिक प्रलोभन देकर ईसाई मत परिवर्तन क्यों करा रहे हैं? इसमें उनका क्या उद्देश्य है? हमारे विचार में उनका उद्देश्य भारत को ईसाईस्तान का रूप देना है।

हमारी शिक्षा का स्रोत ऑक्सफोर्ड विश्वविद्यालय है। यह विद्यालय आज से छः-सात सौ वर्ष पूर्व ईसाई धर्म के प्रचार के लिए स्थापित किया गया और आज तक उस विद्यालय में प्रत्यक्ष तथा अप्रत्यक्ष रूप में ईसाई धर्म के प्रचार का और इससे भूमण्डल में ईसाई राज्य स्थापित करने का यत्न किया जा रहा है। हमें ईसाई धर्म से द्वेष नहीं है। हम अज्ञानता और झूठ से घृणा करते हैं। ज्ञान और सत्य खुले मन का विषय है। इसके लिए वाद-विवाद द्वारा जानकारी प्राप्त करना एक साधन है।

अंग्रेज का राज्य भी मजहबी था। कम्पनी के राज्य की स्थापना के समय अर्थात् सन् १७५७ से ही ईसाई पादरियों को देश में ईसाइयत का प्रचार करने के लिए कम्पनी के फण्ड में से सहायता दी जाती थी। कानून के विरुद्ध भी उन्हें शासन का अंग समझ राज्य का संरक्षण दिया जाता था। जब-जब सरकार को किसी कर्मचारी की आवश्यकता होती थी, देशी हिन्दू अथवा मुसलमान से देशी ईसाई को वरीयता दी जाती थी। यह चलती रही सन् १९१० तक। रेल में यूरोपियन के लिए पृथक् डिब्बे आरक्षित किए जाते रहे और उनमें देशी ईसाई यूरोपियन समझकर स्थान पा जाते थे। तत्कालीन

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

राज्य में ईसाई होने से वह यूरोपियन बन जाता था अर्थात् वह शासक जाति का माना जाता था।

इस कारण हमारा मत है कि अंग्रेजी राज्य मजहवी राज्य था। राष्ट्र के स्वराज्य के लिए संघर्ष में किसी भी प्रमुख ईसाई ने कभी भाग नहीं लिया। वे अंग्रेज शासकों का पक्ष लेते थे और अंग्रेज अधिकारी भी ईसाइयों को ऐसा पद देते थे।

यह ठीक है कि कुछ भूले-भटके मुसलमान कांग्रेस में सम्मिलित होते रहे हैं और कदाचित् कुछ ईसाई भी भाग लेते रहे हों, परन्तु विरले ईसाइयों और मुसलमानों को स्वराज्य आन्दोलन में सम्मिलित होना ईसाइयों और मुसलमानों का स्वराज्य आन्दोलनों में भाग लेना नहीं समझा जा सकता।

देश के इतिहास को विकृत करना आरम्भ किया था ईसाई पादरियों ने, उसके उपरान्त ईसाई सरकार द्वारा स्थापित विश्वविद्यालयों की शिक्षा ने और उस मिथ्या शिक्षा को प्राप्त किए देश में घूम रहे अंग्रेजी पढ़े-लिखों ने।

मजहव और राष्ट्र

मजहव का राष्ट्र से कोई सम्वन्ध नहीं। इस पर भी जो मजहव किसी नागरिक की श्रद्धाभक्ति और राजनैतिक दृष्टि को देश के वाहर ले जाए, वह मजहव राष्ट्र का अंग नहीं हो सकता।

राजनैतिक दृष्टि से भूमण्डल के मुसलमानों की दृष्टि देश से वाहर रहती है। इस कारण प्रश्न यह है कि भारत राष्ट्र में मुसलमानों का क्या स्थान हो?

हमने एक मापदंड नियत किया है। इस्लाम में राजनीति और मजहव दोनों का मिश्रण है। मुसलमानों को केवल मजहव की सीमा में रहना पड़ेगा और देश से वाहर की राजनीति को देश की राजनीति से पृथक् रखना होगा। तभी वे भारत राष्ट्र के घटक हो सकते हैं। अभी तक मुसलमानों ने अपने को एक अन्तर्राष्ट्रीय राजनैतिक शक्ति मानना नहीं छोड़ा। इस कारण भारत राष्ट्र में उनका स्थान किस प्रकार हो सकता है?

अभी तक मुसलमानों ने अपने सामाजिक सम्वन्धों को देश के अन्य समुदायों से पृथक् रखा है। साथ ही वे देश में अपनी जनसंख्या की वृद्धि में यत्नशील हैं। इस कारण जो अपने सामाजिक सम्वन्धों को देश के कानून के अनुसार रखना चाहते हैं, जो मजहव को एक खुली किताव की भांति वाद-विवाद का विषय समझते हैं, क्या उनके साथ मुसलमान रह सकते हैं? जो अपने मजहव पर विवाद को पसन्द नहीं करते, परन्तु अपनी संख्या मजहव के प्रचार

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

के अतिरिक्त अन्य उपायों से बढ़ाने में लगे हैं और समाज के समान होकर नहीं रहना चाहते, उन्हें राष्ट्र का अंग कैसे माना जा सकता है ?

हमारा केवल एक मापदंड है। वह मुसलमान और ईसाई दोनों के लिए एक ही है। मजहब का सम्बन्ध है व्यक्तिगत आचार-विचार के साथ। जब मजहब एक समुदाय के संगठन का और देश के अन्य समुदायों से पृथक् होगा तो वह राष्ट्र से बाहर रहेगा। यदि उनकी देश में बहुसंख्या होगी तो ये लोग भारत में भी वही कुछ करेंगे जो वे पाकिस्तान, ईरान अथवा अन्य इस्लामी देशों में अल्पसंख्यकों के साथ कर रहे हैं।

पाकिस्तान में मुसलमान प्रथम दर्जे का नागरिक है और मुसलमान के अतिरिक्त अन्य मजहब वाले मुसलमानों के बराबर अधिकार नहीं रखते। क्या हिन्दुस्तान के मुसलमान भी यही विचार रखते हैं ? अब जब ये अल्प संख्या में हैं, वे इस विषय में मौन रहकर, अधिक बीवियां रखकर, धोखाधड़ी और औरतों का प्रलोभन देकर अपनी जनसंख्या बढ़ा रहे हैं, तो यह चिन्ता का विषय ही है, विशेषत: जब तक वे अपने को अन्य इस्लामी देशों की राजनीति का विरोधी नहीं सिद्ध कर देते।

ईसाइयों के विषय में भी यही बात है। जहां-जहां भी इनका बस चलता है, वे मजहबी राज्य चलाने का यत्न करते हैं। अभी जो कुछ त्रिपुरा में हुआ है और नागालैंड में स्वराज्यारम्भ से हो रहा है, वह कम चिन्ता का विषय नहीं।

जब कोई सही दिमाग वाला व्यक्ति ऐसा कानून बनवाना चाहता है, जिससे मजहब का प्रचार धन, औरत और अन्य सांसारिक सुख-सुविधाओं के बल पर किया जाना वर्जित हो तो ईसाई क्यों बावेला करें ? जो बल, छल, धोखाधड़ी प्रयोग करने का अधिकार चाहते हैं, भला वे कैसे देश और राष्ट्र के अंग बन सकते हैं ?

मजहब व्यक्तिगत प्रश्न है। यह एक व्यक्ति का विचार समूह है। उस पर विचार-विनिमय खुले रूप में होना चाहिए। जो खुले में विवेचना से तो कानून का संरक्षण चाहते हैं और धोखाधड़ी एवं धन-जन के प्रलोभनों से मजहब का प्रचार चाहते हैं, उनके लिए देश के भले लोगों के समान अधिकार का प्रश्न ही नहीं उठता।

हजरत मुहम्मद साहब के जीवन पर किंचित् मात्र भी कुछ कहने वाले के पेट में छुरा घोंप दिया जाता है; इण्डियन पीनल कोड की धारा १५३-ए कार्य करने लगती है। ये राष्ट्र का अंग बनने के लक्षण नहीं, वरन् राष्ट्र को अपने अधीन करने की बातें हैं।

क्या यहां गिनती करानी पड़ेगी कि कितने हिन्दुओं की हत्यायें मुसल-

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

मानों ने अपने राज्यकाल में तथा ब्रिटिश काल में की हैं—केवल मजहब के नाम पर ?

अब यही बात ईसाइयों ने करनी आरम्भ कर दी है। इस कारण हम सब नागरिकों के लिए एक समान नियम चाहते हैं। मजहब कोई गोली, बंदूक तथा छुरे से रक्षित विचार नहीं है। बंदूकें, तोपें देशों की रक्षा के लिए प्रयुक्त होती हैं, मानव विचारों के लिए नहीं। जो अपने मजहब और मजहबी रहनुमाओं को रेशम की थैली में लपेट कर रखना चाहते हैं, वे मजहब नहीं हैं। वे राजनैतिक षड्यन्त्र हैं।

जब इस्लाम की उत्पत्ति, इसके प्रयास और इस द्वारा की गई मानवता-विरोधी बातों की आलोचना की जाये और उसके लिए एक ओर तो कानून का संरक्षण पाया जाये और दूसरी ओर छुरे तथा बंदूके चलायी जायें, तब यह विचार करना ही होगा कि यह मजहब है अथवा राष्ट्र विरोधी अभियान।

रामनवमी एकता दिवस के रूप में मनाई जाये

महोदय,

आपकी प्रतिष्ठित पत्रिका के माध्यम से मैं प्रधानमन्त्री श्रीमती इन्दिरा गान्धी का ध्यान इस ओर आकृष्ट करना चाहता हूं कि वाल्मीकि रामायण के अध्ययन से ज्ञात होता है कि भगवान् रामचन्द्रजी सही अर्थों में महापुरुष थे और उन्होंने अनेक बड़े-बड़े कार्य किये। उन्होंने बिखरे राष्ट्र और समाज को एकता के सूत्र में बाँधा। उनका जीवन "जननी जन्मभूमिश्च स्वर्गादपि गरीयसी" इस उक्ति को चरितार्थ करता है। जब हमारा देश ऐसे महापुरुषों के दिखाये मार्ग से भ्रष्ट हो गया, तब हमारा वैयक्तिक और सामाजिक पतन प्रारम्भ हुआ। अन्ततः हममें इतनी गहरी फूट पड़ी कि विदेशी आक्रान्ताओं ने हमें लूटा और पराधीन बनाया। समय बदला। देश में स्वामी दयानन्द सरस्वती और महात्मा गांधी सदृश कुछ विभूतियों ने जन्म लिया, जिनके मार्ग-दर्शन में देश ने स्वाधीनता की लड़ाई लड़ी और विदेशी शासकों को देश से निकलने पर विवश किया।

आज जब हमारा देश आन्तरिक और बाह्य संकटों से घिरा है, भगवान् राम के अनुयायी उनकी शिक्षाओं पर चलकर देश को इन संकटों से उबार सकते हैं।

मेरी प्रधानमन्त्री जी से प्रार्थना है कि रामनवमी पर सरकारी अवकाश तो घोषित किया ही जाये, साथ ही इस दिन को सरकारी तौर पर एकता-दिवस के रूप में मनाने का आयोजन भी किया जाये।

नई दिल्ली — परमानन्द

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

गुरुओं के अनुयायी सोचें

—ज्ञानी ग्रानसिंह 'अमृतसरी'

श्री गुरु नानक देव जी महाराज से लेकर श्री गुरु गोविन्द सिंह जी महाराज तक दसों गुरुओं ने भारतवर्ष में रहने वाले सभी लोगों से समानता का व्यवहार किया था। वे सदा ही भारतीय संस्कृति तथा सत्य सनातन वैदिक धर्म (हिन्दू धर्म), वेद, शास्त्र, स्मृति, गौ, ब्राह्मण, गायत्री, सन्ध्या तथा यज्ञ आदि को हार्दिक श्रद्धा से मानते थे।

क्षत्रियों की आर्य परम्परा और गुरु साहिबान

श्री गुरु अर्जुन देव जी, श्री गुरु तेगबहादुर जी तथा श्री गुरु गोविन्द सिंहजी महाराज ने अपने पुत्रों सहित धर्म के चिह्न गौ तथा जनेऊ (यज्ञोपवीत) व वैदिक संस्कृति की रक्षा के लिए ही अपना बलिदान दिया था। अपनी खालसा 'आरज' (आर्य) फौज को हिन्दू धर्म की रक्षा के लिए ही श्री गोविन्द सिंह जी महाराज ने तैयार किया था। देखिए लिखा है—

"जो तुम सिख हमारे आरज। देवो सीस धरम के कारज।"

इस प्रकार उनका भाव भारत से विदेशी लोगों तथा पाखण्डी मत-मतान्तरों का विनाश करके अपने हिन्दू धर्म को बचाना ही था। हिमाचल प्रदेश में स्थित मण्डी के पास गुरुद्वारा रिवालसर साहब के बाहर अंग्रेजी, हिन्दी तथा पंजाबी में आज भी यह लिखा मिलता है कि गुरु गोविन्द सिंह जी ने भारत से पाखण्ड तथा अज्ञान को हटा कर भारतवर्ष की स्वतन्त्रता के लिए वहां के पहाड़ी राजाओं को एकत्रित करने का प्रयास किया। ये सब बातें आज भी श्री गोविन्द सिंह जी महाराज द्वारा रचित ग्रन्थों में ज्यों की त्यों लिखी हुई मिलती हैं।

गुरु गोविन्द सिंह जी ने खालसा फौज क्यों बनाई थी ?

"सकल जगत में खालसा पन्थ गाजे।
जगे धर्म हिन्दू सभी भण्ड भागे॥" (दशम ग्रन्थ)

[सारे संसार में लोग आर्य पंथ पर चलें, जिससे सनातन वैदिक हिन्दू

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

धर्म का प्रकाश होकर सब पाखण्ड मत दूर हो जायें।]

उनके साहित्य को देखने से पता चलता है कि वे आर्य-हिन्दू धर्म के उपासक तथा मत-मतान्तरों के सख्त विरोधी थे। उन्होंने स्पष्ट लिखा है कि नए-नए पन्थों (मतों) से मनुष्यों में आपसी विरोध बढ़ता है। जैसे—

जो कोई होत भयो जग सियाना।
तिन-तिन आपुनो पंथ चलाना।
परम पुरख किनहुं नहीं पायो। वैरवाद अहंकार बढ़ायो।
हम इस काज जगत में आए। धर्म हेतु गुरुदेव पठाए।
जहां-तहां तुम धर्म विथारो। दुष्ट दोखियन पकर पछारो।
(दशम ग्रन्थ)

आज भी सिख इतिहास (ले० खुशवन्तसिंह) में यह लिखा हुआ मिलता है कि गुरु गोविन्द सिंह जी ने खालसा फौज बनाते समय अपने योग्य शिष्यों को संस्कृत सीखने तथा आर्य-हिन्दू शास्त्रों का अध्ययन करने के लिए काशी भेजा। गुरु गोविन्द सिंह जी की फौज में सिपाहियों को ज्ञानी बनाने के लिए निर्मले साधु अध्यापक के रूप में सत्कार के साथ रखे जाते थे।

गुरु साहिबान और उनका प्राचीन धर्म

गुरु साहिबान वेद को ही ईश्वरीय ज्ञान मानते थे तथा वेदों के द्वारा बताए गए धर्म को ही प्राचीन ऋषियों के तुल्य अपना धर्म मानते थे। देखिए—

१. ओंकार वेद निर्मए। (गुरु ग्रन्थ श० म० १)

[ईश्वर ने सृष्टि के आदि में लगभग दो अरब वर्ष पूर्व सब मानवों के कल्याण के लिए वेद का प्रकाश किया।]

२. सुणियै जोग जुगन तन भेद।
सुणियै शासत सिमृत वेद।" (गुरु ग्रन्थ जपुजी)

[दुःखों का नाश करने के लिए वेदवाणी सुनो तथा योगाभ्यास करो।]

३. "वेद वखयान करत साधु,
भागहीन समझत नहीं खल।"
(तोड़ी मुहल्ला ५)

[साधु एवं विद्वान् वेद का व्याख्यान करते हैं, किन्तु मूर्ख जन उसे नहीं समझते।]

४. "वेद पाठ मति पापां खाए।" (गुरु ग्रन्थ साहब)

[नित्य किया गया वेद पाठ मन के पापों को नष्ट करता है।]

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

वेदानुसार न चलने वालों को श्री गुरु अर्जुन देव जी ने फटकारा। देखिए क्या लिखते हैं गुरु जी—

"वेदों में नाम उत्तम जो सुणे
नाहि फिरें ज्यों वेतालेया।
कहु नानक जिन सच तजिया
कूड़े लागे तिन जन्म जुए हारेया।"

[वेद के मार्ग को छोड़ कर किसी दूसरे मार्ग पर चलने वाले का जीवन ठीक वैसें ही दुःखी हो जाता है, जैसे जुए में अपने जीवन को हारे हुए व्यक्ति का जीवन।]

किस 'धर्म' के लिए गुरुघर ने बलिदान दिए ?

श्री गुरु तेग बहादुर जी को कैद करने के पश्चात् मुसलमान हाकिमों ने जब उन्हें बार-बार डराते-धमकाते हुए मुसलमान बनने की बात की, तो उन्होंने कहा कि मैं अपने धर्म को नहीं छोड़ सकता। तब मुसलमान हाकिमों ने कहा कि वह कौन-सा धर्म है, जिसे आप किसी भी मूल्य पर नहीं छोड़ना चाहते ? तब श्री गुरु तेगबहादुर जी ने उन निर्दयी मुसलमान हाकिमों को जो उत्तर दिया था, वह आज भी भारत के वायुमण्डल में गूंज रहा है। उन्होंने कहा—

"आज्ञा जो करतार की, वेद चार उचार।
धर्म ताको खास लख, हम तेहं करत प्रचार॥
वेदोक्त गुरु धर्म तीन लोक में चन्द।
वेद विरुद्ध अधर्म (मुसलमान) जो हम
नहीं करत पसन्द॥

श्री गुरु तेग बहादुर जी के पौत्र व श्री गोविन्द सिंह जी के पुत्रों ने मुसलमान मजहब को ठुकराते हुए उत्तर दिया था—

सुनत झुझार सिंघ रसाई।
बुझियो फतेह सिंघ सों भाई।
फतेह सिंघ सुन उत्तर दीना।
धर्म पितामह जनेऊ रख लीना।

अर्थात् हम अपने पितामह श्री गुरु तेगबहादुर जी की तरह ही उस वैदिक धर्म को नहीं छोड़ सकते, जिस जनेऊ वाले धर्म के लिए हमारे पितामह ने बलिदान दिया था।

गुरु साहिबान और चोटी-जनेऊ

चोटी तथा जनेऊ को श्री गुरु नानक देव जी से लेकर श्री गुरु गोविन्द

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

सिंह जी तक सारे गुरुओं ने धारण किया था। इस बात का भी इतिहास साक्षी है। देखिए —

१. "खलड़ी खपरी लकड़ी चमड़ी शिखा सूत धोती कीनी"

(राग आसा मुहल्ला १ शबद ३३)

२. "तिलक जंजु राखा प्रभु ताका।
कीनो वड़ो कलु मह साका।"

(विचित्र नाटक)

[कलियुग में हमारे पिता श्री गुरु तेगबहादुर जी ने अपने हिन्दू धर्म के चिह्न तिलक-जंजु की रक्षा के लिए बलिदान करके अद्‌भुत कार्य किया।]

श्री गुरु नानक देव जी के जनेऊ पहनने का प्रमाण भाई बाला जी वाली जन्म साखी के पृष्ठ ३० से ३३ तक में मिलता है। उसका कुछ अंश यहां प्रस्तुत है—

"तां बावे किहा जिवें तुहाडी रजाई। तां पण्डित ने किहा। हे नानक जी! इस जनेऊ नूं पवित्र करो। तां बाबा जी ने जनेऊ पाया।"

[अर्थात् पण्डितजो के समझाने पर गुरु नानक देव जी ने यज्ञोपवीत धारण किया।]

ओम्, सन्ध्या और गुरु साहिबा

सारे गुरु साहिबान पुराने रिवाजों के अनुसार ईश्वर के मुख्य नाम ओंकार, गायत्री तथा गायत्री मन्त्रवाली सन्ध्या में विश्वास रखते थे—

१. "एक ओंकार" सतनाम (गुरु ग्रन्थ साहब पृ० १)

[प्रभु का मुख्य नाम ओ३म् है। अतः उसी का नाम नित्यप्रति जप करना चाहिए।]

२. एहा सन्ध्या परवाण है जित हरि प्रभु मेरा चित आवै।
हरि सिगों प्रीति उपजै माया मोह जलावै।

(दशम ग्रन्थ)

[यह वेद मन्त्रों वाली सन्ध्या मन को पापों से हटाकर ईश्वर में लगाने का उत्तम साधन है।]

नमस्ते और गुरु ग्रंथ साहिब

१ नमस्ते अज़ाते। नमस्ते अपाते। (जापु साहिबा)

२ हरये नमस्ते हरये नमः। हरि करत नहीं दुःख जमह।

(गौड़ नामदेव जी शबद ८)

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

[दुःख व अज्ञान को दूर करने वाले प्रभु 'ओंकार' को वार-वार नमस्ते हो।]

मांस भक्षण और गुरु ग्रन्थ साहब

गुरु महाराज मांस, मछली, भांग, शराब आदि नशे का भी सख्त विरोध करते हैं। देखिए—

१. "कवीरा भंग मछली, जो जो प्राणी खाए।
तीरथ वरत नेम किए, सभे रसातल जाए॥"

[भांग तथा मछली का सेवन करने वाला व्यक्ति तीर्थ अथवा व्रत भी करे, तो भी नरक रूपी दुःख में ही गिरता है।]

२. "दुरमति मद जो पीवते, विखली पत कमली,
नाम रसायण जो रते, नानक सच अमली॥"
(आसा मुहल्ला ५ शवद ११४)

३. "यह मद पीते, नानका वहते घटीअह विकार।"
(वार विहागड़ा मरदाना शब्द १२)

[वे लोग महामूर्ख हैं, जो इस गंदी वस्तु शराव को पीते हैं और जीवन गंदा करते हैं। जीवन को सुखी करने का 'ओ३म्' जप से उत्तम कोई साधन नहीं।]

४. "जे रत लगे कपड़े जामा होए पलीत।
जो रत पीर्वाहि मानसा तिन क्यों निरमल चीत॥
(माझवार मुहल्ला १ शब्द ६)

[जब वाहर के कपड़ों पर लगा हुआ खून ही इतना वुरा लगता है, तो फिर रक्त वहाकर मांस, मछली आदि के खाने वाले व्यक्ति का अन्तर का चित्त (मन मन्दिर) प्रभु की उपासना के लिए कैसे शुद्ध रह सकता है।]

इस प्रकार मांस, शराव, भांग आदि नशों के सेवन के विरोध में गुरु ग्रन्थ साहिव के अनेक वचन उद्धृत किये जा सकते हैं। यहां नमूने के तौर पर कुछ ही दिखाये गये हैं।

श्री गुरु ग्रन्थ साहिब और जातिवाद

दसों गुरु महाराज वर्णाश्रम अर्थात् ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य तथा शूद्र को गुण कर्म स्वभाव के अनुसार मानते थे। ऐसे प्रमाण गुरु ग्रन्थ साहब में ही मिलते हैं, क्योंकि गुरु गोविन्द सिंह जी की फौज में सभी वर्णों के लोग थे,

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

इससे यह सिद्ध होता है कि गुरु महाराज जन्म से जातिवाद के पक्ष में नहीं थे। वे पूरी मानव जाति को एक जाति समझ कर सब का बराबर हित चाहते थे।

खत्री ब्राह्मण वैश शूद्र को जापे हरि मन्त्र जपैनी।
उपदेश चौंऊं वर्णा को सांझा ।।

[ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य तथा शूद्र को, गायत्री आदि वेद मन्त्र एक बराबर ही पढ़ने तथा सुनने का अधिकार है।] इन वचनों से पता चलता है कि गुरु जी ने कोई नई जाति नहीं बनाई। वे चारों वर्णों को एक समान मानते थे।

भगवान् राम, कृष्ण और गुरु गोविन्द सिंह

गुरु साहिबान श्री भगवान् राम, कृष्ण आदि के प्रति पूरी श्रद्धा रखते थे।

"धन-धन माता देवकी, जिन घर जन्मया कमलापति।"
वेनु बजावे गोधन चारे, नामे के स्वामी आनन्द करे।

(गुरु ग्रन्थ साहब)

[वह माता देवकी सौभाग्यशाली थी, जिसके यहां विश्व की प्रसिद्ध विभूति योगेश्वर कृष्ण ने जन्म लेकर गौओं, गरीबों तथा धार्मिक जनों की रक्षा की।]

"जसरथ राये नन्द राजा, रामचन्द्र प्रणवे नामो"

[आर्य महाराजा दशरथ के यहां विश्व विभूति मर्यादापुरुषोत्तम श्री रामचन्द्र ने जन्म लिया, जिनका नाम सूर्यचन्द्र समान सदा अमर रहेगा।]

आजकल गुरुद्वारों में दिखाई देने वाले तालाब, गुम्बद, सोने के कलश, लंगर आदि पुराने हिन्दू मन्दिरों जैसे ही रखे गए हैं। वेद, रामायण, महाभारत के स्थान पर इनकी स्तुति से युक्त श्री गुरु ग्रन्थ साहिब विराजमान हैं। यह सब व्यवस्था प्राचीन मन्दिरों को देख कर ही की गई है। इन सब बातों से गुरु साहिबान तथा उनके अनुयायियों का आर्य हिन्दू धर्म के समीप होना ही सिद्ध होता है।

गुरुजन आर्य हिन्दुओं के अधिक समीप थे या मुसलमानों के ?

भाई-भाई को लड़ाकर अपना राजनैतिक उल्लू सीधा करने वाले कुछ तथाकथित सिख यह कहते सुने जाते हैं कि गुरु साहिबान तथा उनके अनुयायी मुसलमानों के अधिक समीप हैं। वैसे जहां तक केवल कहने का सम्बन्ध है, प्रत्येक व्यक्ति अपनी बात कहने में स्वतंत्र है। प्रश्न तो यह खड़ा होता है कि जो कुछ कहा जा रहा है, वह कितना ठीक है और उसके ठीक होने में क्या

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

प्रमाण है ?

गुरु साहिबान को मुसलमानों के समीप कहने वाले शायद कोई ठोस प्रमाण न दे सकें, पर हम गुरुओं के श्रद्धालु सच्चे सिख तो डंके की चोट पर कहते हैं कि वे मुसलमानों और उनके मजहब से कोसों दूर थे। इतना ही नहीं, अपितु अपने सिख इतिहास को देखने से पता चलता है कि गुरु साहिबान के सबसे बड़े हत्यारे मुसलमान ही थे। जिस बेदर्दी से मुसलमानों ने गुरुओं तथा गुरु घर के समर्थकों की हत्या की है, उसे पढ़कर रोंगटे खड़े हो जाते हैं।

श्री गुरु अर्जुन देव जी को रेत तथा लोहे पर तपा-तपाकर मरने को बाध्य किया गया। श्री गुरु तेगबहादुर को सता-सता कर मुसलमानों ने तलवार से सिर काट दिया था—इसीलिए कि ये लोग अपने हिन्दू धर्म को छोड़कर मुसलमान मजहब को स्वीकार नहीं करते थे। श्री गुरु गोविन्द सिंह जी के साहबजादों को भी तड़पा-तड़पाकर मुसलमान जल्लादों ने खत्म कर दिया, गुरु तेगबहादुर जी के मन्त्री भाई मतिदास जी को दिल्ली के फव्वारे पर दोनों ओर से खंभों पर बांधकर कहा गया कि यदि तुम आर्य-हिन्दू धर्म छोड़कर मुसलमान नहीं बनोगे, तो तुम्हें जीवित रहते ही आरे से काट दिया जाएगा। उस आर्यावर्त-भारत के सपूत मतिदास ने मुसलमान बनने से साफ इनकार कर दिया। तब क्या था! सब ओर से बंधे उस आर्यवीर मतिदास को मुसलमान दरिन्दों ने बीचोंबीच आरा चलाकर सिर से पैर तक दो भागों में चीर दिया। इतना होने पर भी उसने उफ तक न की।

आर्य धर्म शहीद श्री मतिदास जी के भाई श्री दयाला जी को मुसलमान न बनने पर एक बड़े बर्तन में बन्द कर, पानी डाल कर जिन्दा धधकती हुई आग में टमाटर के समान उबाल-उबाल कर मार दिया। गुरु गोविन्द सिंह जी के नान्देड़ पहुंचने पर उनकी सेवा करने वाले एक मुसलमान सेवादार ने ही उन्हें चाकू मारा था, जिससे बाद में वे चल बसे।

सिखों को मुसलमानों के अधिक समीप समझने वाले लोगों को नान्देड़ जाकर देखना चाहिए कि जिस मुसलमान ने गुरु गोविन्द सिंह की हत्या की थी, आज मुसलमान उस की कब्र को एक शहीद की तरह पूजते हैं।

श्री गुरु गोविन्द सिंह जी के अनन्य प्रेमी शेरे बबर बन्दा बैरागी, जिन्होंने उनके परिवार पर हुए अत्याचारों का बदला लेने के लिए पंजाब में मुसलमानों के नगरों की ईंट से ईंट बजा दी थी, उस श्री गोविन्द सिंह के परमस्नेही आर्यवीर को मुसलमानों ने बोटियां काट-काटकर ही नहीं मारा, अपितु उसके इकलौते बेटे का कलेजा निकालकर उस आर्य सिंह के मुंह में दिया गया। इतने पर भी उस कुलभूषण, देश व संस्कृति के सूर्य 'बन्दा' ने उफ तक न की।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

अपने आर्य धर्म वैदिक धर्म को छोड़कर क्रूरता, हिंसा, व्यभिचार के मुसलमान मजहवी बनने से इन्कार कर दिया।

यदि सिख मुसलमानों के समीप थे तो वे पाकिस्तान से भागकर हिन्दुस्तान क्यों आ गए ? इसके साथ ही मुसलमानों का गौ को मारना, मुर्दों को गाड़ना, चार विवाह करना, स्त्रियों को पर्दे में रखना, सुन्नत करना, मस्जिद के आगे वाजा न बजने देना, गुलाल से चिढ़ना, हुक्का-तम्बाकू-शराब पीना, वेजुबान जानवरों को हलाल करना आदि अनेकों धर्म विरुद्ध कर्म हैं, जबकि गुरु महाराज वेद पर चलते व प्राचीन सनातन मर्यादाओं को ही मानते थे। इतना ही नहीं, अपितु ग्रन्थ साहब में भी उन्होंने लिख दिया था—मिट्टी मुसलमान की पेड़े पई कुम्हार। इस वाक्य में मुसलमानों के स्थान पर वेईमान कहने मात्र से ही गुरुघर से बाहर निकाल दिया गया था।

अतः इस प्रमाण सहित लघु वार्ता से यह सिद्ध होता है कि हम सच्चे सिखों का मुसलमानों व उनकी मजहवी पुस्तक कुरान शरीफ से दूर का भी कोई सम्बन्ध नहीं। यदि उनका समीप का सम्बन्ध था तो वह था वेद, राम, कृष्ण, गौ, जनेऊ तथा आर्य-हिन्दू संस्कृति से—जैसे हम ऊपर ग्रन्थ साहब के प्रमाणों द्वारा सिद्ध कर चुके हैं। हमें यह लिखते हुए खेद होता है कि कुछ तथाकथित सिखों ने अपने राजनैत्तिक स्वार्थों की पूर्ति के लिए इन्हीं गुरु हत्यारे क्रूर लोगों को आनन्दपुर साहब के पवित्र स्थान पर बुलाकर गुरुघर से घोर अन्याय किया है। क्या ये नकली सिख यह भूल चूके हैं कि आज भी मुसलमान लोग इन्हें सऊदी अरब नहीं जाने देते। देश के विभाजन पर पाकिस्तान से जिन्दा न आने देते थे। उस समय का सबसे बड़ा निशाना हम सिख लोग ही थे।

देश के वुद्धिजीवियों को जागना चाहिए और मि० मैकालिफ द्वारा भाई-भाई को लड़ाकर भारत को बांटने के लिए चलाई गयी फूट-नीति से सावधान रहना चाहिए। यही वह पहला अंग्रेज था, जिसने सबसे पहले अपने आपको सिख बनाकर अलग मत घोषित किया था।

हमारे वृद्धजनों को यह भूला न होगा कि अमृतसर में बने विश्व प्रसिद्ध गुरुद्वारे स्वर्ण मन्दिर में लगभग अस्सी वर्ष पूर्व हिन्दू देवताओं के चित्र भी होते थे और वहां प्रतिदिन गीता तथा रामायण का पाठ भी संगतों को सुनने को मिलता था।

श्री गुरु गोविन्द सिंह की गोभक्ति

इतिहास गुरु खालसा में जो ज्ञानी ज्ञान सिंह द्वारा रचित है, गुरु

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

गोविन्द सिंह जी के लिए लिखा है—

"यह देहु आज्ञा मोहे तुरकन गहि खपाऊं ।
गऊ घात का दोष जग से मिटाऊं ॥"

[हे जगदम्बे मां (ईश्वर), तू मुझे इतना बल, बुद्धि व शक्ति दे कि मैं शीघ्र ही गौ-घातक मुसलमानों को नष्ट करके इस पवित्र आर्य भूमि से गो-हत्या के पाप को दूर कर सकूं ।]

हिन्दी तथा गुरु महाराज

सब गुरु साहिबान हिन्दी भाषा के प्रेमी थे। श्री गुरु गोविन्द सिंह जी की तो मातृभाषा ही हिन्दी थी, क्योंकि उनका जन्म पटना में हुआ था। उनके प्रायः सभी ग्रन्थ हिन्दी तथा ब्रज भाषा में ही हैं। गुरु ग्रन्थ साहिब की भाषा भी प्रायः हिन्दी ही है। आज भी हिन्दी पढ़े-लिखे ही गुरु ग्रन्थ को अधिक समझ सकते हैं।

यज्ञ-हवन और गुरु साहिबान

सनातन हिन्दू धर्मी श्री गुरु गोविन्द सिंह जी तथा अन्य गुरु महाराज 'कौमवाद' से कोसों दूर थे। वे केवल पंजाब की ही नहीं, अपितु सम्पूर्ण भारत-वर्ष की उन्नति वेद शास्त्र, यज्ञ-हवन आदि के प्राचीन माध्यम से ही करना चाहते थे।

गुरु गोविन्द सिंह जी ने नैना देवी के मन्दिर के पास १७५४ में बड़ा भारी यज्ञ-होम किया था। उस होम के बारें में श्री ज्ञान सिंह जी के शब्दों को अपने ग्रंथ 'पंथ प्रकाश' में लिखते हैं:—

यज्ञ होम बेशक करावें।
इह तो धरम हमारा सार। करत रहे नृप मुनि अवतार।
सो तो हम भी करना चैहैं। जिस ते सब सृष्टि सुख पैहैं।
यज्ञ हवन लों जैहैं। हाकम तुरक करन न दैहैं।
हम जब हवन यज्ञ करवैं हैं। खुस होई धन-जल बहु बरसैं हैं।
पवन हवन ते शुद्ध भवैं हैं। रोग सोग सब दूर नसैं हैं।
दुर्मिख नासैं अन्न बहुथैं हैं। धरणी रस सब विध प्रकटैं हैं।

श्री गुरु गोविन्द सिंह जी अपने शिष्यों को उपदेश देते हैं कि यज्ञ-हवन तो अवश्य ही करना चाहिये। यह हमारा परम धर्म है। इस यज्ञ को वेद मंत्रों द्वारा पहले के ऋषि-मुनि भी करते हैं। यह एक अद्भुत वैज्ञानिक क्रिया है। शास्त्रों ने इसे सबसे उत्तम कर्म कहा है।

परन्तु इस बात का खेद है कि दुष्ट मुसलमान लोग हमें नहीं करने देते।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

ये मूर्ख लोग यज्ञ के लाभों को नहीं जानते।

यज्ञ करने से समय-समय पर इच्छानुसार वर्षा होती है। दूषित वायुमण्डल (Air Pollution) शुद्ध हो जाता है। कई प्रकार के शारीरिक तथा मानसिक रोग जड़ से नष्ट हो जाते हैं।

हवन से अकाल समाप्त होकर खेतियां लहलहा उठती हैं और धरती अन्न से भरपूर हो जाती है।

इसी धारणा के अनुसार गुरु गोविन्द सिंह जी ने नैनादेवी के पर्वत पर भारतवर्ष की उन्नति के लिए यज्ञ किया था। उनके उस यज्ञ करने का प्रमाण 'पंथ प्रकाश' में मिलता है।

> "केशव हवन करावन बैठ गुरु आहुति देते।"
> या विध कर सतगुरु निज कारज।
> आनन्दपुर दिन आए 'आरज' (पंथ प्रकाश पृ. २०४)

[प्राचीन रीति से अपने हाथों द्वारा वेदमन्त्रों से आहुति देकर श्री गुरु गोविन्द सिंह महाराज आनन्दपुर वापस लौट आए।]

उपरोक्त सभी प्रमाणों से यह सिद्ध होता है कि सभी गुरु महाराज सच्चे सनातन वैदिकधर्मी थे। वे वेदानुकूल आचरण करते तथा करवाते थे। परन्तु 'शिरोमणि गुरुद्वारा कमेटी' की ओर से प्रकाशित 'सिख रहत मर्यादा' पुस्तक में लिखा है कि—"सिख वेद, शास्त्र, गायत्री, हवन, यज्ञ, जनेऊ, ब्राह्मण तथा गीता पर विश्वास न करें।"

शहीद भगतसिंह के भाई सरदार कुलबीर सिंह जी क्या कहते हैं ?

१. हमारे दादा सरदार अर्जुन सिंह जी कहते थे कि हमारा धर्म वेद है। उन्होंने अपनी एक पुस्तक—"हमारे सिख गुरु वेदों के पैरवी थे" में लिखा है कि सब 'गुरु' वेद भक्त थे।

सरदार अर्जुनसिंह जी कहा करते थे कि गुरु का सच्चा सिख बनने के लिए केश रखनेकी उतनी आवश्यकता नहीं, जितनी प्राचीन वेद मर्यादा पर चलने की आवश्यकता है। इसीलिए उन्होंने हम भाइयों को सिर पर लम्बे-लम्बे बाल रखने के लिए बाध्य नहीं किया।

३. प्राचीन चित्रों को देखने से पता चलता है कि नौ गुरुओं के सिर पर लम्बे केश नहीं। विशेष जानकारी के लिए दिल्ली की कोतवाली का चित्र देखें। जो लोग शहीद भगतसिंह को बिना बालों के टोपी में नहीं चाहते, वे वास्तव में उसे हृदय से नहीं चाहते। यदि चाहते हैं तो केवल अपने स्वार्थ के लिए।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

उन्होंने मांस, मछली, अण्डा खाना छोड़ कर ऋषि दयानन्द से प्रभावित हो कर यज्ञोपवीत लिया था तथा वे प्रतिदिन यज्ञ व सन्ध्या करते थे। उन्होंने हम सबको भी यज्ञोपवीत पहनाया था।

४. वे ग्रामों में वैदिक संस्कृति की रक्षा के लिए साइकिल द्वारा यज्ञ व वेद प्रचार करते थे।

५. वे जन्म से जाति नहीं मानते थे।

६. उनके हृदय में अद्भुत राष्ट्र-भक्ति थी और वे राष्ट्र की एकता व सुरक्षा के समक्ष और किसी विवाद को कुछ न समझते थे। देश-हित पर मर मिटने की ऐसी ही शिक्षा उन्होंने हम सब भाइयों को दी।

७. वे जड़ वस्तुओं को सिर झुकाना पाप समझते थे। उनका सिर तो केवल परमात्मा के हृदय मन्दिर में ही झुकता था।

८. हमारे पिता श्री किशन सिंह जी ने एक पुस्तक दसों गुरुओं के विवाह संस्कार पर लिखी थी, जिसमें उन्होंने जन्मसाखियों के प्रमाण देकर सिद्ध कर दिया था कि हमारे दसों सिख गुरुओं का विवाह यज्ञ एवं वेद मंत्रों की वैदिक रीति से हुआ था।

९. वर्तमान काल के सिखों द्वारा विना यज्ञ केवल वेद मन्त्रों द्वारा गुरु ग्रन्थ साहिव के चारों ओर चक्कर काटकर विवाह करने की रीति को वे दसों गुरुओं की मर्यादा के विरुद्ध समझते थे।

१०. वे कहते थे कि मिस्टर मैकालिक नामक धूर्त्त अंग्रेज की कूटनीति से ही यह वेद विरुद्ध परम्परा सिखों में प्रचलित हुई है। मि० मैकालिफ नामक अंग्रेज की भी यह चाल थी कि भारत पर शासन करने के लिए उसे कमजोर किया जाए और कमजोर करने के लिए उसे फिरकों में बांटा जाए। उसकी चाल सफल हुई और वहुत-से गुरु भक्त अज्ञान से आदि गुरुओं की वैदिक रीति को छोड़ कर नए मजहब में फंस गए। ईश्वर उन्हें सद्बुद्धि दे, जिससे वे आदि गुरुओं के आदर्श पर चलकर तथा विदेशी मुसलमानों व अंग्रेजों की चाल से वचकर राष्ट्र को संगठित तथा शक्तिशाली वना सकें और सच्चे सिख (शिष्य) कहला सकें।

▭ ▭

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

—डा० कृष्णलाल

कब तक होगा हिन्दी का तिरस्कार ?

एक हमारे मित्र एक दिन
हिन्दी के पंडित-प्राध्यापक।
हिन्दी पर भाषण वे करते,
हिन्दी परिषद् के संस्थापक।
आये लेकर एक निमन्त्रण
बोले बेटे का विवाह है।
सपरिवार आना होगा जी,
शुभाशीष की बड़ी चाह है॥
लगे थापने उसे सौंप कर,
मैं बोला दो क्षण तो बैठें।
खोल निमन्त्रण पढ़कर उसको
समय और तिथियां तो देखें॥
वे खिसियाये सकुचाये-से
बैठ गये कुछ शरमाये-से।
समझा मैं कुछ है रहस्य जो
बैठे हमसे सकुचाये-से॥
खोला मैंने तभी लिफाफा...
तभी भेद समझ में आया।
देखूं उनको ऊपर-नीचे
नीचे-ऊपर में चकराया॥
आंखें उनकी गड़ी जा रही
जाने धरती में क्या खोजें ?
मैं बोला—पंडित जी यह क्या ?
वे बोलें तो कैसे बोलें ?
मैंने कहा—आप तो कहते
निमन्त्रण हिन्दी में छपवाओ।
अंग्रेजी का होय निमन्त्रण
उस पर कभी नहीं तुम जाओ।
आप बतायें अंग्रेजी के
इसी निमन्त्रण पर हम कैसे ?
आयें बेटे के विवाह में ?
और इसे समझें हम कैसे ?
हम अनुयायी रहे आपके,
निज भाषा को समझें माता॥
उसके आसन पर अंग्रेजी !
नहीं तनिक भी हमें सुहाता॥
पुण्य कार्य अपने संस्कार
जिनमें सरकारी नहीं दाव।
उनमें निज भाषा का अभाव ?
जिसको समझें सब बड़े सा'ब॥
निज भाषा छोटे भी समझें,
भाई-बान्धव सभी समझते।
ऐसे कोई नहीं दीखते
निज भाषा जो नहीं समझते॥
ऐसा लगता हमें बन्धुवर !
आप बुलाना नहीं चाहते।
अंग्रेजों से हुई मित्रता,
हम देसी से दूर भागते ?
फिर वे बोले "क्या करें यहां"
अपनी परवशता बतलाई।
हम तो हिन्दी में छपवाते—
बेटे ने फुर्ती दिखलाई॥

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

"हमने उसकी करनी मानी,
नहीं मानते तो क्या करते ?"

हम बोले " तो कहना उससे—
मेरे भक्त नहीं आ सकते,

जो हैं उसके मित्र अंग्रेज
उन्हें बुलाये बड़े चाव से।

वे आयेंगे हैलो हैलो,
तलवे चाटें भक्तिभाव से ॥

एक हमारे और मित्र हैं
सरकारी अफसर कहलाते।

उनकी कन्या पढ़ी हमीं से—
हम एम्. ए. संस्कृत करवाते।

उसका अपना ही विवाह था
स्वयं निमन्त्रण देने आई।

आशिष भी लूंगी यह सोचा,
स्वयं निमन्त्रण लेकर आई ॥

लिफाफे पर "वैडिंग" देखा
तो बिन खोले ही हम बोले—

"वत्से, हम हो गये विफल अब,
तेरे मनकपाट न खोले ॥

संस्कृत पढ़कर भी अंग्रेजी
में तू हमको बुला रही है।

इतने पुण्य दिवस पर अपनी
शिक्षा को तू रुला रही है ॥

हम अंग्रेजी को क्या जानें,
हमको समझ नहीं आयेगा।

ले जा बेटी और किसी के
काम कहीं यह आ जायेगा ॥"

'इतना आग्रह रूढ़िवादिता,
छोड़ आपको मेरे हित ही।

आना होगा मैं लिख देती
स्वयं हाथ से यह संस्कृत ही।"

मैं बोला "बस नहीं, नहीं, अब
मुझको अछूत नहीं बनाओ।

सबको ऐसे दिये हाथ के
निमन्त्रण मुझे यह बतलाओ ॥

अच्छा किया स्वयं तू आई
आशीष यहीं पर देता हूं।

सुखी रहो, दोनों ही मिलकर,
सन्तोष यहीं कर लेता हूं ॥

गीले उसके नेत्र हो गये,
बोली "आप नहीं आयेंगे ?"

मेरी बड़ी विवशता गुरुवर !
समझ आप कैसे पायेंगे ?

पिता जी स्वयं, सभी चाहते
अंग्रेजी में नाम-निमन्त्रण।

प्रतिष्ठा अब यही समाज की,
मैं क्या बोलूं, मुख पर बन्धन ॥

हमने कहा "पिता से कहना—
दयानन्द ने यही सिखाया ?

कर अपमानित अपनी भाषा
अंग्रेजी का मार्ग दिखाया ?

क्या हिन्दी तुम नहीं जानते,
अपनी भाषा से घृणा कर रहे ?

जिन्हें बुलाना तुमने चाहा
या वे हिन्दी नहीं जानते ?

वह हिन्दी माता के समान
जिसने पहले वाणी दी-थी

जिसके द्वारा मां से मांगा
दूध, प्रमुदिता नानी की थी,

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

जिसमें सुनी कहानी प्यारी
मीठी लोरी निंदिया पाई।
विद्या की जो पहली सीढ़ी,
वही नहीं क्यों आज सुहाई ?
बेचारी निज भाषा माता
इतनी अपमानित होती है।
सभी विवश हो गये लाडले
दो-दो आंसू बस रोती हैं॥
बिन कारण ही निज माता से
ऐसा क्यों विद्वेष हमारा ?
दूर रही उसकी सेवा तो,
प्यार भटकता है बेचारा॥

यदि नौकरियों में, शिक्षा में
नहीं स्थान तो दोषी है कौन ?
संघर्ष छोड़ ही गये दास
तो दोषी कौन बैठे हो मौन ?
नहीं बोलते लिखते पढ़ते,
हस्ताक्षर भी नहीं करें हम।
हिन्दी में तो हिसाब भी अब
दूकानों का नहीं रखें हम॥
यही स्वतन्त्र भारत की प्राण !
अन्तस्तल की यही हिलोर।
विचारों की गहरी यह खान
मां को अपना लें हो विभोर॥

तमिल भाषा में प्रचार साहित्य भेंट में दें

प्रत्येक हिन्दू का कर्त्तव्य है कि वह तमिल साहित्य प्रकाशन हेतु अपना सहयोग भेजें।

५०) सैकड़ा डाक व्यय सहित पुस्तक तैयार हैं। आप हमें ५०) भेज दें। हम मीनाक्षीपुरम के आस-पास बांटने के लिए आप की ओर से पुस्तकें भेज देंगे।

शीघ्रता करें

तमिल प्रकाशन, दयानन्द संस्थान, वेद मन्दिर, नई दिल्ली-५
को आदेश भेजें।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

—निर्भय हाथरसी

'वन्दे मातरम्' गाना होगा—
या भारत से जाना होगा।

भ्रष्टाचार मिटाने में यदि अपना शीश कटाना होगा।
तो भी कुछ परवाह नहीं है, अपना धर्म निभाना होगा।
बालक-वृद्ध-जवानों जागो, कायर नहीं कहाना होगा—
बलिदानी बलिवेदी पर हँस-हँस सर्वस्व चढ़ाना होगा।
अब भारत में किसी विरोधी का न अधिक मनमना होगा—
घर के हों चाहे बाहर के सबको ही समझाना होगा ?

वन्दे मातरम् गाना होगा—
या भारत से जाना होगा।

पूजाप-द्धति कुछ भी हो, इसमें कुविचार नहीं है।
सागर में कितनी भी नदियां आ जायें तकरार नहीं है।
लेकिन कोई लालच देकर जबरन धर्म किसी का छीने—
ऐसी गन्दी हरकत तो सपने में भी स्वीकार नहीं है।
हिन्दू, जैन, सिख सबको ही आगे बढ़कर आना होगा—
धर्मविरोधी षड्यन्त्रों से अपना देश बचाना होगा।

वन्दे मातरम् गाना होगा—
या भरत से जाना होगा।

भारत में रहकर के कोई पूजे मक्का और मदीना।
गङ्गा तट पर रहकर चाहे अरबी आबे जम-जम पीना।
यह भी है स्वीकार, मगर भारत इस्लामिस्तान बनाये—
राष्ट्र, राष्ट्रध्वज का अपमान करे, होगा स्वीकार कभी ना।
जिनके तीर्थ जहां पर होंगे, उनका वहीं ठिकाना होगा।
घर-परिवार-कुटम्ब-कबीला सब कुछ वहीं बसाना होगा।

वन्दे मातरम् गाना होगा—
या भारत से जाना होगा।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

राष्ट्रविरोधी किसी तत्त्व की अब हम दाल न गलने देंगे।
धर्म विरोधी छलनाओं को और न अब हम छलने देंगे।
राजनीति वोटों के कारण चाहे जिसको गले लगाये—
लेकिन राष्ट्र अहित होगा तो किसी को नहीं चलने देंगे।
हर आततायी को इस धरती से पाँव उठाना होगा—
हर अनुयायी को हर दुःखदायी को दूर कराना होगा।

वन्दे मातरम् गाना होगा—
या भारत से जाना होगा।

मुसलिम हों या ईसाई हों, द्वेष किसी से नहीं हमारा।
गन्दे से गन्दे नालों से कब घबरायी गङ्गा-धारा ?
स्वेच्छा से, स्वविवेक से कोई किसी धर्म को भी स्वीकारे—
किन्तु किसी भी दुरभिसन्धि से, किसी धर्मपरिवर्तन द्वारा।
नीचा हमें दिखाते हैं जो, नीचा उन्हें दिखाना होगा—
राष्ट्रभक्त पथिकों के पथ में अपना प्यार बिछाना होगा।

वन्दे मातरम् गाना होगा—
या भारत से जाना होगा।

सहज-स्वभाव-सुभाव-सुमन में दूषित भाव नहीं है, फिर भी—
सर्वधर्म-समभाव लिये हैं, दैत्य-दुराव नहीं है, फिर भी—
लोकतन्त्र की नींव खड़ी हैं सत्य-अहिंसा-प्रेम सहारे,
किसी विरोधी से भी तो लड़ने का चाव नहीं है, फिर भी—
स्वेच्छा से माने ना उसे सब कुछ शक्ति से बताना होगा।
जो जैसा चाहेगा उसको वैसा पाठ पढ़ाना होगा।

वन्दे मातरम् गाना होगा—
या भारत से जाना होगा।

शक्ति लिये घनघोर चलेंगे, होकर भाव विभोर चलेंगे,
चलने पर आयेंगे तो हर तरफ मचाते शोर चलेंगे।
'वन्दे मातरम्' 'वन्दे मातरम्', 'वन्दे मातरम्' गाते-गाते—
शीश हथेली पर रखकर हम लोकतंन्त्र की ओर चलेंगे।
मन में हो बलिदान भरा, तन पर केशरिया बाना होगा—
अभी स्वराज्य मिला है, अब सच्चा सुराज भी पाना होगा।

वन्दे मातरम् गाना होगा—
या भारत से जाना होगा।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

स्वाभिमान है तो सब कुछ है, धीरज धरके साहस भरकें,
जब तक लक्ष्य न पूरा होगा, तब तक जन्मेंगे मर-मर के।
गिरती-पड़ती-लुटती पिटती-लंगड़ी-लूली भारत माँ को—
तन-मन-धन जीवन की क्या ? अपना सर्वस्व समर्पित करके।
खण्ड खण्ड अपने इस घर को पुनः अखण्ड बनाना होगा—
शोषित-पीड़ित भारत मां को अविचल धीर बंधाना होगा।

वन्दे मातरम् गाना होगा
या भारत से जाना होगा।

हम अपने प्राणों की आहुति देकर भी भारत को हिन्दू राष्ट्र बनाएंगे

भीलवाड़ा में पंडिता राकेशरानी का मंत्रमुग्धकारी उद्बोधन

भीलवाड़ा (डाक से) १३ सितम्बर की रात्रि को अखिल भारत हिन्दू सम्मेलन में बोलते हुए धार्मिक हिन्दू नेता पंडिता राकेशरानी ने कहा कि हम अपने प्राणों की आहुति देकर भी भारत को हिन्दू राष्ट्र बनाएंगे।

आपने कहा कि १९४६-४७ में हमारे नेताओं ने कहा था कि पाकिस्तान हमारी लाशों पर बनेगा, किन्तु वह बना जनता की लाशों पर, नेताओं की नहीं। अगर एक भी नेता ने अपना बलिदान दिया होता तो पाकिस्तान न बनता।

आपने कहा कि हम सांप्रदायिक जहरीली शक्तियों का सामना कर रहे हैं और करेंगे। १९४६-४७ फिर नहीं दुहरा पाएगा। भारत हमारा है। हम इसके धर्म, स्वतंत्रता, संस्कृति और आदर्शों के लिए सब कुछ देंगे, पर मां का मस्तक नहीं झुकने देंगे।

४०-५० हजार जनता अपूर्व शांति के साथ पंडिता राकेशरानी की वाणी सुन रही थी। उनकी आवाज जन-मानस को अपूर्व शक्ति दे रही थी। उनका आशा भरा संदेश चारों दिशाओं में गूंज रहा था और जनता के मुख से एक ही नारा गूंज रहा था कि हम भारत को हिन्दू राष्ट्र बनाएंगे।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

धर्मप्रचार यज्ञ में प्राप्त आहुतियां

१.	श्री देवदत्त त्यागी	गयासपुर—५०१
२.	श्री गुरुदयाल लाल	मेरठ—५०१
३.	श्री लेखराज ओल्‍रानी	जयपुर—५०१
४.	श्री डा. रामपाल सिंह	सहारनपुर—२११
५.	श्री कान्तिप्रसाद (मंत्री आर्य समाज द्वारा संग्रहीत)	मवाना १९६
६.	श्री मुकुट मणि मिश्रा	—१५१
७.	श्री आई० मै० वर्मा	पंतनगर—१८१
८.	श्री ओम्‌प्रकाश सिंह	कोरबा—२०१
९.	श्री प्रेम प्रकाश	कोल्हापुर—१०५
१०.	श्री जगदीश तिवारी	कलकत्ता—१०५

१२५ देने वाले महानुभाव

सर्वश्री १. राधेश्याम आगरा। २. जयचन्द हिसार। ३. डा० अमरचन्द खन्डेलवाल मथुरा। ४. दीवान सिंह मलिक जयपुर। ५. गोदरेज स्टील प्रा० लि० मुंगेर। ६. सत्यनाथ बाबा जी राव नन्देड। ७. रूपासिंह आर्य सोलापुर। ८. सत्यवान् नामनेर। ९. हरिप्रसाद गुप्त मधुवनी। १०. डा० राधे लाल सहारन पुर। ११. श्री सत्यवान् वर्मा बिजनौर।

१०१) देने वाले महानुभाव

सर्वश्री १. प्रकाशवती आर्य बम्बई। २. कु० अरुणा पोरवा पौड़ी गढ़वाल। ३. नाथूराम अकोला। ४. बृजकिशोर अश्क चम्पारन। ५. आनन्द प्रकाश अग्रवाल पीलीभीत। ६. ओम् प्रकाश सह सचिव कोरबा। ७. चन्द्र भूषण मिश्र आजमगढ़। ८. चन्दन गिरि जी बुरहानपुर। ९. आनन्द प्रकाश पीलीभीत। १०. ओम् प्रकाश कोरबा। ११. रामकिशन नागौर। १२. डा० सुरेन्द्र सिंह सतना। १३. चन्द्र भूषण मिश्र आजमगढ़।

१००) देने वाले महानुभाव

सर्वश्री १. श्री के० एल० पोद्दार बंगलौर। २ बैजनाथ प्रसाद c/o रतन दुकान, रांची। ३. डा० हरि चन्द्र-इलाहाबाद। ४. ओम् प्रकाश कोरवा। ५. आनन्द प्रकाश पीलीभीत। ६. आर्यसमाज सूरत। ७. सुरेन्द्र सिंह जौनपुर। ८. विश्वमित्र जी करनाल। ९. प्रेम प्रकाश गुप्त हिसार टाउन। १०. जगदीश मलिक आर्य रणभूमि। ११. वीरपाल सिंह

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

बस्तर। १२. सुलतान सिंह बम्बई। १३. स्वरूप चन्द्र गिरडीह। १४. मानिक लाल सैनी नाजमैर (राज०)। १५. ठाकुर हरणंश सिंह मेरठ।

५१) देने वाले महानुभाव

सर्वश्री १. रामेश्वर दिल्ली २. राधेश्याम बम्बई। ३. मंत्री आर्यसमाज दिल्ली। ४. कस्तर चन्द्र नागौर। ५. लक्ष्मीनारायण शाहजहाँपुर। ६. जगदीश अलीगढ़। ७. ओंकारदास फीरोज पुर। ८. माम निवास माहेश्वरी बम्बई। ८. एच० सी० गुप्त दिल्ली। १०. मंत्री आर्यसमाज बिजनौर। ११. ओम् ग्रोवर बम्बई। १२. भारत भूषण देहरादून। १३. राज बहादुर एटा। १४. मेवा राम सिकरवार आगरा। १५. गोविन्द राम एन्ड सन्स दिल्ली। १६. डा० रघुवीर शरण अलीगढ़। १७. करन सिंह वर्मा मुजफ्फरनगर। १८. गोविन्द राम दिल्ली। १९. रघुवीर शरण अलीगढ़। २०. हंस आटोमोबाइल प्रोड० इन्दौर। २१. सत्य नारायण नागौर। २२. रावल नरोन कुमार सूरत। २३. नन्द-किशोर रामस्वरूह इचलकर। २४. गोविन्द सिंह नेगी नैनीताल। २५. सीताराम आर्य वैशाली। २६. मंत्री आर्यसमाज महेन्द्रगढ़। २६. ओम् प्रिंटर्स इन्दौर। २८. विश्वनाथ केडियाथाना। २९. सी० के० पटेल एंड सन्स बम्बई। ३०. मेवालाल आर्य बंगाल। ३१. शान्ति प्रकाश प्रेम पौड़ी-गढ़वाल। ३२. नया शिव मंदिर बिहार। ३३. श्याम वल्लभ सिंह सहरसा। ३४. शिवदत्त रामजीवन दास अलीगढ़। ३५. राधे लाल आगरा। ३६. जयप्रकाश कौशल बदायूं। ३७. अरुण अग्रवाल बिजनौर। ३८. राम-अवतार शर्मा श्रीगंगानगर। ३९. डी० ए० सोलंकी भूयी (कच्छ)। ४०. सूर्य कुमार जयपुर। ४१. आर० के० सहगल मुरादाबाद। ४२. डा० सी० डी० एनप कलकत्ता। ४३. जनरल मशीनरी स्टोर जलालपुर ४४. प्रताप नारायण सिंह गोरखपुर।

तमिल–मलयालम भाषा साहित्य

प्रकाशनार्थ उदारता पूर्वक दान भेजें।

—अध्यक्ष

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

(पृष्ट ११२ का शेष)

आप दोनों के ऊपर १२ अभियोग चल रहे हैं। लेकिन आप साहस पूर्वक उनका सामना कर रहे हो। देश की हिन्दू जनता आपके साथ आ रही है। आपके द्वारा किये गये जागृति के शंखनाद से साम्प्रदायिक शक्तियों के सपने चकनाचूर होते जा रहे हैं। उनके षड्यन्त्रों का भंडाफोड़ हो रहा है। वे बौखला उठे हैं।

क्या पंडिता राकेशरानी जी और महात्मा वेदभिक्षु: जी जो कह रहे हैं वह सत्य नहीं? इस देश के हित में नहीं ? आपके हित में नही ? फिर उनके ऊपर अभियोग क्यों ? अगर अभियोग चलवाना हो तो अब्दुल्ला बुखारी पर चलवाओ जो दिन रात भारतवर्ष को कोसता और अरबों के गुण गाता है। उस देश द्रोही के खिलाफ कुछ करो। अभियोग चलवाओ उन देशद्रोही मुसलमान व ईसाई संस्थाओं व व्यक्तियों के खिलाफ जो देश की एकता व अखण्डता को धर्मान्तिरण के द्वारा समाप्त करना चाहते है और इसे इसाई-स्थान और मुस्लिमलेंड के रूप में देखना चाहते हैं।

तुम्हें लज्जा नहीं आती ? हिन्दुओं के त्यौहारों की तुमने छुट्टियां तक समाप्त कर दीं।

देश की हिन्दू जनता में जागृतिं आ रही है। ऐसे समय में हमारे ही एक भूतपूर्व सैनिक फरमा रहे हैं कि आप अपने इस जागरण के काम को रोक दो। हिन्दू तुम्हारा साथ नहीं देगा। वैदिक धर्मी साथ देगा। क्या हिन्दू वैदिक धर्मी नहीं हैं।

मैं इस पत्र द्वारा आपसे प्रार्थना करता हूं कि आप काम करते रहिये। हिदू जनता आपके साथ है। शुभ कामनाओं के साथ —

पहासू (बुलन्दशहर) सुरेशचन्द्र सारस्वत

कान्वेंट स्कूलों से खतरा

आदरणीय सम्पादक जी,

नमस्कार।

आपकी पत्रिका 'जन-ज्ञान' पढ़ी। बहुत-सी बातों की जानकारी मिली। आजकल हमारे हिन्दू सामाजिक जीवन में जो कमियां आ गई हैं, उनकी ओर आप अपनी पत्रिका के माध्यम से हमारे समाज का ध्यान दिलवायें।

हर छोटे-बड़े शहर में समर्थ और मध्यम वर्ग के माँ-बाप अपने बच्चों को कानवेन्ट में या अंग्रेजी माध्यम से शिक्षा दिलवाने की होड़ में लगे हुए हैं, जिसका परिणाम आगे चल कर हमारे समाज के लिए अच्छा नहीं रहेगा, इस संभावना से इनकार नहीं किया जा सकता।

बड़े-बड़े शहरों में आजकल टैलीविजन के माध्यम से मनोरंजन के नाम पर हल्के-फुल्के चलचित्र दिखलाकर हमारी आने वाली पीढ़ी के चरित्र को

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

जो नुकसान पहुंचाया जा रहा है, उसके प्रति समाज को सावधान करें।

रुपये-पैसे का समाज में बहुत ज्यादा महत्त्व बढ़ जाने से समाजसेवी का चरित्र किसी भी समय डगमगा सकता है। उसका विशेष कारण पश्चिमी सभ्यता की ओर आंखें बन्द करके दौड़ना है। हमारा समाज चरित्रवान् वने, इसके लिए समाजसेवी लोगों को विशेष प्रयत्न करना चाहिए।

बम्बई — विश्वनाथ कपूर

अमेठी के राजा रणंजयसिंह जी का आशीर्वाद

जन-ज्ञान आता है, कई सज्जन उसे पढ़ते हैं और प्रशंसा करते हैं। संपादिका महोदया जिस अदम्य साहस से कार्य कर रही हैं और निर्भीकता का आदर्श उपस्थित कर रही हैं, वह सर्वथा सराहनीय है। ईश्वर से प्रार्थना है कि उन्हें स्वस्थ सुदीर्घ जीवन प्राप्त हो।

६—६—१८२ — (राजा) रणंजयसिंह

धर्मयुद्ध में विजय के लिए

आपको यह भली भांति ज्ञात ही है कि संस्थान द्वारा प्रकाशित साहित्य ने देश को नई दिशा दी है। यवन-ईसाई शक्तियां पूरे बल से हमारे विरोध में खड़ी हैं और इस समय मुझ पर ८ मुकद्दमे व महात्मा वेदभिक्षु जी पर ४ मुकद्दमे चल रहे हैं।

हमारा दुर्भाग्य है कि हम अर्थाभाव के कारण बहुत कुछ नहीं कर पा रहे। साहित्य प्रकाशन का कार्य भी कागज के अभाव में रुका पड़ा है।

हमारी प्रार्थना है कि आप उदारतापूर्वक हमें निरंतर सहयोग दें।

१. साहित्य प्रकाशन के लिए कागज दीजिए। कम से कम एक रीम कागज का मूल्य लगभग १२५) प्रत्येक हिन्दू भूखा रहकर भी भेजे।

२. जन-ज्ञान के आजीवन सदस्य बनकर सहयोग दीजिए।

३. जन-ज्ञान अपने मित्रों-परिचितों को भिजवाइए।

४. प्रतिमास २० प्रतियां मंगाकर केवल ३०) में २० मित्रों तक हमारी—समय की आवाज पहुंचाइए।

५. अपने क्षेत्र में हिन्दू रक्षा समिति स्थापित कीजिए।

मेरे भाई, जीना है तो जागो और साम्प्रदायिक विषधर का फुफकारता फन कुचलने में सहयोग देकर धर्म-राष्ट्र-संस्कृति की रक्षा करें।

राकेशरानी
अध्यक्ष, दयानन्द संस्थान वेद मंदिर, नई दिल्ली-५

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

स्टेशन मास्टर लाला गंगाराम

आचार की दृष्टि से अपने स्वभाव में कट्टरपन की दृष्टि से और अपने नियमों पर अटल रहने की दृष्टि से ला० गंगाराम जी विशेष व्यक्ति थे। इसलिए उनके जीवन की कुछ घटनाएं लिखता हूं। संभव है कोई सज्जन उनसे लाभ प्राप्त करें।

(१) लाला गंगाराम जी सहायक स्टेशन मास्टर थे। स्टेशन मास्टर अंग्रेज था। लालाजी जिला गुजरांवाला के कानेवाली ग्राम के निवासी थे। उस समय की यह घटना है। उनकी माता का स्वर्गवास हो गया। वह स्टेशन मास्टर से पूछ कर अपने ग्राम चले गए। दैवयोग से उसी दिन एक रेलवे अफसर आ गया। उसने और बातों के साथ-साथ यह भी पूछा कि लाला गंगाराम जी कहां हैं? स्टेशन मास्टर ने उस दिन उनकी हाजिरी लगा दी थी इसलिए कहा—यहां ही हैं। कहीं इधर उधर होंगे। बात समाप्त हो गई। ये दूसरे दिन अपने ग्राम से आ गए; तब उस अफसर ने इनसे पूछ लिया, कल आप नहीं मिले, कहां गए थे? इन्होंने उत्तर दिया, मेरी माता का स्वर्गवास हो गया था, इसलिए मैं ग्राम गया हुआ था; यहां न था। उसने कहा, स्टेशन मास्टर जी तो कहते थे कि आप यहां ही हैं। इन्होंने उत्तर दिया, उन्होंने मेरे बचाव के लिए ऐसा कह दिया था; वास्तव में मैं अपने ग्राम गया हुआ था।

वह इनका सत्य वचन सुनकर बड़ा प्रसन्न हुआ।

(२) एक बार लाला गंगाराम जी से लाइन क्लियर देने में विशेष भूल हो गई। जब उसका पता लगा, तो लाला जी से वक्तव्य मांगा गया। स्टेशन मास्टर ने इन्हें उत्तर लिखित देने को कहा। इन्होंने चार दिन पीछे लिखकर दिया कि मुझ से भूल हो गई। इस भूल के कारण दुर्घटना हो सकती थी। यदि नहीं हुई तो रेल यात्रियों के सौभाग्य के कारण नहीं हुइ। अतः इस भूल का मुझे जो दण्ड दिया जाये, मैं प्रसन्नता से स्वीकार करूंगा।

जब स्टेशन मास्टर ने उसे पढ़ा, तो इनसे कहा कि क्या नौकरी छोड़ने की अभिलाषा है? इन्होंने उत्तर दिया कि नहीं। तब उसने समझाया और कहा—कुछ और लिखकर लाओ।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

वह कागज ले गये। तीन दिन पश्चात् वही लाकर पुनः दे दिया। स्टेशन मास्टर ने कहा, यह तो पूर्व वाला ही उत्तर है। लालाजी ने कहा कि सत्य यही है; अतः यही उत्तर ठीक है। झूठ कैसे लिखूं ?

स्टेशन मास्टर ने वह उत्तर भेज दिया। ऊपर से आज्ञा मिली कि गंगाराम को चेतावनी दे दो कि आगे ऐसी भूल न करें। स्टेशन मास्टर तथा अन्य रेल कर्मचारी आश्चर्यवन्त थे कि यह क्या हुआ। अपराध स्वीकार करने पर केवल चेतावनी दी गयी। उस अधिकारी से किसी ने पूछा कि आप छोटे-छोटे अपराधों पर अधिक दण्ड दे देते हैं, परन्तु लाला गंगाराम ने अपराध किया और इन्होंने स्वीकार भी कर लिया, तब भी आपने चेतावनी देकर छोड़ दिया।

उसने उत्तर दिया कि मुझे ऐसा व्यक्ति कभी मिला ही नहीं। उसने अपराध स्वीकार किया, उसका कारण अपनी भूल बताई और उसका दण्ड लेने के लिए तैयार हो गया। लोग अपराध करते हैं, पुनः उसे न मानकर झूठ बोलते हैं। गंगाराम ने सत्य कहा, अतः उसे कोई विशेष दण्ड न दिया गया भूल सबसे हो सकती है। उससे भी हुई।

सद्व्यवहार

(३) लाला गंगाराम जी की बदली किला अबदुल्लापुर (बिलोचिस्तान) हो गई। वहां से फलों के टोकरे बाहर भेजे जाते थे। दस्तूरी का चलन वहां भी था, फलों वाले जब दस्तूरी देना चाहें तो यह न लें। प्रथम तो उनको सन्देह हुआ कि ये अधिक लेना चाहते हैं। परन्तु जब इन्होंने कहा, मुझे रेलवे से वेतन मिलता है उसी से मुझे वह काम करना होता है। आप जिसे दस्तूरी कहते हैं, वह रिश्वत है। तब वह चुप हो गए।

एक बार स्वर्गीय पंडित विश्वम्भरनाथ आदि वहां आ गए। इनके पास ठहरे। एक दिन वे एक ग्राम में फल खाने चले गए। बागबान से फल लेकर खाते रहे। उस बिलोच ने इनसे पूछा, आप यहां कैसे आए हैं ? इन्होंने उत्तर दिया—लाला गंगाराम जी स्टेशन मास्टर के पास आये हुए हैं। जब फलों से पेट भरकर ये उसे फलों का दाम देने लगे तो उसने दाम लेने से इन्कार कर दिया और बलपूर्वक कहा, जब स्टेशन मास्टर दस्तूरी तक भी नहीं लेता, तो मैं उसके मित्रों से फलों का दाम लूं, यह उचित बात नहीं। आप प्रतिदिन इस बाग से जो फल चाहें, आकर खाया करें, आप से कुछ दाम न लिया जाएगा। आप जैसे गंगाराम के मित्र हैं, वैसे ही हमारे भी मित्र हैं।

(४) उसी स्टेशन पर एक बार एक अंग्रेज रेलवे अफसर आया हुआ था

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

और वह प्रतीक्षा-गृह (Waiting room) में ठहरा हुआ था। दैवयोग से उस समय एक पुरुष, एक स्त्री अर्थात् पति-पत्नी जो बिलोच थे, आए और सैकण्ड क्लास का टिकट लेकर जब प्रतीक्षा गृह में गए तो अंग्रेज ने उन्हें वहां घुसने न दिया। गंगाराम ने उस अंग्रेज से कहा कि यह प्रतीक्षा गृह है और प्रथम और द्वितीय दर्जे के यात्रियों के लिए है। आप इसे खाली कर दें। वह न माना। इन्होंने पुलिस द्वारा उसका सामान बाहर रखवा कर उस दम्पत्ति को ठहराया।

उसके पश्चात् एक बार इन्हें सूचना मिली कि इधर डाकू आए हुए हैं, आप सावधान रहें। उस दिन किला अब्दुल्ला पर कुछ न हुआ, एक और स्टेशन को डाकुओं ने लूटा।

तदनन्तर गाजियों का एक नेता पकड़ा गया। जब उसे रेल में ले जा रहे थे उसने इच्छा प्रकट की कि मैं किला अब्दुल्ला के स्टेशन मास्टर को मिलना चाहता हूं। पुलिस वालों ने स्टेशन आने पर लालाजी से कहा, वे आ गए। वह पठान बड़ी श्रद्ध से मिला और कहा कि लालाजी, आप निश्चिन्त रहें। जहां आप होंगें, वहां कोई गाजी या डकू, जो पठान है, आपको कुछ न कहेगा। उस दिन हम आपके पास अमुक स्थान पर बैठे रहे। पुलिस वालों ने कहा, खान साहिब, लालाजी में क्या बात है? उसने कहा कि ये देवता हैं। इन्होंने सैकण्ड क्लास टिकट वाले पठान को स्थान दिलाया। ये गरीबों के सहायक हैं, इसलिए हमने निश्चय कर लिया है कि जहां ये होंगे; इनकी रक्षा की जायेगी। सब पठान इनके दोस्त हैं।

मित्रता

(५) जब लाला जी वजीराबाद में थे, उस समय गुजरांवाला में धर्मपाल जी आर्य बने। उस समय कालेज में पढ़ने वाले कई विद्यार्थियों ने उस शुद्धि में भाग लिया था। उनमें से एक के पिता ने रुष्ट होकर उससे कसा कि आप हरिद्वार जाकर प्रायश्चित्तकरें। अन्यथा हम व्यय नहीं देंगे और आप गृह पर न आवें। इस बात की सूचना इनको दी गई, इन्होने उस विद्यार्थी से कहा कि आप पढ़ते रहें, आपका सारा व्यय मैं दूंगा।

जब इस प्रकार कई मास व्यतीत हो गए, तब उसके पिता ने पता लिया कि लड़का निर्वाह कैसे करता है। जब उन्हें पता चला तो वह गंगाराम जी के पास आया और कि आप लड़के को कहें कि वह गृह पर आजाये। आर्यसमाजी अच्छे होते हैं, हमारा लड़का आर्यसमाजी हो गया तो ठीक हो है। तब उनके पिता और उस विद्यार्थी का पूर्ववत् मिलाप हो गया और अपनी इच्छानुसार पढ़ते रहे।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

(६) क—जब वह पठानकोट स्टेशन पर थे, उस समय आर्यसमाज मन्दिर बनवाया। इस स्थान पर जो थानेदार थे, वो बिना टिकट रेल पर आए, लाला जी ने उनसे टिकट के पैसे प्राप्त किये जब कि वो जानते थे कि यह थानेदार है।

ख—एक बार एक अंग्रेज रेलवे अफसर आया उसके पास एक कुत्ता था, गंगाराम जी ने कहा कि कुत्ते का पास वा टिकट दो। उसने कहा कि मैं रेलवे में ही काम करता हूं। लाला जी ने कहा— मैं जानता हू कि आपके पास पास है, किन्तु मैं कुत्ते का किराया मांगता हूं, आपका नहीं। अन्त में उसे कुत्ते का किराया देना ही पड़ा।

पहले थानेदार ने शिकायत कर दी कि यह आर्यसमाजी है, लाला लाजपतराय जी का साथी है। इन सब कारणों से बिलोचिस्तान बदल दिये गए।

ग—किला अबदुल्ला में एक बार सीनीयर सुपरिन्टेंडैन्ट की धर्मपत्नी अपनी सहेलियों सहित आ गई। इन्होंने टिकट मांगा उसने कहा-जाते समय दे जाऊंगी, वह सायंकाल बिना टिकट दिये चली गई। इन्होने रिपोर्ट करदी। उस समय श्री ज्ञानचन्द नेहता और श्री गणेशदास जी बिज वहां पुलिस मेंथे। ईन्होंने गंगाराम से कहा, आपको बदल कर यहां भेजा, यहां भी आप वैसे ही काम करते हैं। इन्होंने उत्तर दिया—आप लिखकर दिला दें, इनसे टिकट न लिया जाये, मैं न माँगूंगा यह धन मेरी जेब में तो जाता नहीं, रेलवे कोप में जाता है।

घ—एक इनके परिचित अंग्रेज ने (जो किसी काम पर आगे जा रहा था) इन्हे समाचार-पत्र चिह्न करसे दिया, जहां आर्यसमाज के विरुद्ध लेख था। इन्होंने उसे पढ़ा और जब वह लौटकर आया तो अंग्रेज को आर्य पत्रिका के कुछ अंक चिह्न लगाकर दिये, जो आर्यसमाज की सत्यता प्रकट करते थे। इन्हें पढ़कर वह लाला जी का भक्त बन गया। इनके असली रूप को समझ गया।

ङ—एक स्पेशल टेन में रेलवे अफसर उधर गए। जब रेल गाड़ी किला अबदुल्ला ठहरी तो एजेन्ट साहिब ने पूछा, गंगाराम क्या हाव हैं? इन्होंने उत्तर दिया, ठीक है। उसने कहा, कहां जाना चाहते हो? इन्होंने कहा, कंधार में लाइन बना दो वहां जाऊंगा। उसने कहा हम तुम्हें पंजाब

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

भेजना चाहता है। ये बोले, आर्यसमाजी होने से मुझे पंजाब से यहां भेजा था अब तो मैं पहले से भी अधिक आर्यसमाजी हूँ। पर आप सोचलें उसने Yes, we want Arya Samajist for that place (हाँ हम उस स्थान के लिए आर्यसमाजी ही चाहते हैं।) तब वो अमृतसर स्टेशन पर बदल दिये गए।

इनके काम से प्रसन्न होकर अमृतसर का मालउतारने और चढ़ाने का ठेका भी इन्हें ही दिया गया था।

(७)एक बार लाहौर के आर्यसमाजी, जिन में इनके सुपुत्र लाला फकीरचन्द जी स्वर्गीय पं० भूमानन्द जी, पं० परमानन्द जी आदि अनेक सज्जन थे, गुरुकुल कांगड़ी जा रहे थे। अमृतसर स्टेशन पर एक अंग्रेज रेल अफसर उस डिब्बे में और आदमी बिठाने लगा। वहां प्रथम ही भीड़ थी। भूमानन्द जी ने विरोध किया उसने भूमानन्द को उतार दिया। लाला जी को सूचना दी गई ये आगए। यह गाड़ी तो चली गई, इन्होंने भूमानन्द जी की जमानत करवाकर फ्रंटियर मेल से उन्हें भेज दिया, वो सहारनपुर अपने साथियों से जा मिले।

दोनों पक्षो ने अभियोग किया जिस समय उस अफसर को पता लगा कि इस अभियोग में लाला गंगाराम जी साक्षी होंगे, वह इनके पास आया और कहा कि मेरा उनसे समझौता करा दो क्योंकि अमृतसर में सब आपको सत्यवक्ता जानते हैं आपकी साक्षी से वह दोषी सिद्ध न होकर मैं ही दोषी बनूंगा।

इन्होंने समझौता करवा दिया।

देश वासियों को स्वर्गीय ला० गंगाराम जी की जीवन की घटनाएं पढ़कर उन पर विचार करना चाहिए। जैसे की वो थे वेसे ही दृढ़ आर्य, सत्यवक्ता तथा कर्त्तव्यपालक बनने का प्रयत्न करना चाहिए।

धर्म जय के लिए धन भेजिए।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

धर्म युद्ध में विजय के लिए

अधिक से अधिक धन भेजिए
भेजते रहिए काम न
रुकने दीजिए

–राकेशरानी

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

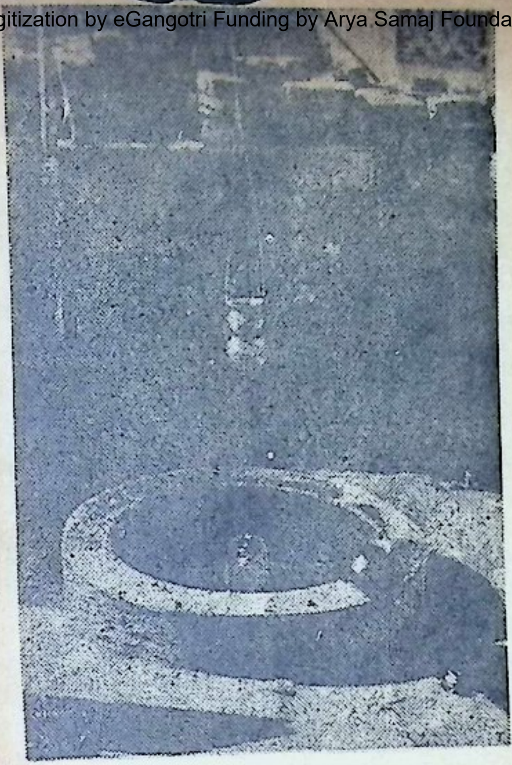

विपलेश्वर महादेव : मेरठ के दंगों का केन्द्र : मुसलमान यहां पूजा नहीं होने देगें,......हिन्दुओं के पूजा स्थानों का सम्मान कब तक मिटता रहेगा ।

८० प्रतिशत के स्वाभिमान को चुनौती देकर : क्या पाकिस्तानी मनोवृत्ति फिर से सिर नहीं उठा रही !

—संपादक

दंगे करने वालों को यदि समूल नष्ट न किया गया तो हमारा अस्तित्व मिट जाएगा ।

—संपादक

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

जन-ज्ञान (मासिक) नई दिल्ली-५ | कातक २०३९ | रजि० नं० 107119/ D-C-201

१५०

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi